04 - स्ट्रामार परीक्षा प्रणाली का रचनात्मक विकल्प

05 - कालिदास के रघुवंश को भी भुला दिया आयोजकों ने

A Daily News Magazine
भोपाल
बुधवार, 05 नवम्बर, 2025

06 - नदियों के महत्व को रेखांकित करता कार्तिक पूर्णिमा का पर्व

07 - ग्राम पंचायत बैरागढ़ खुमान में सांसद खेल महोत्सव के तहत...

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 66, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

बिहार चुनाव: क्रांति शोर-शराबे से नहीं, चुपके से भी आ सकती है!

सतीश झा

बिहार चुनाव 2025 में सियासी हलचल तो तेज़ है, लेकिन क्या असली बदलाव खामोशी के बीच पनप रहा है? राजनीति में जातिगत समीकरण और लोगों के आर्थिक हालात क्या चुनाव नतीजे पर छाप छोड़ेंगे? पटना की दोपहर में गर्मी चुभती है। गंगा बहती है जैसे कोई भूली हुई कसम हो। बिहार अपने टूटे शीशे में खुद को देखता है। यह वही धरती है जिसने कभी सम्राटों और ज्ञान की रोशनी को जन्म दिया था। आज यह भारत का सबसे बड़ा विरोधाभास बन गया है। यह वही जगह है जहां प्राचीन गणराज्यों ने लोकतंत्र की नींव रखी थी। आज यहां गरीबी इतनी गहरी है कि नालंदा की संगमरमर की यादें भी फीकी लगती हैं। यह विधानसभा चुनाव सिर्फ नेता चुनने का नहीं है। यह आत्मा की लड़ाई है।

क्या बिहार फिर से जाति के धागों से सिले गठबंधनों को अपनाएगा या आईना तोड़कर कुछ नया देखने की हिम्मत करेगा? यह सिर्फ राजनीतिक सवाल नहीं है। यह अस्तित्व का सवाल है। बिहार जिसने आस्था और साहस को जन्म दिया वह सिर्फ ज़िंदा रहने से बेहतर का हकदार है।

सच्चाई यह है कि बिहार भारत का सबसे गरीब राज्य है। 2024-25 में इसकी प्रति व्यक्ति आय सिर्फ रू. 60000 है। यानी सालाना करीब $715। यह राष्ट्रीय औसत रू. 1.7 लाख से बहुत पीछे है। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय और रिजर्व बैंक की रिपोर्ट यही कहती है। बिहार के 45000 गांवों में से आधे की प्रति व्यक्ति आय क़रीब 36000 रुपये से भी कम है।

उत्तर बिहार में बाढ़ आती है। दक्षिण में सूखा पड़ता है। सड़कें जो विकास का प्रतीक होनी चाहिए अब पट्टी की तरह लगती हैं। फिर भी यहां एक शांत चमत्कार होता रहता है। लोग गरीबी में खुश हैं या कम से कम उसे स्वीकार कर चुके हैं। छोटे दुकानदार, रिक्शा चालक, सत्तू बेचने वाले जैसे छोटे उद्यम चलते हैं। बड़े सपने बहुत कम दिखते हैं। यह संतोष सहनशीलता से पैदा हुआ है। यह कोई हार नहीं है। यह जज़्बा है जो यादों में लिपटा हुआ है।

बिहार का गर्व उसके अतीत से आता है जो यहाँ के निवासियों के लिए इतना चमकदार है कि आज की कमियों को ढक देता है।

बोधगया की याद आती है जहां सिद्धार्थ ने धरती को छुआ और बौद्ध धर्म की शुरुआत की। वैशाली की बात होती है जहां महावीर ने अहिंसा का संदेश दिया। पटना में गुरु गोविंद सिंह का जन्म हुआ था जो सिख धर्म के दसवंअ गुरु थे।

हिंदू धर्म की बात करें तो सीता का जन्म मिथिला की मिट्टी में हुआ था। यह सब बिहार की पहचान का हिस्सा है। गांवों में बुजुर्ग नालंदा के 10 हजार विद्वानों की बात करते हैं जो ऑक्सफोर्ड से पहले थे। यह बातें आज की गरीबी के खिलाफ ढाल बनती हैं। लेकिन यह गौरव तब फीका पड़ जाता है जब हम प्रवास की कहानी सुनते हैं। बिहार ने सिर्फ विचार नहीं भेजे। उसने अपने लोग भी भेजे।

1830 से 1917 तक ब्रिटिश राज में 15 लाख से ज्यादा भोजपुरी लोग गिरमिटिया मजदूर बनकर फिजी, मॉरीशस, कैरेबियन और अफ्रीका के खेतों में भेजे गए। वे गुलामों की तरह गए थे। उनके पास एक टिन का बक्सा और एक प्रार्थना थी। आज उनके वंशज कई देशों के प्रधानमंत्री बन चुके हैं। मॉरीशस के चार प्रधानमंत्री बिहार मूल के हैं। फिजी, त्रिनिडाड, गयाना में भी यही कहानी है।

उन्होंने गरीबी और जमींदारी से भागकर विदेशी जमीन पर राज किया। आज वे भारत को $2.5 अरब की रेमिटेंस भेजते हैं। लेकिन बिहार खाली होता जा रहा है। लोग दिल्ली या दुबई चले जाते हैं क्योंकि वहां पैसा है।

यह पलायन कोई नई बात नहीं है। यह पुरानी कहानी है। ब्रिटिश काल में बिहार व्यापार का केंद्र था। पटना में व्यापार होता था, जमींदार कलकत्ता की मिलों को पैसा देते थे। 1901 में बिहार की प्रति व्यक्ति आय मुंबई के बराबर थी। नील, अफीम और रेलवे से पैसा आता था। लेकिन 1947 के बाद सब बदल गया।

2000 में झारखंड अलग हुआ और खनिज चले गए। माल ढुलाई नीति ने बिहार के संसाधनों को बंदरगाहों तक पहुंचाया। स्थानीय उद्योग खत्म हो गया। कांग्रेस की समाजवादी नीतियों ने विकास को रोक दिया। लालू के राज में अपहरण, घोटाले और अराजकता बढ़ी। बिहार की प्रति व्यक्ति आय अफ्रीका से भी नीचे चली गई। 2005 के बाद नीतीश कुमार ने विकास की कोशिश की। 10 प्रतिशत की वृद्धि हुई, लेकिन गरीबी अब भी 33.7 प्रतिशत है जो भारत में सबसे ज्यादा है। बिहार की जीएसडीपी सिर्फ 3 प्रतिशत है जबकि आबादी 9 प्रतिशत है।

बिहार में राजनीति जाति से चलती है, नीति से नहीं। 1960 के बाद समाजवाद आया लेकिन ब्राह्मण-ठाकुर जैसे ऊँची जाति के नेता सत्ता में रहे। कर्पुरी ठाकुर का कार्यकाल छोटा रहा लेकिन असर बड़ा था। 1990 में लालू यादव की लहर आई। मंडल आयोग की सिफारिशों ने राजनीति बदल दी। यादव, कुर्मी, कोइरी जैसे ओबीसी नेता सत्ता में आए। दलित, पिछड़े और मुसलमानों की राजनीति अलग हो गई। बीजेपी ने उत्तर भारत में सत्ता पाई लेकिन बिहार में नहीं क्योंकि यहां मंडल की जड़ें गहरी हैं।

बीजेपी ने गठबंधन बनाए। नीतीश कुमार के साथ, चिराग पासवान के साथ, लेकिन अकेले बहुमत नहीं मिला। 2024 के लोकसभा चुनाव में एनडीए ने जीत पाई। लेकिन विधानसभा की 243 सीटों के लिए और मेहनत चाहिए।

बिहार का युवा हमेशा आंदोलन करता रहा है। गांधी के चंपारण आंदोलन से लेकर जेपी आंदोलन तक आज के युवा बेरोजगार हैं। 10.8 प्रतिशत की दर से वे खाड़ी देशों, दिल्ली के कॉल सेंटरों में काम करते हैं। तेजस्वी यादव 35 साल के हैं। उनका 'नौकरी' का वादा लोकप्रिय है। बीजेपी के सम्राट चौधरी गठबंधन के जोड़ हैं, अकेले नेता नहीं।

चुनाव का नतीजा कांटे का होगा। आईएएनएस की रिपोर्ट कहती है एनडीए को 150 से 160 सीटें मिल सकती हैं और महागठबंधन को 75 से 85, जन सुराज को 15 से 20 सीटें। टाइम्स नाउ की रिपोर्ट कहती है बीजेपी को 90 सीटें मिल सकती हैं। जेडीयू को 60। ईबीसी यानी अति पिछड़ा वर्ग 36 प्रतिशत हैं। वे किंगमेकर बन सकते हैं। बिहार का चुनाव कोई सीधा फैसला नहीं है। यह एक जटिल तस्वीर है। ऊंची जातियां अब गठबंधन का हिस्सा हैं। पिछड़े सशक्त हैं, लेकिन उलझे हुए हैं।

नीतीश और तेजस्वी का गठबंधन फिर बन सकता है। बिहार का आईना अब टूटे गौरव को नहीं, बल्कि नए जज़्बे को दिखा सकता है। यह क्रांति शोर शराबे से नहीं। चुपके से भी आ सकती है!

(सत्य हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

बिलासपुर में हुआ रेल हादसा, चार की मौत

- पैसेंजर ट्रेन और मालगाड़ी भिड़ी, कारण स्पष्ट नहीं
- इलेक्ट्रिक लाइन और सिग्नल सिस्टम को नुकसान
- बिलासपुर-कटनी रेल मार्ग ठप, ट्रेनों के बदले रूट

बिलासपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर जिले में मंगलवार को बड़ा रेल हादसा हो गया। कोरबा पैसेंजर ट्रेन और एक मालगाड़ी के बीच जोरदार टक्कर हुई। चार लोगों की मौत की खबर है। कई यात्री घायल बताए जा रहे हैं। हादसा बिलासपुर-कटनी रेल सेक्शन के लाल खदान इलाके में हुआ। सूचना मिलते ही रेलवे और स्थानीय प्रशासन की टीमें मौके पर पहुंच गईं। एक मासूम को भी रेस्क्यू कर सुरक्षित बाहर निकाला गया। फिलहाल रेस्क्यू अभियान जारी है। रेस्क्यू टीमों ने अब तक कई यात्रियों को सुरक्षित निकाला है, जबकि गंभीर रूप से घायल लोगों को आसपास के अस्पतालों में भर्ती कराया गया है। रेलवे प्रशासन ने हादसे के तुरंत बाद मेडिकल यूनिट और डिविजनल

अफसरों को मौके पर भेजा है। फिलहाल पूरे रूट पर ट्रेनों का संचालन ठप कर दिया गया है। कई एक्सप्रेस और पैसेंजर ट्रेनों को रद्द या रूट डायवर्ट किया गया है। वहीं एसपी रजनेश सिंह, कलेक्टर भी मौके पर पहुंचे हैं। बिलासपुर में कोरबा पैसेंजर ट्रेन और मालगाड़ी के बीच जोरदार टक्कर के बाद ओवरहेड वायरिंग और सिग्नलिंग सिस्टम को भारी नुकसान पहुंचा है, जिससे बहाली में समय लग सकता है। तकनीकी टीमें मरम्मत और ट्रैक क्लियरेंस का काम कर रही हैं। यात्रियों की सुविधा के लिए रेलवे ने वैकल्पिक परिवहन व्यवस्था शुरू की है। वहीं अभी तक यह स्पष्ट नहीं हो सका है कि टक्कर कैसे हुई।

जीवन उत्कर्ष महोत्सव का दूसरा दिन

सीएम हुए शामिल, 10 स्कूलों में 'चलो बने आदर्श' कोर्स लागू होगा

जबलपुर। जबलपुर में स्वामी नारायण संस्थान का जीवन उत्कर्ष महोत्सव का मंगलवार को दूसरा दिन रहा। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और कलाकार दिलीप जोशी शामिल हुए।

कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने स्वामी नारायण संस्थान के साथ एक एमओयू किया। एमओयू के अनुसार मप्र में उच्च शिक्षा और स्कूल शिक्षा में नई शुरुआत हो रही है। जबलपुर के 10 शासकीय स्कूलों में 'चलो बने आदर्श' कोर्स की शुरुआत की जाएगी। इसके अलावा यूनिवर्सिटी में आईपीडीसी कोर्स की शुरुआत होगी। जबलपुर के बाद पूरे प्रदेश के स्कूलों,कॉलेजों में यह कोर्स लागू किए जाएंगे।

स्वामी नारायण संस्थान का प्रकल्प चलो बने आदर्श प्राइमरी स्कूल के लिए शुरू किया जा रहा वीडियो से किया गया। युवाओं को भारतीय सनातन मूल्यों से जोड़ना भी एक विषय के रूप में शुरू होगा। आईपीडीसी 4 राज्य 30 यूनिवर्सिटी और 600 कॉलेज में संचालित 2 लाख बच्चे लाभ ले रहे हैं। मध्यप्रदेश में रानी दुर्गावती विश्व विद्यालय और मंगलायतन यूनिवर्सिटी से होगी। शुरुआत एमओयू दोनों यूनिवर्सिटी के वीसी ने साइन किया।

शरद की सुबह

बनाया है मैं ने ये
घर धीरे धीरे
खुले मेरे ख्वाबों के
पर धीरे धीरे
किसी को गिराया न
खुद को उछाला
कटा ज़िंदगी का
सफ़र धीरे धीरे
जहाँ आप पहुँचे
छलांगें लगा कर
वहाँ मैं भी पहुँचा
मगर धीरे धीरे
पहाड़ों की कोई
चुनौती नहीं थी
उठाता गया यूँ ही
सर धीरे धीरे
गिरा मैं कहीं तो
अकेले में रोया
गया दर्द से घाव
भर धीरे धीरे।

– रामदरश मिश्र

मुझे एनडीए की जीत पर कोई संदेह नहीं

पीएम मोदी बोले-छठी मइया का अपमान करने वालों की जमानत जब्त होगी

पटना (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मेरा बूथ सबसे मजबूत कार्यक्रम के तहत बिहार की महिला कार्यकर्ता से संवाद किया। पीएम से बात करते हुए एक महिला ने कहा, बिहार में चुनाव है। लोकतंत्र के इस पर्व को लेकर महिलाओं में काफी उत्साह है। इस पर पीएम मोदी ने कहा, मैंने इस चुनाव को बेहद करीब से देखा है और एक बात मैं कह सकता हूं कि एनडीए इस चुनाव में भारी बहुमत से जीत रही है। मुझे एनडीए की जीत पर कोई संदेह नहीं है। महिला संवाद के दौरान पीएम मोदी ने छठी मइया का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा, इस चुनाव में ऐसी विजय दीजिए कि जिन्होंने छठी मइया का अपमान किया है, बिहार को जिन्होंने जंगलराज में रखा था, उनकी जमानत जब्त होनी चाहिए। इसी दौरान एक महिला ने कहा, हम विश्वास दिलाते हैं कि इस बार के चुनाव में बिहार रिकॉर्ड तोड़ेगा। 2025 के चुनाव में एनडीए को 225 सीटें आएंगी। इस पर मोदी हंसने लगते हैं।

भाजपा की महिला कार्यकर्ता शानदार काम कर रही हैं

प्रधानमंत्री ने कहा, इस चुनाव में मुझे जहां-जहां जाने का मौका मिला और जब जब कार्यकर्ताओं से बात करने का अवसर मिला, मैंने देखा इस बार बिहार का कार्यकर्ता जी-जीन से जुटा हुआ है। आप सभी बहुत परिश्रम कर रहे हैं। हर रैली पहले वाली रैली की रिकॉर्ड तोड़ रही है और उसमें भी हमारी बहनें-बेटियां बहुत बड़ी संख्या में आ रही हैं। बिहार भाजपा की महिला कार्यकर्ताएं मेहनत कर रही हैं।

बिहार में अब 'अंजा-पंजा और गंजा' की एंट्री

- सीएम योगी के 'पप्पू-टप्पू' और अप्पू के बाद नया बवाल
- नितिन गडकरी बोले-ऐसा तीर चलाइए सब के सब उड़ जाएं

सिवान (एजेंसी)। बिहार विधानसभा चुनाव में बीते दिन यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ ने जहां पप्पू-टप्पू की एंट्री कराई, वहीं केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने अंजा-पंजा और गंजा की एंट्री करा दी। सोमवार को सिवान में एनडीए की चुनावी सभा को संबोधित करते हुए केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने विपक्ष पर हमला बोला और कहा कि बिहार के विकास की गति केवल एनडीए ही बढ़ाएगी, और यहां के किसान अब केवल अन्नदाता नहीं, बल्कि ऊर्जादाता भी बनेंगे। अपने जोशीले अंदाज में गडकरी ने जनता से वोट की अपील करते हुए कहा कि आप ऐसा तीर छोड़िए कि सबकी दुकान बंद हो जाए। अंजा, पंजा, गंजा सब हवा में उड़ जाए। उन्होंने इथेनॉल के उत्पादन पर जोर देते हुए कहा कि बिहार में चार-चार चीनी मिलें हैं, जिनसे इथेनॉल बनाया जा सकता है। उन्होंने बताया कि उनके पास दिल्ली में टोयोटा की एक ऐसी गाड़ी है जो इथेनॉल पर चलती है, और यह इथेनॉल किसानों के ही उत्पाद से तैयार होता है। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में किसान केवल अन्न नहीं, बल्कि हवाई ईंधन दाता भी बनेंगे। **बिहार की सड़कें अमेरिका जैसी बनेंगी-** नितिन गडकरी ने बिहार में सड़क परियोजनाओं का जिक्र करते हुए कहा कि वे करीब पांच लाख करोड़ रुपये की सड़क परियोजनाओं पर कार्य कर रहे हैं, जिससे प्रदेश का चेहरा बदल जाएगा। उन्होंने राजद शासन काल की चर्चा करते हुए कहा कि उस समय सड़कें बदहाल थीं, लेकिन नीतिश कुमार के नेतृत्व में एनडीए सरकार ने सड़कों की स्थिति बदली है। उन्होंने एनडीए के पक्ष में वोट की अपील करते हुए कहा कि अगर आप नीतिश कुमार को फिर से जिताएंगे, तो बिहार की सड़कें अमेरिका जैसी बनेंगी।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 30 °c | न्यूनतम 25°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ बुधवार, 05 नवंबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

शराब पीकर वाहन चलाने पर होगा लाइसेंस रद्द

● 14 लोगों की मौत के बाद राजस्थान सीएम का ऐलान

जयपुर (एजेंसी)। जयपुर में 26 लोगों को कुचलने वाले डंपर ड्राइवर कल्याण मीणा के खिलाफ गैर इरादतन हत्या का मुकदमा दर्ज किया गया है। 3 नवंबर को हरमाड़ा में हुए इस हादसे में 14 लोगों की मौत हो गई थी। 12 घायल हैं। इनमें से 7 की स्थिति गंभीर है। इन्हें सवाई मान सिंह हॉस्पिटल के ट्रॉमा सेंटर में भर्ती कराया गया है। बेकाबू डंपर ने महज 400 मीटर में 17 गाड़ियों को रौंद डाला था। देखते ही देखते सड़क पर लाशें बिछ गईं। शवों के टुकड़े इधर-उधर बिखर गए। किसी का पैर कट गया तो किसी का हाथ। 2 शवों की पहचान नहीं हो पाई है। सोमवार देर रात डीसीपी ट्रैफिक सुमित

मेहरड़ा ने सीआई (ट्रैफिक पुलिस) राजकिरण, एएसआई राजपाल सिंह और कॉन्स्टेबल महेश कुमार को सस्पेंड कर दिया। नो एंट्री में डंपर आने की वजह से यह कार्रवाई की गई है। उधर, पीड़ित परिवार वालों ने आरोप लगाया कि एंबुलेंस मनमाना किराया वसूल रहे हैं। शव के निवाई ले जाने के लिए 2200 रुपए देने पड़े हैं। मृतक सुरेश और मुरली मीणा के परिवार वालों ने कहा कि सरकार की तरफ से कोई सुविधा फ्री नहीं है। कलेक्टर ने कहा कि किसी भी एंबुलेंस ने अगर रुपए लिए हैं तो यह राशि परिजनों को रिफंड होगी। साथ ही जिम्मेदार अधिकारी के खिलाफ कार्रवाई होगी।

मोदी से आज मिलेंगी वर्ल्डकप जीतने वाली लड़कियां

● दीप्ति शर्मा बोलीं-गिफ्ट क्या देंगे जल्दी कर लेंगे तय

नई दिल्ली (एजेंसी)। विमेंस वनडे वर्ल्ड कप जीतने वाली भारतीय क्रिकेट टीम जल्द ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात कर सकती है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, यह मुलाकात कल 5 नवंबर को दिल्ली में होने की संभावना है। टीम इंडिया आज शाम मुंबई से दिल्ली के लिए रवाना होगी। भारतीय टीम ने रविवार को नवी मुंबई के डीवाई पाटिल स्पोर्ट्स एकेडमी में खेले गए फाइनल मुकाबले में साउथ अफ्रीका को 52 रन से हराकर इतिहास रच दिया। हरमनप्रीत कौर की कप्तानी में भारत ने पहली बार

विमेंस वनडे वर्ल्ड कप का खिताब जीता। वहीं, टीम की ऑलराउंडर दीप्ति शर्मा ने बातचीत में कहा कि हम जल्द तय करेंगे कि प्रधानमंत्री मोदी को बतौर टीम क्या गिफ्ट दिया जाए। दीप्ति ने कहा, हम उन्हें जरूर कुछ न कुछ गिफ्ट देंगे, जर्सी या बैट, अभी तय नहीं किया है, लेकिन जल्द फैसला करेंगे। इससे पहले, वर्ल्ड कप जीत के बाद प्रधानमंत्री मोदी ने सोशल मीडिया पर खिलाड़ियों को बधाई दी थी। सोशल मीडिया पर लिखा, फाइनल में भारतीय टीम की शानदार जीत। बधाई।

शादी पुरुष को पत्नी पर कंट्रोल का अधिकार नहीं देती

● 80 साल का पति, पत्नी से क्रूरता का दोषी, सजा बरकरार

नई दिल्ली (एजेंसी)। मद्रास हाईकोर्ट ने कहा है कि भारतीय विवाह प्रणाली को पुरुष वर्चस्ववाद की छाया से निकलकर समानता और आपसी सम्मान के साथ बढ़ना चाहिए। क्योंकि शादी पुरुषों को पत्नी पर निर्विवाद अधिकार नहीं देती। पतियों को महिला के धैर्य को सहमति नहीं समझना चाहिए। जस्टिस एल विक्टोरिया

गौरी की बेंच 1965 में विवाहित एक बुजुर्ग दंपति के बीच वैवाहिक विवाद से जुड़े मामले में सुनवाई कर रही थी। याचिका एक महिला ने लगाई थी, जिसके पति को आईपीसी की धारा 498ए के तहत पत्नी के प्रति क्रूरता का दोषी ठहराया गया था। कोर्ट ने 31 अक्टूबर को सुनवाई के बाद 80 साल के शख्स को बरी किए जाने का निचली अदालत का फैसला रद्द कर दिया। कोर्ट ने कहा कि पुरुषों की पीढ़ियों को कंट्रोल करना चाहा है।

किसानों को ज्यादा बिजली दी तो कटेगी सबकी सैलरी

● बेमौसम बारिश से बर्बादी झेल रहे किसानों पर नया संकट ● बिजली विभाग के एक आदेश से एमपी में मच गया बवाल

भोपाल (एजेंसी)। बेमौसम बारिश से मध्य प्रदेश में फसलें बर्बाद हो गईं। इससे किसानों को बड़ा नुकसान हुआ है। अब बिजली विभाग ने किसानों को नई परेशानी में डाल दिया। बिजली विभाग ने आदेश जारी कर कहा कि किसानों को एक दिन में 10 घंटे से ज्यादा बिजली दी तो ऑपरेटर की सैलरी कटेगी। यानी खेत सूखे रहें या किसान भूखे, बिजली अब टाइम टेबल से मिलेगी। ये आदेश मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के चीफ जनरल मैनेजर एके जैन ने निकाला है। इसकी कॉपी भोपाल और ग्वालियर के साथ सीहोर, राजगढ़, नर्मदापुरम, रायसेन, हरदा, विदिशा,

अशोकनगर, गुना, भिंड, मुरैना, श्योपुर, शिवपुरी और दतिया के महाप्रबंधकों को भेजी गई है। बता दें, सीएम डॉ. मोहन यादव ने एक नवंबर को कहा था कि घरेलू, गैर-घरेलू, कृषि और औद्योगिक श्रेणी उपभोक्ताओं को बकाया बिल पर सरचार्ज राशि में छूट दी जाएगी।

कार्रवाई की रिपोर्ट हेडक्वार्टर भेजी जाएगी

आदेश में लिखा है कि यदि कहीं मिट्टी की नमी, खराब मौसम या तकनीकी कारणों से लोड बढ़ता है तो भी आपूर्ति 10 घंटे से अधिक नहीं की जानी चाहिए। कृषि फीडर मीटरों के समय रीडिंग के आधार पर प्रतिदिन 15 मिनट तक की त्रुटि सीमा निर्धारित की गई है। इससे अधिक बिजली देने पर इसे नियम उल्लंघन माना जाएगा। सभी अधीक्षण अभियंताओं, एक्जीक्यूटिव, असिस्टेंट और जूनियर इंजीनियरों को इस आदेश का पालन सुनिश्चित करना होगा। उल्लंघन की रिपोर्ट हेडक्वार्टर को भेजी जाएगी।

जेई से लेकर जीएम तक की सैलरी कटेगी

बिजली कंपनी के आदेश में लिखा है- यदि किसी कृषि फीडर पर 10 घंटे से अधिक बिजली दी जाती है तो इसे नियम के खिलाफ माना जाएगा। संबंधित ऑपरेटर की एक दिन की सैलरी काटी जाएगी। यदि कंट्रोल रूम द्वारा किसी कृषि फीडर पर 2 दिन लगातार 10 घंटे से अधिक बिजली दी जाती है तो संबंधित जूनियर इंजीनियर का एक दिन का वेतन काटा जाएगा। लगातार 5 दिन तक ऐसा होने पर एक्जीक्यूटिव इंजीनियर की 1 दिन की सैलरी काटी जाएगी। कार्रवाई की रिपोर्ट हेडक्वार्टर भेजी जाएगी।

कांग्रेस ने कहा-

किसानों को परेशान करना है

कांग्रेस के प्रदेश प्रवक्ता राहुल शर्मा ने इस आदेश की कॉपी एक्स पर शेयर करते हुए लिखा- यह आदेश ध्यान से पढ़िए। भाजपा के नेता भाषण में कहते हैं- पर्याप्त बिजली देंगे और आदेश दे रहे हैं कि 10 घंटे से ज्यादा बिजली यदि किसी कर्मचारी ने दी तो तनख्वाह काट लेंगे। दोहरा चरित्र और दोगलेपन की सारी सीमाएं लांघती हुई भाजपा की ये सरकार।

नीतिश 20 साल से सरकार चला रहे, लेकिन चल नहीं रही है

● राहुल गांधी ने पूछा-बिहार सीएम को हटाने का प्लान तैयार है न

औरंगाबाद (एजेंसी)। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी औरंगाबाद में सभा कर रहे हैं। उन्होंने मंच पर पहुंचते ही लोगों से पूछा, कैसे हैं आप लोग। मूड कैसा है आपका। नीतिश जी को हटाने का प्लान है आपका। काम जारी है आपका। चल रहा है। 20 साल से नीतिश जी सरकार चला रहे हैं। वो चला रहे हैं, लेकिन चल नहीं रही है। उन्होंने कहा कि बिहार की सरकार दिल्ली से मोदी जी के ऑर्डर पर चल रही है। यहां आप लोगों के लिए सरकार के पास जमीन नहीं है, लेकिन मोदी जी के पास अडाणी, अंबानी के लिए बहुत जमीनें हैं। राहुल ने कहा कि ये लोग जानते हैं कि बिहार का चुनाव हार रहे हैं। ये इसी में लगे हैं।

इन लोगों ने काम तो किए नहीं जो उनके बूते चुनाव जीते तो ये वोट चोरी कर लेते हैं। राहुल गांधी ने कहा, मैं बिहार के युवाओं से सवाल पूछना चाहता हूं। मैं देश के किसी भी प्रदेश में जाता हूं तो वहां मुझे बिहार के लोग दिखाई देते हैं। दुबई जैसी जगह को आपने अपने खून पसीने से बनाया है। मेरा आपसे सवाल है कि जब आप दुबई और बेंगलुरु जैसा शहर बना सकते हो तो ये बिहार में क्यों नहीं कर पाते हो। एक समय होता था जब नालंदा की यूनिवर्सिटी पूरी दुनिया में मशहूर थी।

असम में वोटर्स की नागरिकता जांचे बिना ही होगा एसआईआर

नई दिल्ली (एजेंसी)। 12 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में मंगलवार से मतदाता सूची का विशेष गहन पुनरीक्षण शुरू होगा। इनमें से तमिलनाडु, पुडुचेरी, केरल और पश्चिम बंगाल में 2026 में चुनाव हैं। असम में भी अगले साल चुनाव हैं। लेकिन, अभी वहां एसआईआर का शेड्यूल तय नहीं है। 12 राज्यों में एसआईआर के दौरान आयोग का फोकस नागरिकता की जांच पर है। सूत्रों के अनुसार असम में मतदाता सूची की गहन समीक्षा तो होगी, लेकिन नागरिकता की जांच नहीं होगी। राज्य में नागरिकता के उलझे हुए मुद्दे के बीच आयोग ये नया मॉडल तैयार कर रहा है। मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने एसआईआर की घोषणा करते वक्त कहा था कि असम में नागरिकता को लेकर अलग प्रावधान हैं। नेशनल रजिस्टर ऑफ सिटिजन्स की प्रक्रिया पूरी नहीं हुई है। ऐसे में, असम के लिए अलग आदेश जारी होगा। 1971-87 के बीच जन्मे लोगों पर उलझन बनी हुई है।

सेवा भाव और वन्य जीव संरक्षण का प्रतीक है देश का पहला हाई-टेक वन्य जीव कैप्चर अभियान: मुख्यमंत्री

हेलीकॉप्टर और बोमा तकनीक से पकड़े गए 846 कृष्णमृग और 67 नीलगाय

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के निर्देश पर किसानों की फसलों को नुकसान से बचाने के लिये शाजापुर, उज्जैन और आस-पास के इलाकों हेलीकॉप्टर और बोमा तकनीक का सफल प्रयोग वन्य जीवों को सुरक्षित पकड़ कर स्थानांतरित करने के लिए किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने एक बार फिर संवेदनशीलता दर्शाते हुए लंबे समय से कृष्णमृगों और नीलगायों द्वारा फसलों को पहुंचाये जा रहे भारी नुकसान से बचाने के लिये जारी किये थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के मार्गदर्शन में किसानों की इस गंभीर समस्या के स्थायी समाधान के लिए देश में अपनी तरह का पहला प्रयास किया गया। अभियान के अंतर्गत वन्य जीवों को बिना हानि पहुँचाए अत्याधुनिक तकनीक के माध्यम से पकड़ कर सुरक्षित क्षेत्रों में छोड़ा गया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा, यह अभियान वन्य जीव संरक्षण और किसानों की सुरक्षा, दोनों के लिए एक ऐतिहासिक कदम है। मध्यप्रदेश में हम ऐसा संतुलन स्थापित करना चाहते हैं जहाँ प्रकृति, वन्य जीव और किसान, तीनों सामंजस्य के साथ आगे बढ़ें। उन्होंने वन विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों के समर्पण की सराहना करते हुए कहा टीम ने दीपावली के दौरान भी इस अभियान में हिस्सा लिया, जो उनके सेवा और वन्य जीव संरक्षण के प्रति समर्पण भाव का प्रतीक है।

हेलीकॉप्टर और बोमा तकनीक का अभिनव प्रयोग- अभियान में दक्षिण अफ्रीका की 'कंजरवेशन सॉल्यूशंस' कंपनी के 15 विशेषज्ञों ने हिस्सा लिया। विशेषज्ञों ने प्रदेश में वन विभाग की टीम को प्रशिक्षित किया और उनके सहयोग से 10 दिन तक लगातार अभियान चलाया गया। अभियान में रॉबिन्सन-44 हेलीकॉप्टर का उपयोग किया गया। इसे इस तरह के अभियानों के लिए विशेष रूप से उपयुक्त माना जाता है। हेलीकॉप्टर से पहले खेतों और खुले क्षेत्रों में वन्य जीवों की लोकेशन का सर्वे किया गया। इसके बाद रणनीतिक रूप से 'बोमा' बनाया गया। हेलीकॉप्टर की सहायता से फिर धीरे-धीरे हांका लगाकर जानवरों को सुरक्षित रूप से एक फनल (शंकु) आकार की बाड़ में प्रवेश कराया गया, जो जानवरों को भयभीत होने से बचाने के लिए घास और हरे जाल से ढंकी होती है। बोमा में आये वन्य जीवों को वाहनों से सुरक्षित रूप से अभयारण्य तक पहुँचाया गया। अभियान में अनुभवी दक्षिण अफ्रीकी पायलट के साथ भारतीय पायलट को शामिल किये गये।

अभियान में सफलता पूर्वक 913 वन्य जीवों का किया गया सुरक्षित पुनर्वास- लगभग दस दिनों तक चले इस अभियान में कुल 913 वन्य जीवों को सफलतापूर्वक पकड़कर पुनर्वास कराया गया। इनमें 846 कृष्णमृग और 67 नीलगाय शामिल हैं। सभी नीलगायों को गांधीसागर अभयारण्य के 64 वर्ग किलोमीटर के विशाल क्षेत्र में छोड़ा गया। कृष्णमृगों को गांधीसागर, कूनो और नौरादेही अभयारण्यों के उपयुक्त स्थानों पर पुर्नस्थापित किया गया। अभियान में वन्य जीवों की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई। सभी वन्य जीव अब अपने नए आवासों में स्वच्छंद होकर विचरण कर रहे हैं। अभियान के अंतिम दिन भी 142 कृष्णमृग पकड़े गए।

प्रशासनिक और विशेषज्ञों की निगरानी में चला अभियान- अभियान की हर गतिविधि की सतत् निगरानी वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा की गई। प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं मुख्य वन्य जीव अभिरक्षक श्री शुभरंजन सेन, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं क्षेत्र संचालक (चीता प्रोजेक्ट) श्री उत्तम शर्मा और मुख्य वन संरक्षक उज्जैन श्री एम.आर. बघेल स्वयं अभियान स्थल पर उपस्थित रहे। इस अभियान में वाइल्ड लाइफ एवं फॉरेस्ट्री सर्विस के डॉ. कार्तिकेय ने तकनीकी रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे इससे पहले गौर (बाइसन) ट्रांसलोकेशन प्रोजेक्ट में भी सक्रिय रूप से जुड़े रहे हैं। शाजापुर विधायक श्री अरुण भीमावद ने भी अभियान स्थल पर पहुंचकर इस अभिनव पहल की सराहना की। अभियान की सफलता पर एसीएस फॉरेस्ट श्री अशोक बर्णवाल और वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख श्री व्हीएन अम्बाडे भी टीम को बधाई दी गई।

राजस्थान में बॉर्डर पर ड्रोन ने खोजे दुश्मनों के ठिकाने

रेत के धोरों पर दहाड़ रहे टैंक, आसमान से राफेल ने टारगेट हिट किया

जैसलमेर (एजेंसी)। धूल का गुबार। हवा को चीरते हुए टी-90 भीष्म टैंकों की दहाड़... और उस शोर के बीच आसमान में राफेल की गड़गड़ाहट... यह कोई हॉलीवुड की फिल्म का सीन नहीं, बल्कि भारत की पश्चिमी इलाके की इंटरनेशनल बॉर्डर के पास चल रहा भारतीय सेना का सबसे बड़ा शक्ति प्रदर्शन है। इसका नाम ऑपरेशन त्रिशूल है। सदर्न (साउथ-इस्टर्न) कमांड की सुदर्शन चक्र कोर की ओर से शाहबाज डिवीजन के हजारों गैलेंट सैनिक इस युद्धाभ्यास में भाग ले रहे हैं। 30 अक्टूबर से थार के रेगिस्तानी सेक्टर में जैसलमेर से लगती पाकिस्तान सीमा के पास अभ्यास मरु

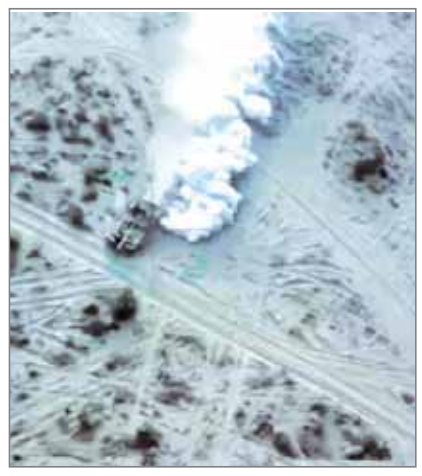

ज्वाला चल रहा है। यह महा-अभ्यास 10 नवंबर तक जारी रहेगा। आसमान में ड्रोन ने निगरानी करते हुए सैनिकों को दुश्मन के ठिकानों की जानकारी दी। सैनिकों ने बिना एक समय गंवाए आधुनिक हथियारों के साथ दुश्मन के ठिकानों को नष्ट कर दिया। अब भारतीय सेना युद्धाभ्यास में ड्रोन के इस्तेमाल को बढ़ावा दे रही है। सेना में ड्रोन की मदद से तमाम काम किए जा रहे हैं। हथियार, रसद व अन्य कई तरह के काम में ड्रोन अपनी भूमिका निभा रहा है। इससे सैनिकों की जान-माल की भी सुरक्षा हो रही है।

रात का सन्नाटा और डिजिटल अटैक की तैयारी- सरहद पर रात... तापमान तेजी से गिर चुका है लेकिन कमान और नियंत्रण केंद्र में गर्मी है। यहां युद्ध के पारंपरिक नक्शे अब डिजिटल स्क्रीन में बदल चुके हैं। अधिकारियों की आंखें उपग्रहों, यूएवी (ड्रोन) और रडार से आ रहे रियल-टाइम डेटा पर टिकी हैं। जवान चिल्लाकर कहते हैं- यह अभ्यास तकनीक की शक्ति से संचालित है।

अब दुश्मनों के डिजिटल डोमेन में घुसकर मारने की तैयारी चल रही है। तभी स्क्रीन पर दुश्मन के एक काल्पनिक ठिकाने की लोकेशन फ्लैश होती है। कमांड सेंटर से तुरंत आदेश जारी होता है। यह नेटवर्क्ड फायर का कमाल है।

आसमान से निगरानी और ड्रोन का राज

इस अभ्यास का सबसे खास और नाटकीय तत्व है मानव रहित प्लेटफॉर्म यानी ड्रोन। रेतीले टीलों की ओट से हेरॉन और अन्य स्वदेशी यूएवी उड़कर दुश्मन के काल्पनिक इलाके में घुसपैठ करते हैं। ये बिना किसी सैनिक को जोखिम में डाले, दुश्मन के ठिकानों, जमावड़े और रडार सिग्नल को स्कैन करती हैं। यूएवी द्वारा भेजी गई थर्मल इमेजिंग और हाई-रिजोल्यूशन तस्वीरें सीधे कमांड सेंटर की डिजिटल स्क्रीन पर आती हैं। यह खुफिया, निगरानी और टोही की हाईटेक क्षमता है।

सीमा से ड्रोन फ्रंट तक भारत की बड़ी तैयारी

● थलसेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने खड़गा कोर का किया दौरा

नई दिल्ली (एजेंसी)। थल सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी लगातार सैन्य तैयारियों की समीक्षा कर रहे हैं। बीते दिनों कई सीमावर्ती क्षेत्रों का दौरा कर चुके सेना प्रमुख ने अब ड्रोन तैयारियों का निरीक्षण किया। थलसेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने खड़गा कोर का दौरा किया। यहां उन्होंने ऑपरेशनल तैयारियों की समीक्षा की। इस दौरान उन्हें युद्धक क्षमता को सुदृढ़ करने, अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों के एकीकरण, अंतर-एजेंसी समन्वय को बढ़ाने तथा राष्ट्र निर्माण से जुड़ी पहलों के बारे में विस्तार से अवगत कराया गया। आधुनिक युद्धों के तौर तरीके व तकनीक लगातार बदल रही है। अब पारंपरिक युद्धों की भांति जंग केवल बंदूक व तोपों तक सीमित

नहीं रह गई है। आज के युद्धों में ड्रोन व आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस महत्वपूर्ण भूमिकाओं में हैं। इसके अलावा रोबोट और डेटा वॉरफेयर ने भी इन्फैंट्री को नई दिशा दी है। इसकी एक मजबूत तस्वीर खड़गा कोर में देखने को मिलती है। यहां ड्रोन जैसी तकनीक को व्यापक स्तर पर उपयोग में लाया जा चुका है। सेनाध्यक्ष ने जहां यहां ड्रोन तैयारियों की जानकारी ली वहीं उन्होंने कोर द्वारा ऑपरेशन सिंदूर के दौरान प्रदर्शित उत्कृष्ट प्रदर्शन की सराहना भी की। उन्होंने ड्रोन डिजाइन एवं प्रशिक्षण में नवाचार, लॉजिस्टिक्स और प्रशासन में उन्नत तकनीकी समाधान अपनाने, पूर्व सैनिकों व परिवारों के कल्याण के लिए किए जा रहे प्रयासों तथा ऑपरेशन राहत के अंतर्गत मानवीय सहायता गतिविधियों की प्रशंसा की। थलसेना प्रमुख ने यह भी रेखांकित किया कि खड़गा कोर द्वारा मिलिटरी-सिविल फ्यूजन को प्रोत्साहन देकर सस्टेनेबल सिक्योरिटी की दिशा में उल्लेखनीय योगदान दिया जा रहा है।

एयर टिकट बुकिंग के 48 घंटे तक मिलेगी फ्री कैंसिलेशन

डीजीसीए जल्द ला सकता है हवाई यात्रा के लिए नए नियम

नई दिल्ली (एजेंसी)। अब एयर पैसेंजर्स को टिकट बुक करने के 48 घंटे के अंदर बिना किसी एक्स्ट्रा चार्ज के कैंसिल या चेंज करने का मौका मिल सकता है। डायरेक्ट्रेट जनरल ऑफ सिविल एविएशन ने इन नियमों को लाने के लिए एक ड्राफ्ट जारी किया है। डीजीसीए ने लोगों से इसके लिए 30 नवंबर तक सुझाव मांगे हैं।

अगर सब ठीक रहा तो जल्द ही नियम बनेगा, लेकिन ये कब से लागू होंगे, ये अभी तय नहीं हुआ है। बुकिंग के बाद 48 घंटे का लुक-इन पीरियड मिलेगा। यानी सोचो-समझो, पसंद न आए तो टिकट कैंसिल कर दों। नाम में कोई एरर हो तो 24 घंटे के अंदर फ्री में सुधार करा सकते हैं। मेडिकल इमरजेंसी में भी एयरलाइन रिफंड दे सकती है। पैसेंजर ने टिकट एयरलाइंस की वेबसाइट से डायरेक्ट बुक की हो या

ट्रैवल एजेंट या किसी पोर्टल से, रिफंड की जिम्मेदारी एयरलाइन की होगी। ऐसा इसलिए क्योंकि एजेंट उनका ही एक्सटेंशन है। रिफंड 21 वर्किंग दिनों में देना होगा।

शुक्ल ने पीएम-अभीम एवं 15वें वित्त आयोग अंतर्गत कार्यों की प्रगति की समीक्षा की

प्रशासनिक अड़चनों और ज़मीनी स्तर की बाधाओं का किया जाए त्वरित निराकरण

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने मंत्रालय में प्रधानमंत्री-आयुष्मान भारत स्वास्थ्य अवसंरचना मिशन (पीएम-अभीम) और 15वें वित्त आयोग अंतर्गत क्रियान्वित निर्माण एवं सुदृढ़ीकरण कार्यों की विस्तृत समीक्षा की। उन्होंने निर्देश दिए कि प्रशासनिक अड़चनों और ज़मीनी स्तर की बाधाओं का त्वरित निराकरण किया जाए, जिससे सभी कार्य समय-सीमा के भीतर गुणवत्तापूर्वक पूर्ण हो सकें। उन्होंने कहा कि विभागों के बीच सतत सामंजस्य और प्रगति की नियमित निगरानी से ही स्वास्थ्य अवसंरचना को सुदृढ़ बनाने के लक्ष्य को समय पर प्राप्त किया जा सकता है।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश में स्वास्थ्य संस्थानों के सुदृढ़ीकरण और नागरिकों को बेहतर चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध कराने के लिए सरकार पूर्ण प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि प्रत्येक परियोजना की सतत समीक्षा करें और सुनिश्चित करें कि सभी कार्य तय समय सीमा में गुणवत्तापूर्वक पूरे हों। बैठक में एमडी एनएचएम डॉ. सलोनी सिडाना, लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग के वरिष्ठ अधिकारी और संबंधित परियोजना प्रभारी उपस्थित रहे।

बैठक में बताया कि पीएम-अभीम के तहत प्रदेश में 100 प्रतिशत कार्यों की शुरुआत हो चुकी है। योजना को जनवरी-2025 में एसएनए-स्पर्श पोर्टल पर ऑनबोर्ड किया गया है। वित्तीय वर्ष 2025-26 में प्राप्त 84 करोड़ 67 लाख रुपये की प्रथम किश्त में से 62 करोड़ 65 लाख रुपये अर्थात 74 प्रतिशत राशि का उपयोग किया जा चुका है। दूसरी किश्त की प्राप्ति के लिए केंद्र सरकार को 30 अक्टूबर 2025 को डी.ओ. पत्र प्रेषित किया गया है।

पीएम-अभीम अंतर्गत 196 ब्लॉक पब्लिक हेल्थ यूनिट्स (बीपीएचयू) में सभी कार्य प्रारंभ हो चुके हैं, जिनमें 63 प्रतिशत निर्माण कार्य पूर्ण हो गया है। 55 इंटीग्रेटेड पब्लिक हेल्थ लैब्स (आईपीएचएल) में 55 प्रतिशत तथा 50 क्रिटिकल केयर ब्लॉक्स (सीसीबी) में 24 प्रतिशत कार्य पूर्ण हो चुका है। योजना की कुल स्वीकृत राशि 1543 करोड़ 40 लाख रुपये है, जिसमें से 862 करोड़ 15 लाख रुपये प्राप्त हुए हैं और अब तक 617 करोड़ 97 लाख रुपये का व्यय किया जा चुका है।

15वें वित्त आयोग के अंतर्गत प्रदेश में 99 प्रतिशत कार्यों की शुरुआत हो चुकी है। 117 ब्लॉक पब्लिक हेल्थ यूनिट्स में से 85 का निर्माण पूर्ण किया गया है, शेष पर कार्य प्रगति पर है। भूमि विवादों का निराकरण राज्य एवं जिला स्तर पर किया गया है। 1795 उप स्वास्थ्य केंद्रों (एसएचसी) में से 432 का निर्माण पूर्ण हुआ है और 783 अर्बन हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर्स में से 586 केंद्र का कार्य पूर्ण हो चुका है। इस मद में कुल 4600 करोड़ 85 लाख रुपये की स्वीकृति के विरुद्ध 3532 करोड़ 93 लाख रुपये प्राप्त हुए हैं और 1581 करोड़ 87 लाख रुपये का व्यय किया गया है

राज्यपाल मंगुभाई पटेल से पशुपालन एवं डेयरी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) लखन पटेल ने राजभवन में सौजन्य भेंट की।

आम जनता तक पहुंचे विभाग की उपलब्धियां और नवाचार की जानकारी : मंत्री सिंह

मंत्रालय में स्कूल शिक्षा विभाग की 2 साल की उपलब्धियों की हुई समीक्षा

भोपाल (नप्र)। स्कूल शिक्षा मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह ने कहा है कि स्कूल शिक्षा विभाग ने करीब पिछले 2 सालों में शिक्षा की गुणवत्ता सुधार में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल करने के साथ अनेक नचावार भी किये हैं। उन्होंने कहा कि इसकी जानकारी जनप्रतिनिधियों के साथ आम जनता तक पहुंचाये जाने की जरूरत है। मंत्री श्री सिंह मंगलवार को मंत्रालय में विभागीय उपलब्धियों की समीक्षा कर रहे थे।

मंत्री श्री सिंह ने विभाग की योजनाओं की बिन्दुवार समीक्षा की। उन्होंने कहा कि हमारा प्रयास होगा कि सरकारी स्कूलों के विकास में जनता का सहयोग मिले। इसके लिये और प्रभावी तरीके से प्रयास किये जायेंगे। बैठक में सचिव स्कूल शिक्षा डॉ. संजय गोयल और आयुक्त लोक शिक्षण श्रीमती शिल्पा गुप्ता ने विभाग में किये जा रहे नवाचारों की जानकारी दी।

भोपाल ग्रामीण के 11 हजार 653 उपभोक्ताओं को अक्टूबर माह में 24 लाख 9 हजार की छूट

स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं को सोलर ऑवर में मिल रही 20 प्रतिशत छूट

भोपाल (नप्र)। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा कंपनी कार्य क्षेत्र में 3 लाख 61 हजार 856 स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं को उनके मासिक विद्युत बिल में टाइम ऑफ डे छूट का लाभ प्रदान करते हुए अक्टूबर माह में कुल 4 करोड़ 66 लाख 34 हजार की रियायत प्रदान की गई है। इसमें भोपाल ग्रामीण के 11 हजार 653 उपभोक्ताओं को 24 लाख 9 हजार रूपए की दिन के टैरिफ में छूट मिली है। कंपनी द्वारा स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं को उनकी खपत के आधार पर टाइम ऑफ डे छूट अंतर्गत यह रियायत प्रदान की गई है।

मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के प्रबंध संचालक श्री क्षितिज सिंघल ने बताया है कि कंपनी द्वारा स्मार्ट मीटरिंग पहल के अंतर्गत माह अक्टूबर 2025 के दौरान यह छूट प्रदान की गई है। दिन के टैरिफ में स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं के लिए यह सभी छूट अथवा प्रोत्साहन की गणना सरकारी सब्सिडी (यदि कोई हो) को छोड़कर की जा रही है। कंपनी ने बताया है कि स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं के लिए जिसमें घरेलू, गैर घरेलू, सार्वजनिक जल कार्य और स्ट्रीट लाइट और निम्न दाब औद्योगिक उपभोक्ताओं के लिए सोलर ऑवर सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक की अवधि के दौरान उपभोग की गई ऊर्जा के लिए ऊर्जा प्रभार की सामान्य दर पर 20 प्रतिशत की छूट 10 किलोवाट तक स्वीकृत लोड/अनुबंध मांग वाले उपभोक्ताओं को ही दी जा रही है।

प्रबंध संचालक श्री सिंघल ने आमजन एवं उपभोक्ताओं से अपील की है कि वे अपने परिसर में स्मार्ट मीटर लगाने में सहयोग करें और स्मार्ट मीटर लगवाने से न घबराएं। स्मार्ट मीटर उनके लिए हर तरह से फायदेमंद है और स्मार्ट मीटर की सटीक रीडिंग और बिलिंग के साथ ही कार्य प्रणाली में भी किसी प्रकार की गड़बड़ी की कोई गुंजाइश नहीं है।

स्मार्ट मीटर से ऊर्जा बचत में मिलती है मदद- स्मार्ट मीटर से बिजली उपभोक्ताओं को ऊर्जा की खपत को ट्रैक करने और ऊर्जा की बचत करने में मदद मिलती है। स्मार्ट मीटर बिजली की खपत को सटीक रूप से मापता है, जिससे बिल में कोई गलती नहीं होती। ऐप से मोबाइल पर रियल-टाइम डेटा देखकर ऊर्जा की खपत को नियंत्रित किया जा सकता है। उपभोक्ताओं को ऊर्जा की गुणवत्ता के बारे में जानकारी मिलती है, जिससे ऊर्जा की खपत को बेहतर बनाया जा सकता है। उपभोक्ता ऊर्जा की खपत को ऑनलाइन मोबाइल ऐप के द्वारा किसी भी समय कहीं से भी देख सकते हैं। स्मार्ट मीटर ऊर्जा की खपत को कम करने में सहायक होकर पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव को भी कम करता है।

भोपाल के जेपी हॉस्पिटल पहुंचे कलेक्टर

बोले-सफाई में लापरवाही बरती तो कार्रवाई करूंगा, पार्किंग के टेंडर निकाले

भोपाल (नप्र)। भोपाल कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह मंगलवार को जेपी हॉस्पिटल पहुंचे। सफाई व्यवस्था को लेकर उन्होंने कहा कि सफाई में कोई भी लापरवाही बरती तो कड़ी कार्रवाई करुंगा। साथ ही पार्किंग के टेंडर जल्दी जारी करने के निर्देश दिए।

मंगलवार को कलेक्टर सिंह अचानक जेपी अस्पताल पहुंचे। उन्होंने ओपीडी का निरीक्षण कर वहां की व्यवस्थाओं को देखा और उपस्थित डॉक्टरों एवं स्टाफ को सेवाओं को और बेहतर बनाने के निर्देश दिए। सीएमएचओ डॉ. मनीष शर्मा, सिविल सर्जन डॉ. संजय जैन भी साथ थे।

अस्पताल की नई बिल्डिंग भी देखी

कलेक्टर सिंह ने अस्पताल के नवनिर्मित भवन का निरीक्षण भी किया। कहा कि नई बिल्डिंग में चिकित्सा सेवाओं की शुरुआत शीघ्र की जाए। ताकि मरीजों को बेहतर इलाज की सुविधा मिल सके। उन्होंने अस्पताल परिसर की पार्किंग व्यवस्था के लिए भी जल्द टेंडर जारी करने के निर्देश दिए।

सफाई में कमी तो ठेकेदार पर कार्रवाई

कलेक्टर ने कहा कि अस्पताल में स्वच्छता व्यवस्था को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए। सफाई में किसी भी प्रकार की लापरवाही पाए जाने पर ठेकेदार पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी। साथ ही, ओपीडी के निर्धारित समय पर डॉक्टरों और स्टाफ की उपस्थिति तय हो। संबंधित अधिकारी नियमित रूप से दौरा करें। देरी से आने वाले अधिकारी-कर्मचारियों पर निलंबन की कार्रवाई की जाएगी।

ब्रेस्ट का भारी वजन महिलाओं में बढ़ा रहा पीठ दर्द

अविवाहित युवतियां भी परेशान, एम्स में साल भर में 246 ने कराई ब्रेस्ट रिडक्शन सर्जरी

भोपाल (नप्र)। पीठ और गर्दन का दर्द, बार-बार थकान और भारीपन के एहसास को कई महिलाएं सामान्य समझकर सालों तक नजरअंदाज करती हैं। लेकिन अब डॉक्टर बता रहे हैं कि इसके पीछे की वजह ब्रेस्ट हाइपर ट्रॉफी यानी ब्रेस्ट का असामान्य रूप से बड़ा होना भी है।

एम्स भोपाल के बर्न एंड प्लास्टिक सर्जरी विभाग में पिछले एक साल में 246 महिलाओं ने ब्रेस्ट से जुड़ी सर्जरी कराई हैं, जिनमें से 23.5 प्रतिशत यानी 57 महिलाओं की ब्रेस्ट रिडक्शन सर्जरी हुई। जिसमें सबसे ज्यादा मरीज 20 से 30 साल की युवतियां हैं।

विशेषज्ञों के अनुसार लगातार बढ़ता हार्मोनल इम्बैलेंस, बदलती जीवनशैली और तनाव इस समस्या की बड़ी वजह हैं। यही कारण है कि ब्रेस्ट सर्जरी अब सिर्फ कॉस्मेटिक नहीं, बल्कि मेडिकल जरूरत बन गई है।

शरीर को लेकर जागरूक हो रही महिलाएं- एम्स भोपाल की रिपोर्ट बताती है कि बीते 4 से 5 सालों में भोपाल समेत मध्यप्रदेश में महिलाएं अपने शरीर को लेकर अधिक जागरूक हुई हैं। दर्द झेलने या पेनकिलर लेने की बजाय अब वे स्थायी समाधान चुन रही हैं। साल 2019 में एम्स भोपाल में 100 के करीब ही ब्रेस्ट से जुड़ी सर्जरी हुई थीं, जो अब बढ़कर 250 के करीब पहुंच गई हैं।

ब्रेस्ट हाइपर ट्रॉफी एक गंभीर समस्या- एम्स भोपाल के बर्न एंड प्लास्टिक सर्जरी विभाग के प्रमुख डॉ. मनाल खान बताते हैं कि ब्रेस्ट का असामान्य रूप से बड़ा होना ब्रेस्ट हाइपर-ट्रॉफी कहलाता है। यह स्थिति न केवल शारीरिक असहजता पैदा करती है, बल्कि आत्मविश्वास को भी

प्रभावित करती है।

इन मरीजों को अक्सर कंधे और गर्दन में दर्द, थकान और स्किन इन्फेक्शन होता है। ब्रेस्ट रिडक्शन सर्जरी से हम उनका साइज बॉडी स्ट्रक्चर के अनुसार करते हैं, जिससे उनकी जीवनशैली सहज हो जाती है।

डॉ. खान ने बताया कि एम्स एक सेंट्रल गवर्नमेंट इंस्टीट्यूट है, इसलिए यहां सर्जरी का खर्च बहुत कम है। ओटी चार्ज, बेड चार्ज और सर्जिकल फीस सभी सरकारी दरों पर हैं। यदि मरीज आयुष्मान कार्डधारक नहीं भी है, तब भी उसे न्यूनतम खर्च में इलाज मिल जाता है।

हर सर्जरी से पहले काउंसलिंग अनिवार्य- डॉ. खान ने कहा कि हर सर्जरी में कुछ रिस्क होता है, इसलिए मरीज को पहले ही बताया जाता है। हम पहले उसकी मेडिकल कंडीशन, मानसिक स्थिति और फिजिकल पैरामीटर्स का आकलन करते हैं। सर्जरी के बाद रेगुलर फॉलो-अप जरूरी होता है ताकि किसी तरह का इन्फेक्शन या निशान न बने।

सर्जरी के बाद मरीजों को एंटीबायोटिक्स और पेन रिलीफ मेडिसिन दी जाती हैं। इसके अलावा ब्रेस्ट सपोर्ट गारमेंट्स पहनने के निर्देश दिए जाते हैं।

ब्रेस्ट सर्जरी ने ऐसे बदली जिंदगी- एम्स में एक सरकारी महिला कर्मचारी का केस डॉक्टरों के लिए यादगार रहा। उन्हें पोलैंड सिंड्रोम नामक स्थिति थी, जिसमें जन्म से एक साइड का ब्रेस्ट विकसित नहीं होता। डॉ. खान बताते हैं कि इस वजह से उन्हें आत्मग्लानि और सामाजिक परेशानी झेलनी पड़ी। हमने उनका ब्रेस्ट इंप्लांट किया, जिससे वे सामान्य जीवन जीने लगीं। हाल ही में उन्होंने शादी की और धन्यवाद देने एम्स लौटीं।

ब्रेस्ट साइज असमानता के मामले बढ़े- विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. अभिनव सिंह के अनुसार, कई महिलाओं में दोनों ब्रेस्ट का आकार एक जैसा नहीं होता। इसे Amastia कहा जाता है। एम्स में ऐसे मरीजों को इंप्लांट या ब्रेस्ट एक्सपैंडर की मदद से दोनों ओर समान आकार दिया जाता है। सर्जरी के बाद नियमित फॉलोअप बेहद जरूरी है। मरीज को एक या दो सप्ताह बाद जांच करानी होती है, फिर दो महीने बाद अंतिम समीक्षा की जाती है।

मुख्यमंत्री ने महिला क्रिकेट खिलाड़ी क्रांति गौड़ को वीडियो कॉल कर दीं शुभकामनाएं

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने आईसीसी महिला क्रिकेट-2025 विश्व विजेता भारतीय टीम की खिलाड़ी और मध्यप्रदेश की गौरव सुश्री क्रांति गौड़ से वीडियो कॉल पर चर्चा की और अभूतपूर्व जीत की बधाई दी। वर्ल्ड कप के विभिन्न मैचों में छतरपुर की बेटी क्रांति गौड़ ने सटीक और धारदार गेंदबाजी से जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में राज्य सरकार हर कदम पर युवाओं और खिलाड़ियों के साथ खड़ी है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भारत की बेटियों ने वन-डे विश्व कप जीत कर इतिहास रच दिया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने क्रांति को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि प्रदेश की बेटी ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खेल के मैदान में नई क्रांति का सूत्रपात किया है। पूरे देश और प्रदेशवासियों को विश्व विजेता बनीं बेटियों पर गर्व है। इस उपलब्धि में प्रदेश की बेटी की महत्वपूर्ण भूमिका से इस जीत का आनंद और बढ़ जाता है। क्रिकेट में मध्यप्रदेश का नाम रोशन करने वाली क्रांति गौड़ को जल्द ही एक करोड़ रुपये की प्रोत्साहन राशि दी जाएगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश की उभरती क्रिकेट स्टार क्रांति गौड़ के खेल की सराहना की और उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि अपनी लगन और परिश्रम से बेटिया निरंतर आगे बढ़ती रहें और प्रदेश का नाम रोशन करें।

राजा रघुवंशी हत्याकांड में बड़ा खुलासा

पत्नी सोनम ने खुद साफ किया था खून से सना हथियार

पुलिस जल्द दाखिल करेगी दूसरी चार्जशीट

इंदौर (नप्र)। इंदौर के राजा रघुवंशी हत्याकांड में एक चौंकाने वाला खुलासा हुआ है। यह बात सामने आई है कि राजा की पत्नी सोनम रघुवंशी ने खुद हत्या में इस्तेमाल किए हथियार पर लगे खून को साफ किया था। राजा की हत्या के बाद सोनम ने सबूत मिटाने के लिए खून से सने हथियार को आसपास उगी जंगली घास से साफ किया था। हालांकि, राजा के भाई विपिन रघुवंशी ने कहा कि उन्हें इस बात की कोई जानकारी नहीं है।

बता दें कि पुलिस और न्यायिक जांच में यह बात साबित हुई है कि राजा की हत्या उसकी पत्नी सोनम ने राज कुशवाह के साथ मिलकर करवाई थी। मामले में शिलॉन्ग पुलिस सबूत मिटाने में शामिल तीन आरोपियों शिलोम जेम्स, लोकेन्द्र तोमर और बलवीर अहिरवार के खिलाफ दूसरी चार्जशीट दाखिल करने की तैयारी में है।

जिस पर शंका...उसे ही सौंप दिया जांच का जिम्मा

एमपी टूरिज्म कॉरपोरेशन में सामान खरीदी में भ्रष्टाचार, 2 हो चुके सस्पेंड

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश पर्यटन विकास निगम में भ्रष्टाचार का बड़ा मामला सामने आया है। भोपाल के बोट क्लब पर फ्लोटिंग रेस्टोरेंट बनाने में लाखों की गड़बड़ी की गई। इसके बाद 2 अफसरों को सस्पेंड भी कर दिया गया। वहीं, जांच कर एफआईआर दर्ज कराने का दावा है लेकिन जिस पर शंका है, उसे ही जांच का जिम्मा सौंपा गया है।

बता दें कि कॉरपोरेशन ने करीब 80 लाख रुपए में 72 वस्तुएं खरीदीं थी, लेकिन जुलाई में इसकी शिकायत पर जांच की गई। जांच में ही 40 आइटम गायब मिले थे। गड़बड़ी का अंदाजा इससे लगा सकते हैं कि जो गोलगप्पा काउंटर 15 हजार रुपए में मिल जाता है, उसे 2.95 लाख रुपए में खरीदा गया। कॉरपोरेशन ने वित्त शाखा की मदद से 22.37 लाख रुपए का भुगतान भी कर दिया। शिकायत और जांच के बाद एमडी इलैया राजा टी. ने वरिष्ठ प्रबंधक अनिल कुरूप और स्वागतकर्ता प्रभारी प्रबंधक अरविंद शर्मा को सस्पेंड कर दिया।

जीएम ऑपरेशन को जांच का जिम्मा, उनकी सहमति से भुगतान कैसे?- सामान खरीदी के नाम पर कुल 22 लाख रुपए का घोटाला सामने आया है। मामले में दो अफसरों को निलंबित भी किया जा चुका है। दूसरी ओर, मामले की जांच का जिम्मा महाप्रबंधन (ऑपरेशन) विवेक जूड को सौंपा गया है, जबकि किसी भी भुगतान के लिए जूड की सहमति जरूरी है।

ऐसे में भुगतान से पहले जांच होनी चाहिए थी। तभी मामला पकड़ में आ सकता था। बिना जांच भुगतान को लेकर जूड भी शंका के घेरे में है। हालांकि, उन्होंने संपूर्ण प्रक्रिया को नियमानुसार ही संचालित होने की बात कही है।

दो मामले, लेकिन कार्रवाई अलग-अलग- बता दें कि 28 जुलाई को एक ऐसा ही मामला सामने आया था। इसमें विंड एंड वेव्ज में फ्रंट ऑफिस एसोसिएट धर्मेंद्र सोनी को बिल में 350 रुपए की गड़बड़ी की शिकायत पर हटा दिया था। दूसरी ओर, 22 लाख रुपए के घोटाले में अब सिर्फ दो अफसरों पर ही कार्रवाई हुई है, जबकि भुगतान से लेकर जांच तक का जिम्मा उनके ऊपर ही है। इनमें महाप्रबंधक जूड, क्षेत्रीय लेखापाल हर दयाल सूत्रकार, रीजनल शेफ विनय रघुवंशी आदि भी शामिल हैं। एक जैसे दो मामलों में अलग-अलग कार्रवाई निष्पक्षता पर सवाल खड़े कर रही है।

ये हुई थी धांधली- रिपोर्ट के अनुसार, आइसी काउंटर, कुकिंग कार्ट, सूप स्पून, टी स्पून, डेजर्ट फोक, आयरन पॉट, सूप स्टेशन, स्नैक ट्रॉली, गोलगप्पा काउंटर बाजार मूल्य से भी कई गुना अधिक कीमत पर खरीदना बताते हुए 22 लाख रुपए का भुगतान करना बता दिया था।

जनजातीय बेटी वैष्णवी सरियाम को बालिका विज्ञान पुरस्कार

विज्ञान संकाय में हासिल किया था प्रदेश में पहला स्थान

भोपाल(नप्र)। छिन्दवाड़ा जिले की जनजातीय बेटी कु. वैष्णवी सरियाम ने मध्यप्रदेश माध्यमिक शिक्षा मंडल भोपाल द्वारा वर्ष 2024-25 में आयोजित कक्षा 12वीं की बोर्ड परीक्षा में विज्ञान संकाय के विषयों में पूरे मध्यप्रदेश में प्रथम स्थान हासिल कर जिले का नाम गौरवान्वित किया है। इस उपलब्धि के लिए उन्हें जनजातीय कार्य विभाग द्वारा 'मेधावी छात्रा पुरस्कार योजना' के अंतर्गत बालिका विज्ञान पुरस्कार से सम्मानित करते हुए, 50 हजार रूपये की प्रोत्साहन राशि प्रदान की गई है।

मध्यप्रदेश शासन के जनजातीय कार्य विभाग के द्वारा यह पुरस्कार उन 10 जनजातीय वर्ग की बालिकाओं को दिया जाता है, जिन्होंने मध्यप्रदेश माध्यमिक शिक्षा मंडल की कक्षा 12वीं की परीक्षा में विज्ञान संकाय के विषयों (भौतिक, रसायन, जीवविज्ञान एवं गणित) में 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किए हों और प्रदेश में सर्वोच्च अंक अर्जित किए हों। राज्य स्तरीय चयन समिति द्वारा मूल अंक सूची और जाति प्रमाण-पत्र का गहन सत्यापन करने के बाद वैष्णवी को प्रथम स्थान के साथ पुरस्कार के लिए चुना गया है।

प्रदेश में कक्षा 9 और 10 के विद्यार्थियों के लिये ओलंपियाड

भोपाल(नप्र)। प्रदेश के सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों में तार्किक सोच, समस्या समाधान क्षमता और नवाचार की भावना को प्रोत्साहित करने के लिये केन्द्र सरकार के निर्देश पर सरकारी स्कूल के कक्षा 9वीं एवं 10वीं के विद्यार्थियों के लिये गणित और विज्ञान विषय में ओलंपियाड का आयोजन किया जा रहा है। इस संबंध में लोक शिक्षण संचालनालय के सेकेण्डरी एजुकेशन विंग ने जिला शिक्षा अधिकारियों को पत्र लिखकर निर्देश जारी किये हैं।

सांत्वना समेत 10 विजेताओं को पुरस्कार- ओलंपियाड में प्रत्येक विषय में 5 विद्यार्थी चयनित होंगे। गणित और विज्ञान मिलाकर कुल 10 विद्यार्थियों का चयन होगा। प्रत्येक विषय में प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं 2 सांत्वना पुरस्कार होंगे। प्रथम पुरस्कार स्वरूप 51 हजार रूपये, द्वितीय 31 हजार और तृतीय के लिये 21 हजार रूपये की राशि पुरस्कार स्वरूप दी जायेगी। दो सांत्वना पुरस्कार 11-11 हजार रूपये के होंगे।

ओलंपियाड परीक्षाएं विकासखंड और संभागीय मुख्यालयों पर होगी। विद्यार्थी गणित या विज्ञान किसी एक विषय में अथवा दोनों विषय में भाग ले सकता है। प्रथम परीक्षा का आयोजन विकासखंड मुख्यालय पर किया जायेगा। द्वितीय परीक्षा संभागीय स्तर पर आयोजित होगी। ओलंपियाड में भाग लेने विद्यार्थी की प्रविष्टि विद्यालय के प्राचार्य द्वारा 10 नवम्बर 2025 तक विमर्श पोर्टल पर प्राचार्य द्वारा की जायेगी। प्रतियोगिता से संबंधित सभी जानकारी सरकारी स्कूलों के हाई एवं हायर सेकेण्डरी स्कूलों के प्राचार्यों को भेजी गई है।

संपादकीय

ट्रंप की विनाशकारी मंशा?

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने देश में फिर से परमाणु विस्फोट करने का आदेश देकर दुनिया को परमाणु युद्ध की दिशा में एक कदम और आगे धकेल दिया है। हालांकि वहां के ऊर्जा सचिव ने फिलहाल आदेश पर रोक लगाते हुए विस्फोट वाले परीक्षणों पर रोक लगा दी है। ट्रंप ने इस आदेश के पीछे वजह रूस, चीन, उत्तर कोरिया और पाकिस्तान द्वारा लगातार किए जा रहे परमाणु परीक्षणों को बताया गया है। हालांकि इसके कोई ठोस प्रमाण नहीं है। अलबत्ता यह बयान देकर ट्रंप ने फिर एक बार साबित किया है कि वो किसको कब शर्मिंदा होने पर मजबूर करेंगे, कहा नहीं जा सकता। अपने मनमौजीपन के लिए बदनाम हो चुके ट्रंप का ताजा बयान दुनिया को चिंता में डालने वाला है। ट्रंप ने कहा कि जब दूसरे देश परमाणु हथियारों की दौड़ में हैं तो अमेरिका पीछे क्यों रहे। ट्रुथ सोशल पर अपनी पोस्ट में ट्रंप ने चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग से मुलाकात के ठीक पहले यह बयान जारी किया है। विश्लेषक इस बात का अंदाजा लगा रहे हैं कि ट्रंप का ट्वीट उकसाने वाला है या फिर रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन द्वारा 8000 किमी तक मार करने वाली मिसाइल के सफल परीक्षण की प्रतिक्रिया है। गौरतलब है कि दुनिया में अमेरिका सबसे ज्यादा परमाणु परीक्षण करने वाला देश है। 1945 से लेकर 1992 तक उसने कुल 1054 परमाणु परीक्षण किए। हालांकि 1992 के बाद से उसने स्वयं ही इन पर रोक लगा दी। अमेरिका के बाद दूसरे सबसे ज्यादा 715 परमाणु परीक्षण किए हैं। ट्रंप अमेरिका के स्वैच्छिक संयम को अब खत्म करना चाहते हैं। ट्रंप के इस फैसले से दुनिया में परमाणु हथियारों की दौड़ और तेज होगी। अधिकृत जानकारी के अनुसार अभी दुनिया में 12,500 से अधिक परमाणु हथियार मौजूद हैं। इसमें से अमेरिका के पास 5,225 और रूस के पास 5,580 परमाणु हथियार हैं। चीन 2020 में 300 से बढ़कर आज 600 पार कर चुका है। फ्रांस और ब्रिटेन के पास 250-300, भारत और पाकिस्तान 170-170, इस्राइल 90 और उत्तर कोरिया के पास 50 परमाणु हथियार बताए जाते हैं। इतने ही बम काफी हैं पूरी दुनिया को कई बार खत्म करने के लिए।

सीबीएस न्यूज को दिए एक साक्षात्कार में राष्ट्रपति ट्रंप ने कहा कि अन्य देश भी परमाणु परीक्षण कर रहे हैं, लेकिन दुनिया इसके बारे में बात नहीं कर रही है। अगर अमेरिका सच में ऐसा करता है तो दुनिया परमाणु निरस्त्रीकरण का कोई अर्थ नहीं रह जाएगा। साथ ही भारत जैसे देशों को भी परमाणु परीक्षण से कोई रोक नहीं पाएगा। वैसे वैज्ञानिकों का कहना है कि अमेरिका वर्तमान में अपने परमाणु हथियारों के परीक्षण के लिए कंप्यूटर सिमुलेशन और अन्य गैर-विस्फोटक तरीकों का उपयोग करता है, इसलिए अमेरिका के पास उन्हें विस्फोट करने का कोई व्यावहारिक औचित्य नहीं है। कार्नेगी एंडोमेंट फ़ॉर इंटरनेशनल पीस के फ़ेलो जेमी वांग का कहना है कि भूमिगत परमाणु परीक्षण में भी कई चुनौतियां हैं, क्योंकि आपको यह सुनिश्चित करना होता है कि ज़मीन के ऊपर कोई विकिरण प्रभाव न हो या भूजल दूषित न हो। रूढ़िवादी 'अमेरिकी थिंक टैंक द हेरिटेज फ़ाउंडेशन' के रिसर्च फ़ेलो रॉबर्ट पीटर्स ने कहा कि हालांकि हथियारों के परीक्षण का कोई वैज्ञानिक या तकनीकी कारण नहीं हो सकता है। लेकिन इसका प्राथमिक कारण विरोधियों को एक राजनीतिक संदेश भेजना है। लंदन स्थित थिंक टैंक 'रोसी' की वरिष्ठ फ़ेलो दरिया डोलज़िकोवा के अनुसार राष्ट्रपति ट्रंप के बयान से कोई बड़ा बदलाव नहीं आएगा। बहरहाल ट्रंप की मंशा पर दुनिया को भरोसा करना कठिन है। परमाणु परीक्षण की शुरूआत कर वो विनाश का नया पिटारा खोल रहे हैं। हैरानी की बात यह है कि शांति के नोबेल पुरस्कार की चाहत रखने वाला व्यक्ति ऐसा कैसे सोच सकता है?

नजरिया

कुमार सिद्धार्थ

शिक्षा, पर्यावरण और सामाजिक विषयों पर लेखन

रट्टामार परीक्षा प्रणाली का रचनात्मक विकल्प

शिक्षा का ढाँचा लंबे समय से तीन घंटे की वार्षिक या अर्द्धवार्षिक परीक्षा पर टिका है। बच्चे पूरे वर्ष पढ़ाई करते हैं और फिर वर्षांत में निर्धारित दिन, निर्धारित समय और निर्धारित प्रश्नपत्र के सामने बैठते हैं। तीन घंटे में वे जितना लिख देते हैं, उसी पर उनकी योग्यता, परिश्रम और भविष्य का निर्धारण होता है। यह मॉडल कई दशकों से चला आ रहा है, लेकिन समय-समय पर यह आलोचना का विषय भी रहा है कि क्या वास्तव में तीन घंटे की यह परीक्षा किसी बच्चे की समझ और व्यक्तित्व का समग्र मूल्यांकन कर सकती है।

भारतीय शिक्षा व्यवस्था दशकों से एक सवाल से जूझ रही है- क्या हमारी परीक्षाएँ सच में छात्रों की प्रतिभा, समझ और रचनात्मकता का सही आकलन कर पाती हैं, या वे केवल रटने और अंक बटोरने की होड़ तक सीमित रह गई हैं? 'केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड' (सीबीएसई) ने हाल ही में निर्णय लिया है कि 2026-27 से नौवीं कक्षा में 'ओपन बुक एग्ज़ाम' यानी खुली किताब के साथ परीक्षा होगी। इसे शिक्षा सुधार की दिशा में आशाजनक कदम माना जा सकता है, जो पूरी शिक्षा संस्कृति की दिशा बदलने का संकेत भी देता है।

शिक्षा का ढाँचा लंबे समय से तीन घंटे की वार्षिक या अर्द्धवार्षिक परीक्षा पर टिका है। बच्चे पूरे वर्ष पढ़ाई करते हैं और फिर वर्षांत में निर्धारित दिन, निर्धारित समय और निर्धारित प्रश्नपत्र के सामने बैठते हैं। तीन घंटे में वे जितना लिख देते हैं, उसी पर उनकी योग्यता, परिश्रम और भविष्य का निर्धारण होता है। यह मॉडल कई दशकों से चला आ रहा है, लेकिन समय-समय पर यह आलोचना का विषय भी रहा है कि क्या वास्तव में तीन घंटे की यह परीक्षा किसी बच्चे की समझ और व्यक्तित्व का समग्र मूल्यांकन कर सकती है।

परीक्षा के दिन यदि छात्र बीमार पड़ जाए, मानसिक तनाव में हो या केवल उस दिन का प्रदर्शन खराब हो जाए, तो उसकी पूरी मेहनत पर पानी फिर जाता है। क्या शिक्षा व्यवस्था इतनी असंवेदनशील होनी चाहिए कि वह पूरे वर्ष की सीख को केवल एक दिन की परीक्षा से तौले? यही प्रश्न बार-बार उठते रहे हैं और इसी पृष्ठभूमि में 'ओपन बुक असेसमेंट' का विचार और प्रासंगिक हो जाता है।

'ओपन बुक असेसमेंट' ऐसी परीक्षा प्रणाली है जिसमें छात्रों को किताबें और नोट्स देखने की अनुमति होती है। पहली नज़र में यह छात्रों के लिए आसान लग सकती है, लेकिन वास्तविकता इससे उलट है। इस पद्धति में प्रश्न सीधे किताबों से नकल करने योग्य नहीं होते, बल्कि उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे उपलब्ध सामग्री का उपयोग करते हुए समस्या का समाधान करें, अवधारणाओं को जोड़ें और तर्कपूर्ण उत्तर लिखें। यह प्रणाली छात्रों को याददाश्त पर निर्भर रहने से रोकती है और उन्हें विश्लेषणात्मक सोच की ओर प्रेरित करती है।

'ओपन बुक परीक्षा' का विचार भारत में बिल्कुल नया नहीं है। वर्ष 2014 में सीबीएसई ने इसे पायलट प्रोजेक्ट के रूप में लागू किया था, लेकिन 2017 तक यह प्रयोग समाप्त कर दिया गया। उस समय कहा गया था कि छात्रों में अपेक्षित क्षमताओं का विकास नहीं हो पा रहा है। वास्तव में तब तक न तो शिक्षक और न ही छात्र इस प्रणाली के लिए पूरी तरह तैयार थे।

दिसंबर 2023 में फिर से इस पद्धति का परीक्षण किया गया, जब कक्षा 9 से 12वीं तक के छात्रों के लिए 'ओपन बुक परीक्षा' आयोजित की गई। नतीजे

बताते हैं कि छात्रों के अंक 12 से 47 प्रतिशत के बीच रहे। इसका मतलब साफ था कि अधिकांश बच्चों को किताबों और नोट्स का प्रयोग कर उत्तर लिखने की कला अभी विकसित करनी है। यह परिणाम निराशाजनक होने के बावजूद एक सीख की तरह हैं, जो बताते हैं कि इस दिशा में आगे बढ़ने की जरूरत है, परंतु चरणबद्ध तरीके से और पर्याप्त तैयारी के साथ।

सीबीएसई का निर्णय 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' और 'राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023' से उभरता दिखता है। इन दोनों दस्तावेज़ों में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल तथ्यों की पुनरावृत्ति करना नहीं, बल्कि छात्रों में आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता और जीवन-कौशल विकसित करना होना चाहिए। यदि छात्र केवल परिभाषाएँ रट लें और परीक्षा में लिख दें, तो उस से न तो समाज को कोई लाभ है और न ही छात्र को।

वास्तविक जीवन की चुनौतियों के लिए उन्हें तैयार करने के लिए जरूरी है कि वे समस्याओं को समझें, जानकारी को जोड़ें और समाधान निकालें। 'ओपन बुक असेसमेंट' इसी सोच की ओर ले जाता है। शिक्षाविदों का कहना है कि इस तरह का मूल्यांकन छात्रों को वैज्ञानिक ढंग से ज्ञान अर्जित करने में मदद करेगा और परीक्षा का तनाव कम करेगा। जब बच्चे जानते होंगे कि उन्हें किताब देखने की अनुमति है, तो वे भयभीत नहीं होंगे। इससे उनकी मानसिक सेहत पर भी सकारात्मक असर पड़ेगा। साथ ही, यह पद्धति विद्यार्थियों को वास्तविक दुनिया के अनुभवों के करीब ले जाएगी।

फिर भी चुनौतियाँ कम नहीं हैं। सबसे पहली चुनौती है - शिक्षकों का प्रशिक्षण। यदि शिक्षक पारंपरिक शैली में ही प्रश्नपत्र तैयार करते रहेंगे, तो 'ओपन बुक परीक्षा' का कोई महत्व नहीं बचेगा। प्रश्न ऐसे होने चाहिए जो छात्रों को सोचने और विश्लेषण करने के लिए मजबूर करें। दूसरी चुनौती है - छात्रों की तैयारी। अब तक वे रटने पर निर्भर रहे हैं, लेकिन उन्हें किताब का इस्तेमाल कर जानकारी को जोड़ने और उत्तर गढ़ने का अभ्यास कराना होगा। तीसरी चुनौती - ग्रामीण और संसाधन-विहीन क्षेत्रों की है, जहाँ किताबें और नोट्स भी पर्याप्त रूप से उपलब्ध नहीं होते। वहाँ इस पद्धति को लागू करना कठिन हो सकता है।

इन चुनौतियों से निपटने के लिए हमें अंतरराष्ट्रीय अनुभवों से सीख लेनी होगी। अमेरिका, ब्रिटेन और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में 'ओपन बुक परीक्षा' लंबे समय से उच्चशिक्षा में लागू है। वहाँ इसका उद्देश्य छात्रों को केवल याद रखने की क्षमता से नहीं, बल्कि तर्क और विवेचन की क्षमता से आँकना है।

'ओपन बुक असेसमेंट' का एक और पहलू है -- यह छात्रों में आत्मविश्वास बढ़ाता है। जब वे जानते हैं कि उनके पास किताब है, तो वे अधिक सहज होकर लिखते हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि परीक्षा आसान हो जाएगी, बल्कि इसके लिए और अधिक तैयारी की जरूरत होगी। केवल जानकारी रखना काफी नहीं होगा, उसे लागू करना भी आना चाहिए।

फिर भी यह सवाल बना रहता है कि क्या केवल 'ओपन बुक परीक्षा' ही छात्रों का सही आकलन कर पाएगी? सच्चाई यह है कि मूल्यांकन बहुआयामी होना चाहिए। किसी बच्चे की प्रतिभा केवल कुछ घंटों की परीक्षा या किसी एक पद्धति से नहीं आँकी जा सकती। उसके व्यक्तित्व, उसकी रचनात्मकता, संवाद कौशल, सहानुभूति और नैतिक दृष्टि का भी उतना ही महत्व है। इस दृष्टि से देखा जाए तो प्रोजेक्ट वर्क, मौखिक परीक्षाएँ, समूह गतिविधियाँ और दीर्घकालिक अवलोकन भी आंकलन का हिस्सा बनने चाहिए।

वास्तव में सीबीएसई का यह कदम स्वागतयोग्य है। इसने परीक्षा व्यवस्था की जड़ता को चुनौती दी है और शिक्षा को अधिक प्रासंगिक बनाने का प्रयास किया है। यह पहल छात्रों को अंकों की दौड़ और रटने की संस्कृति से निकालकर समझने और सोचने की संस्कृति की ओर ले जा सकती है। इसकी सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि हम इसे कितनी गंभीरता और तैयारी से लागू करते हैं। यदि शिक्षक, छात्र और अभिभावक मिलकर इस बदलाव को स्वीकार करें और इसके अनुरूप खुद को ढालें, तो यह प्रयोग शिक्षा जगत में ऐतिहासिक साबित हो सकता है। (सप्रेस)

मोनथन तूफान

संध्या राजपुरोहित

लेखक आदिवासी अंचल में शिक्षा, पर्यावरण के पहलुओं पर कार्यरत हैं।

प्रकृति की चेतावनी और विकास की परीक्षा

अरब सागर में जन्मा मोनथन तूफान जब मध्य भारत की ओर बढ़ा, तो वह अपने साथ केवल हवाओं और वर्षा का उग्र रूप नहीं लाया, बल्कि किसानों की वर्षों की मेहनत, उनकी उम्मीदें और भविष्य की संभावनाएँ भी अपने साथ बहा ले गया। यह केवल एक मौसमी घटना नहीं थी—यह प्रकृति की उस कठोर भाषा में कही गई चेतावनी थी, जो हमें बार-बार यह याद दिलाती है कि विकास की दौड़ में हमने संतुलन की रेखा बहुत पीछे छोड़ दी है।

मध्यप्रदेश, गुजरात और महाराष्ट्र के अनेक जिलों में इस तूफान ने भारी तबाही मचाई। खेतों में पककर तैयार खड़ी कपास, सोयाबीन, मक्का और उड़द जैसी फसलें पानी में डूब गईं। कटाई से ठीक पहले आई लगातार बारिश ने खेतों को दलदल में बदल दिया। मौसम विभाग के अनुसार, यह तूफान अरब सागर में बने गहरे निम्न दबाव क्षेत्र से उत्पन्न हुआ, जिसने मध्य भारत में असामान्य और दीर्घकालिक वर्षा की स्थिति पैदा कर दी। यह अस्थिरता केवल मौसम के व्यवहार में नहीं, बल्कि हमारी विकास नीतियों में छिपी असंतुलन की परिणति है।

इस आपदा का सबसे अधिक असर उन इलाकों पर पड़ा, जो पहले से ही आर्थिक और भौगोलिक रूप से कमजोर हैं—विशेषकर आदिवासी बहुल अंचल। मध्यप्रदेश के झाबुआ, अलीराजपुर, धार, बड़वानी और खरगोन जैसे जिलों में किसानों की मेहनत मिट्टी में मिल गई। इन क्षेत्रों की खेती मुख्यतः वर्षा पर निर्भर है; यहाँ न सिंचाई की स्थायी व्यवस्था है, न फसल बीमा की पर्याप्त पहुँच। कटाई से ठीक पहले आई इस विपत्ति ने किसानों को दोहरी मार दी—एक ओर फसल का नुकसान, दूसरी ओर कर्ज़ का बोझ। खेतों में सड़ती फसलें और भीगे कपास के ढेर उनके परिश्रम की मूक शिलालेख बन चुके हैं।

देशभर में मोनथन तूफान से हुए नुकसान के आँकड़े भी गम्भीर चिंता पैदा करते हैं। आंध्रप्रदेश में 1.12 लाख हेक्टेयर से अधिक फसल क्षेत्र प्रभावित हुआ है, जबकि कपास में लगभग 30 प्रतिशत नुकसान दर्ज किया गया। मध्यप्रदेश में सोयाबीन उत्पादन क्षेत्र का लगभग छह प्रतिशत भाग बर्बाद हुआ। इन आँकड़ों के पीछे केवल प्राकृतिक अस्थिरता नहीं, बल्कि हमारी तैयारी और नीतिगत ढिलाई का भी दुष्परिणाम छिपा है।

जलवायु परिवर्तन अब किसी दूरस्थ भविष्य की चेतावनी नहीं रहा; यह हमारे वर्तमान का स्थायी यथार्थ बन चुका है। बीते वर्षों में हमने बार-बार इसकी विभीषिका देखी है—कभी असामान्य वर्षा, कभी लंबा सूखा, कभी ओलावृष्टि और अब समुद्री तूफान। वैज्ञानिक बताते हैं कि समुद्रों का बढ़ता तापमान तूफानों की तीव्रता और उनके विस्तार दोनों को बढ़ा रहा है। जो तूफान पहले तटीय क्षेत्रों तक सीमित रहते थे, वे अब भीतरी इलाकों तक पहुँच रहे हैं। यह एक नया परिदृश्य है, जो बताता है कि पर्यावरणीय असंतुलन किस गहराई तक जा पहुँचा है।

मौसम के इन अनिश्चित स्वरूपों का असर केवल कृषि तक सीमित नहीं रहता। आदिवासी अंचलों में, जहाँ किसान खेती के साथ पशुपालन और वन-आधारित आजीविका पर निर्भर रहते हैं, अतिवृष्टि ने चारे की कमी, पशुधन की हानि और वन उत्पादों के नष्ट होने से आय के तीनों स्रोतों को प्रभावित किया है। महिलाएँ, जो घर, खेत और परिवार की आर्थिक रीढ़ हैं, अब रोज़मर्रा की कठिनाइयों और असुरक्षा से जूझ रही हैं।

हमारी सरकारी प्रतिक्रियाएँ अब भी प्रायः राहत और मुआवज़े की घोषणा तक सीमित रहती हैं। आपदा के बाद त्वरित राहत की आवश्यकता से इनकार नहीं किया जा सकता, परंतु केवल आर्थिक सहायता से स्थिति सुधर नहीं सकती। जरूरत इस बात की है कि कृषि और ग्रामीण विकास नीतियों को जलवायु-संवेदनशील दृष्टिकोण से पुनर्परिभाषित किया जाए।

कृषि-आधारित अर्थव्यवस्था में अब वह समय आ गया है जब हमें फसल विविधीकरण, जल-संरक्षण और सतत कृषि पद्धतियों को प्राथमिकता देनी होगी। खेत-तलैयों, छोटे बाँधों और जल-निकासी की प्रभावी व्यवस्था का पुनर्निर्माण आवश्यक है। आदिवासी समुदायों की पारंपरिक जल-संग्रह प्रणालियाँ—तालाब, चराई भूमि और सामूहिक खेती की परंपराएँ—आज भी व्यवहारिक समाधान प्रस्तुत करती हैं। इन्हें आधुनिक तकनीक और संस्थागत सहायता के साथ जोड़ा जाना चाहिए।

फसल बीमा योजनाओं को अधिक सरल, पारदर्शी और सुलभ बनाना भी उतना ही आवश्यक है। वर्तमान व्यवस्था में छोटे किसानों के लिए इन योजनाओं का लाभ लेना जटिल और समय-साध्य प्रक्रिया है। यही कारण है कि अधिकांश किसान बीमा से वंचित रह जाते हैं।

आपदा-प्रबंधन की दृष्टि से भी हमारी तैयारी कमजोर साबित होती रही है। गाँव स्तर पर पूर्व चेतावनी तंत्र और स्थानीय आपदा-प्रबंधन समितियों का गठन तथा प्रशिक्षण आवश्यक है। संकट के समय में स्थानीय समुदाय ही सबसे पहले सक्रिय होता है; अतः उसकी तैयारी सबसे महत्वपूर्ण है। आदिवासी समाज के पास जल-संरक्षण और सामूहिक श्रम की समृद्ध परंपरा है। यदि सरकार इन पारंपरिक प्रणालियों को आधुनिक प्रौद्योगिकी और संसाधनों से जोड़ सके, तो आपदा के प्रभाव को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

महिलाओं और युवाओं को इस प्रक्रिया का केंद्र बनाना भी जरूरी है। जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का बोझ प्रायः इन्हीं पर पड़ता है, लेकिन योजनाओं में इनकी भागीदारी न्यूनतम रहती है। सामुदायिक प्रशिक्षण, स्थानीय नवाचारों और स्व-सहायता समूहों को सशक्त बनाकर ही स्थायी परिवर्तन लाया जा सकता है।

मोनथन तूफान केवल एक प्राकृतिक घटना नहीं है; यह उस असंतुलित विकास दृष्टि का दर्पण है जिसे हमने 'प्रगति' के नाम पर गले लगा लिया है। जब हम जंगलों को काटकर, नदियों के प्रवाह को रोककर और भूमि की संरचना से छेड़छाड़ करके विकास की इमारतें खड़ी करते हैं, तो प्रकृति किसी न किसी रूप में अपना प्रतिवाद अवश्य दर्ज करती है।

विकास की मौजूदा परिभाषा, जो केवल भौतिक ढाँचों और उत्पादन की मात्रा पर केंद्रित है, अब अप्रासंगिक होती जा रही है। हमें ऐसी नीतियाँ चाहिए जो सड़कों और भवनों के साथ-साथ मिट्टी, जल और पेड़ों की सेहत को भी मापदंड बनाएँ। कृषि-आधारित समाज में किसान को केवल सहायता नहीं, बल्कि भविष्य की सुरक्षा चाहिए। यह सुरक्षा तभी संभव है जब हम धरती की सेहत को अपनी नीति-निर्माण का केंद्र बनाएं।

मोनथन तूफान की विभीषिका हमें यही सिखाती है कि यदि हमने प्रकृति को समझने और उसके साथ तालमेल बिठाने की कोशिश नहीं की, तो वह बार-बार हमें चेताती रहेगी—कभी तूफान बनकर, कभी बाढ़ बनकर, और कभी सूखे के रूप में। यह आपदा केवल किसानों या किसी एक राज्य की नहीं, बल्कि पूरे समाज की परीक्षा है।

हमें यह स्वीकार करना होगा कि विकास की सच्ची दिशा वही है जिसमें प्रकृति और मानव के हित साथ-साथ चलें। धरती की मुस्कान ही किसान की मुस्कान है, और किसान की मुस्कान ही समाज की स्थिरता की निशानी। जब तक हम इस सरल सत्य को नहीं समझेंगे, तब तक कोई भी 'मोनथन' हमें चैन से नहीं रहने देगा।

तुम वादा करके कहां चली गईं अभिजीता

एकता शर्मा

(एडवोकेट और लेखक है)

'दिवाली के बाद मिलते हैं, फिर आराम से बात करेंगे।' अभिजीता तुमने मेरे से यही वादा किया था ना! फिर उसे पूरा क्यों नहीं किया! मैं तो इंतजार ही करती रही। हमारी एक अभिजीता आज कई को जिंदगी दे गई। वो कई के शरीर में अलग-अलग जगह जिंदा है, पर वो जोशीली आवाज वाली जिंदादिल वकील कहां है, जो हर किसी की मदद के लिए हमेशा खड़ी रहती थी। 'आनंद' फिल्म में राजेश खन्ना ने कहा था 'जिंदगी बड़ी होनी चाहिए लंबी नहीं।' तुमने उसे साबित भी कर दिया।

इस बात को अभी ज्यादा दिन नहीं बीते जब दिवाली के पहले अभिजीता राठौर ने इंदौर के जिला कोर्ट परिसर में गले लगकर छुट्टियों के बाद मिलने का वादा किया था। कहकर गई थी, कि दिवाली के बाद मिलते हैं, फिर आराम से बैठेंगे। जाते हुए अभिजीता दूर तक हाथ हिलाती हुई गई थी। आज भी वो दृश्य जहन में बसा है। किसने सोचा था कि वो उससे आखिरी मुलाकात थी और हम फिर कभी नहीं मिल सकेंगे। तुम्हारा वो हर बार देखते ही दूर से जोश में 'दीदी' बोलते हुए आवाज लगाना, फिर दौड़कर गले लगना, तुम्हारी जीवन और कर्म के प्रति उत्साह का प्रतीक था। जिंदादिली और मुस्कान के साथ तुम हमेशा मुझे 'दीदी' कहते हुए इतनी गर्मजोशी से मिलती थी, कि मन खुश हो जाता था। लेकिन, अब वो बीती बात हो गई, तुमसे अब कभी मुलाकात नहीं होगी, दीदी बोलकर कोई गले नहीं लगेगा। यह सोचकर ही आंखें नम हो जाती है।

दुनिया से जाने के बाद भी तुम आठ लोगों में जीवित हो, पर वो हमारी वो अभिजीता कहीं नहीं, जिसे मैं जानती थी। कोर्ट रूम में किसी बहस के दौरान तुम्हारी बुलंद आवाज आत्मविश्वास के साथ गूंजती थी। बहस के बाद वो कई बार सहजता से पूछती भी, कि दीदी मैंने बहस या क्रॉस में कोई गलती तो नहीं की! बताओ तो अगली बार सुधार लूंगी। इतनी सहज और सुलझी हुई अभिजीता तुम, हमें अपने आप में उलझाकर खुद क्यों चली गई। ये तुम्हारे जाने का वक़्त भी नहीं था। 13 साल की बेटी पर्णिका और 5 साल के बेटे अभिरत्न को अकेला छोड़कर भला इस उम्र में भी कोई जाता है, वो भी छोटी सी बीमारी में!

38 साल की अभिजीता ने इलेक्ट्रॉनिक्स और इंस्ट्रूमेंटेशन में इंजीनियरिंग की थी। इसके बाद अपने एडवोकेट भाई से प्रेरित होकर पहले एलएलबी की डिग्री हासिल की। फिर क्रिमिनोलॉजी में एलएलएम की डिग्री ली और इंदौर में भाई के साथ वकालत करने लगी। अभिजीता ने जिला कोर्ट और हाईकोर्ट में वकालत शुरू की। अपनी सादगी, मेहनत और कानूनी ज्ञान से उन्होंने वकालत जगत में अलग पहचान बनाई। अभिजीता के ब्रेन डेड होने के बाद परिवार का फैसला अनुकरणीय रहा कि उसके अंगों को दान कर दिया जाए, ताकि उससे दूसरों को नई जिंदगी मिल सके। यह फैसला इसलिए भी सही है कि अभिजीता खुद भी ऐसी ही तो थी। दूसरों की मदद के लिए हमेशा खड़ी रहने वाली इस महिला वकील ने दुनिया से जाने के बाद भी अपनी सबकी मदद की आदत नहीं छोड़ी और आज कई जिंदगियों में बस गई। वह जरूरतमंदों को निःशुल्क न्याय दिलाने में हमेशा आगे रही। सामाजिक और धार्मिक कार्यों में भी बराबर सक्रिय रहती थी।

वे इंदौर के शासकीय लोक अभियोजक अभिजीत राठौर की बहन और अखिल भारतीय राठौर महासभा के पूर्व अध्यक्ष रतन सिंह राठौर की बेटी थीं। पिता लोक अभियोजन विभाग में डिप्टी डायरेक्टर रह चुके हैं। माता गिरिबाला राठौर शिक्षाविद हैं। उनका विवाह 15 साल पहले उज्जैन के रेलवे ठेकेदार प्रवीण राठौर से हुआ था। अभिजिता सामाजिक तथा धार्मिक कार्य में भी सक्रिय भूमिका निभाती थीं। इंदौर शहर में जरूरतमंद लोगों को निःशुल्क न्याय दिलाने में हमेशा आगे रहती थीं। दिवाली के बाद अभिजीता को लंग्स इंफेक्शन हुआ, तो उसे जुपिटर अस्पताल में भर्ती कराया गया। वह स्वस्थ भी हुई और इन्फेक्शन खत्म हो गया। लेकिन, इसी दौरान उन्हें ब्रेन हेमरेज होने के बाद डॉक्टरों ने ब्रेन डेड घोषित कर दिया। हालांकि उनके शरीर के बाकी अंग स्वस्थ थे और काम कर रहे थे।

अस्पताल प्रबंधन ने अभिजीता के परिवार के सामने सारी स्थिति बताते हुए अंगदान का प्रस्ताव रखा। भाई और पिता के प्रेरित करने पर पति प्रवीण राठौर सहित बाकी परिजनों ने भी अंगदान के लिए स्वीकृति दी। इसके बाद उसके अंगदान किए गए। अभिजीता के परिवार के इस निर्णय से जहां उनके परिवार ने दुख की घड़ी में भी इंसानियत का संदेश दिया, वहीं उनके अंग कई मरीजों के लिए जीवन की नई उम्मीद बन गए। अभिजीता के अंगदान ने मानवता की अद्भुत मिसाल कायम की। यह अनुकरणीय पहल देश के आठ जरूरतमंद मरीजों के लिए जीवनदायिनी साबित हुई। दिल को सुकून है कि हमारी अभिजीता आठ लोगों ने जीवित है, पर फिर भी दिल नहीं मान रहा। उसकी बहुत याद आ रही है। तुम असमय जाकर भी हजारों के दिलों में जगह बना गई। यही कामना है कि तुम जहां भी रहो, वैसी ही रहना जैसी हमें छोड़कर गई हो! तुम्हें याद करते हुआ 'आनंद' फिल्म का वो डायलॉग बहुत याद आ रहा है 'बाबू मोशाय ... जिंदगी बड़ी होनी चाहिए लंबी नहीं।' सच में अभिजीता तुम अपनी छोटी सी जिंदगी में सबके दिलों में जगह बना गई!

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

नंदकिशोर बर्वे

लेखक व्यंग्यकार हैं।

मुखियागिरी की चुनौतियाँ और उनसे रूबरू मुखिया जी

मुखिया चाहे देश का हो, प्रदेश का या कि घर का , उसकी अपनी मजबूरियां और अपनी मजबूतियाँ होती हैं। विशेषाधिकार और विवशताएं भी। और चुनौतियां ? उनका तो कुछ पूछिये ही मत। सार्वजनिक मुखियाओं की गतिवधियां तो जग जाहिर होती रहती हैं, पर घर का मुखिया इस मामले में भी उपेक्षित ही रहता है। पर क्या कीजै मुखियागिरी कोई लिव इन का रिलेशन थोड़े ही है, कि ज़रा सी बात पर तू तेरे और मैं मेरे हो जाये! न तुझे कोई गिला न मुझे कोई शिकायत। बाकियों की बात करने के अवसर तो बहुतेरे हैं, कदाचित् घर के मुखिया इस मामले में पहली बार बात हो रही है। सो आज केवल उन्हीं की बात।

अब मुखिया जी हैं, तो आटे दाल के भाव तो मुंह ज़बानी याद रहते ही हैं। बल्कि इस युग में तो पित्जा बर्गर के भाव भी याद करवा दिए जाते हैं। नानी तो अक्सर याद आती ही रहती है, कभी कभी परनानी भी सपने में आ जाती है। नहाने और निचोड़ने के साधन तो हमेशा से ही सीमित रहते आये हैं। सो उसी में नहाना है, और उसी में निचोड़ना भी। ज्यादा नहा लिए तो निचोड़ने को पानी की कमी हो जाती है। और पर्याप्त निचोड़ने की कोशिश में नहाना अधूरा ही रहता है। बस समझो इस नहाने और निचोड़ने को साधने में ही पूरा जीवन खप जाता है। और आजकल जो ऑनलाइन ख़रीदी का चलन चल गया है, उसने तो कुढ़ने के नए और सुलभ साधन उपलब्ध करवा दिए हैं। अब कर लो दुनिया मुट्ठी में के कारण बाजार घर तक अनचाहे साँप की तरह घुस आया है, जिससे निपटने का कोई मंत्र मुखियाजी के पास नहीं है। सो सीमित साधनों के अधिकतम और अनुकूलतम प्रयोग के नये रास्ते खोजे जाते हैं। इसकी बानगियां देखिये-

टूथपेस्ट, शेविंग क्रीम, फेस वाश, और टोमेटो जेल जैसी ट्यूब में से सहजता से उत्पाद निकलने तक ही घर के बाकी सदस्य उसका उपयोग करते हैं। फिर छोड़ देते हैं। फिर दूसरा फ्लेवर पकड़ लेते हैं। पर मुखिया जी के पास यह विकल्प नहीं होता! वे उस ट्यूब को बेलन से दबाते दबाते तब तक उपयोग में लेते हैं, जब तक कि ट्यूब की जान न निकल जाये। और वो गिड़गिड़ाकर उस घर में दोबारा न आने का वादा करता है तब कहीं मुखिया उसको छोड़ते हैं। अंतिम बूंद तक उपयोग करने के प्रयासों पर अर्थशास्त्र का सीमांत उपयोगिता सिद्धांत इनको दंडवत करता है। इसी तरह घर में लाये गये नमकीन, बिस्किट (नहीं कुकीज़!) और अन्य खाद्य पदार्थों की थैलियों और पैकेट्स में अन्यों द्वारा छोड़े गये खाद्यान्न का उप संहार भी इन्हीं के कर कमलों से होता है। नहाने धोने के साबुन को भी ये उनकी अंतिम साँस तक इस्तेमाल करते हैं। वह साबुन का 'चिपटा' इनकी पैनी नज़रों से किसी भी तरह बच नहीं पाता। इनकी कोशिश रहती है, 'अधिकतम लोगों का अधिकतम सुख' जबकि बाकी सदस्यों का जीवन दर्शन कहता है कि 'हमारा अकेले का अधिकतम सुख।' और अब तो पैकेज वाले बच्चों के द्वारा रिटायर ब्रांडेड कपड़े और मोबाईलों के उपयोग की नई नई जिम्मेदारियाँ भी इन्हीं के कन्धों पर आन पड़ी है।

मुखिया जी घर में किसी अल्पमत वाली सरकार के मुखिया की तरह होते हैं। जिन्हें मुद्दों पर आधारित बाहरी समर्थन मिलता है। श्रीमती जी तो मान्यता प्राप्त विपक्षी दल की नेता ही होती हैं। जो किसी भी तरह से किसी भी बात पर संतुष्ट नहीं होतीं। बच्चे कभी वाम पंथी तो कभी दक्षिण पंथी के पेंडुलम पर आनंद लेते हैं। फिर भी उनकी माते उनका ज्यादा समर्थन पाती हैं। जैसे अल्पमत सरकार का मुखिया अपनी सोच से कोई निर्णय नहीं कर पाता, वैसे ही इन मुखिया जी की अपनी कोई राय या कि 'स्टैंड' नहीं होता। वे बिना स्टैंड की गाड़ी की तरह बेसहारा ही बने रहते हैं। मुखिया जी द्वारा अपनी इस दशा को उगलने की तो कोई सूरत ही नहीं होती। हाँ निगलने के लिए कड़वे घूटों की सप्लाय निर्बाध जारी रहती है।

कालिदास समारोह विशेष

डॉ.मुरलीधर चाँदनीवाला

कालिदास के रघुवंश को भी भुला दिया आयोजकों ने

कालिदास समारोह के सारस्वत मौसम में रघुवंश की चर्चा न हो, यह तो उचित नहीं जान पड़ता। पता नहीं, किन विद्वानों ने बैठ कर 67वें कालिदास समारोह की रूपरेखा बनाई। ज्यादा दूर नहीं जाते, तो उज्जैन के उन विद्वानों से सम्पर्क कर लेते, जो कालिदास समारोह की प्रकृति समझते हैं। सौभाग्यवश वे विद्वान् उज्जैन में सहज सुलभ हैं, लेकिन उन्हें दरकिनार कर दिया गया है।

रघुवंश महाकवि कालिदास का अप्रतिम महाकाव्य है। रघुवंश भारतीय साहित्य और संस्कृति का उच्चतम स्वर्ण कलश है। कालिदास ने यह महाकाव्य बहुत श्रद्धापूर्वक लिखा है। संस्कृत में वाल्मीकि रामायण के होते हुए भी कालिदास को रघुवंश लिखने की आवश्यकता क्यों पड़ी, इस बारे में वे शुरू में ही स्पष्ट कर देते हैं कि लोक में रघुवंश के प्रतापी राजाओं के गुणों की चर्चा इतनी व्यापक है, कि वे इस ओर सहज ही प्रवृत्त हो गये। कालिदास विनम्र कवि हैं, और वाल्मीकि के प्रति अत्यंत कृतज्ञ हैं। वे रघुवंश न लिखते, तो राम के पूर्वज राजा दिलीप, अज और रघु के गुणों के बारे में हमें पता ही नहीं चलता। राम के होते हुए भी वंश तो रघु के नाम से ही चला। रघु चक्रवर्ती सम्राट थे। रघुवंश से ही ज्ञात होता है कि रघु जैसा महान योद्धा और उदात्त राजा दूसरा नहीं हुआ। कालिदास समारोह के आयोजकों के सामने ऐसी क्या बाधा थी, कि वे सम्राट रघु पर केंद्रित एक भी मंचन नहीं करवा सके, एक भी व्याख्यान तक नहीं करवा सके।

रघुवंश में जो रामकथा आई है, वह वाल्मीकि का ठीक-ठीक अनुसरण करती है, इसलिये शुद्ध और प्रामाणिक है। कालिदास के हाथ वही रामायण लगी, जो उत्तरकालीन प्रक्षेपकों और विवादों से मुक्त थी। इसलिये बाद के कवि-मनीषियों ने रामकथा में प्रवेश के लिये कालिदास रचित रघुवंश की ही अनुशंसा की है। एक बार रघुवंश पढ़ लेने के बाद रघुकुल के गौरवशाली इतिहास की सम्पूर्ण जानकारी मिल जाती है। इक्ष्वाकुवंश के राजाओं ने आचरण की सभ्यता की जो नींव रखी, वह हमारी अपनी संस्कृति की पहचान है, और उससे लोगों को परिचित कराने का जिम्मा कालिदास समारोह का है।

रामकथा के कई रूप मिलते हैं। कुछ तो ऐसे हैं, जो आपस में टकराते रहते हैं। रामकथा को लेकर कवियों ने इतनी छूट ले ली है, कि अब मूल कथानक का पता ही नहीं चलता। संस्कृत साहित्य में भास और भवभूति ने इस क्षेत्र में सर्वाधिक प्रयोग किये। कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत के अकेले कवि हैं, जिन्होंने रघुवंश लिखा, लेकिन राम को लेकर वाल्मीकि का अनुशासन टूटने नहीं दिया। कालिदास परम्परा के पोषक हैं। वे यह जानते हैं कि राम के चरित्र में ऊँच-नीच हो ही नहीं सकती। 'रामायण' एक ऋषि का देखा हुआ सत्य है, उसमें घट-बढ़ करना पाप को निमंत्रित करना है।

कालिदास के राम धीर-वीर-गम्भीर हैं। वे अपने पिता और पितामह के पदचिह्नों पर चलते हैं। रघुकुल की नीतियाँ और कुलगुरु के परामर्श ही उनके लिये सर्वोपरि हैं। पिता की आज्ञा से बढ़कर उनके लिये कुछ है भी नहीं। विश्वामित्र के साथ चल देने में वे पल भर भी विचार नहीं करते। जीवन में पहली बार किसी पर शस्त्र उठाना पड़ा, तो वह एक स्त्री थी। गुरु का आदेश माना। ताड़का को मारते हुए कोई पश्चात्ताप नहीं, न कोई अहंकार। मिथिला में शिव का धनुष भंग करने के बाद भी राम ऐसे बने रहे, जैसे कुछ हुआ ही नहीं। क्रुद्ध परशुराम का मन जीत लेना केवल राम के बूते की बात थी। कालिदास राम की भंगिमाओं को बहुत कोमलता के साथ चित्रित करते हैं। रघुवंश को पढ़ते हुए ऐसा लगता है कि कालिदास किसी यज्ञ के अनुष्ठान में बैठे हैं। उनकी एक-एक आहुति ठीक अग्नि में ही पड़ रही है।

कालिदास कहते हैं कि रामकथा राम के दारुण दुःख से उपजी हुई है। ऐसा दुःख, जो राम बताते नहीं, चुपचाप सह जाते हैं। रघुवंश में राम मनुष्य हैं, हर पल मनुष्य ही बने रहना चाहते हैं। दुःख आते हैं, तो उठकर उनका स्वागत करते हैं। वे जितना जानते हैं, उससे अधिक यह जानना चाहते हैं कि आखिर मनुष्य के जीवन में दुःख की पराकाष्ठा क्या है? भोग की एक सीमा है, लेकिन दुःख ऐसा रोग है, जो असीम है। राम के राज्याभिषेक से ठीक पहले कैकेयी

ने दो वरदान ऐसे मांग लिये हैं, जैसे वर्षा से भींगी हुई पृथ्वी के छेदों में से दो साँप निकल पड़े हों। दशरथ लाचार हैं, और राम चौदह वर्ष के वनवास के लिये मानो तैयार ही खड़े हैं। राम की मुखमुद्रा के भाव जैसे राज्याभिषेक के रेशमी वस्त्र पहनते समय थे, ठीक वैसे ही वनगमन के लिये वृक्ष की छाल के वस्त्र पहनते समय भी थे। राम चले जा रहे हैं इस जंगल से उस जंगल। बहुत पीछे छूटती चली गई है अयोध्या। कोई नहीं जानता, कहाँ बसे हैं राम-जानकी और लक्ष्मण। बेचैन भरत की आँखें भरी हुई हैं। वे ढूँढ रहे हैं पग-पग अपने बड़े भाई को। चित्रकूट में भरत मिलाप तो होता है, लेकिन दशरथ की मृत्यु का समाचार पीछे लग जाता है।

राम ने चौदह वर्ष के वनवास का दुःख नहीं मनाया, अपितु जी भर कर उसका लाभ ही उठाया। राम के जीवन से ये चौदह वर्ष निकाल लिये जाएँ, तो बहुत कुछ बचता ही नहीं। कालिदास के राम कभी अत्रि ऋषि के आश्रम में मिलते हैं, कभी अगस्त्य ऋषि के आश्रम में। राम और लक्ष्मण कभी भी राजकुमार नहीं, ऋषिकुमार ही लगते हैं। वे जहाँ-जहाँ जाते हैं, शस्त्र और शास्त्र दोनों उनके साथ चलते हैं। वे तेजस्वी क्षत्रिय भी हैं, तपोनिष्ठ ब्राह्मण भी। जहाँ-जहाँ राम पहुँचते हैं, हव्यगंध से पर्यावरण सुगंधित हो उठता है।

जानकी का हरण और जटायु का मरण, ये दो ऐसी घटनाएँ हैं, जिन्होंने राम के वनवास को झकझोर दिया था। राम आँखों में आँसू लिये हुए जंगल-जंगल ढूँढते फिरे सीता को। जनकनंदिनी राक्षस कुल में रहने को विवश हुई। साथ ही साथ लिखा जाने लगा भीषण युद्ध का इतिहास। अपराजेय समर में अंततः मारा गया रावण। कालिदास कहीं एक बार भी विभीषण के चरित्र को लांछित नहीं होने देते, जैसा बाद के साहित्य में दिखाया गया। विभीषण राम का उत्कृष्ट चयन है, जैसे हनुमान हैं, सुग्रीव हैं। कालिदास के राम अपने पुरुषार्थ से रावण का वध करते हैं, न कि विभीषण के नाभि-संकेत पर।

चौदह वर्ष का वनवास पूरा होते ही राम अयोध्या लौट आते हैं। उनका राज्याभिषेक होता है। मंगलगीत गाये जाते हैं। सुग्रीव, हनुमान और विभीषण समेत लंकायुद्ध के सभी सहभागियों के सम्मान में ऐसा उत्सव अयोध्या ने पहले नहीं देखा था। लेकिन यह कैसा दुर्भाग्य? सीता के त्याग की यह कैसी विवशता? न राम ने दया देखी? न लक्ष्मण ने। लोकनिन्दा का यह कैसा भय? उधर वन में अकेली छोड़ दी गई सीता और इधर रोते-बिलखते राम। अपराधी कौन? राजा राम या राम की प्रजा? दुर्भाग्य! यह निर्णय कभी नहीं होगा।

बेटी दुःख में हो, तो क्या बीतती है पिता पर, यह कोई जनक से पूछे। कालिदास के राम अपनी मर्यादा नहीं तोड़ते, तो सीता कैसे? लक्ष्मण गर्भवती सीता को जंगल में अकेली छोड़कर आ रहे हैं, और सीता उन्हें आशीर्वाद दे रही है। पति के विरुद्ध एक शब्द तक नहीं। भारतीय नारी के आचरण की यह विशालता अन्यत्र कहाँ ?

कालिदास शृंगार के कवि हैं, लेकिन रामकथा कहते समय वे बहुत सावधान हैं। रावणवध के बाद एक बार भी उनकी यह गर्वोक्ति सुनाई नहीं देती कि वे अपनी सीता को जीत कर ले आये हैं। लम्बे वियोग के बाद राम और सीता का मिलन दिखाने में कालिदास राम की मर्यादा के साथ होते हैं। रामकथा आद्यन्त करुणा से भरी हुई है। कालिदास के पास आकर भी वह कथा अपना व्रत नहीं तोड़ सकी।

यह बहुत दुःख का विषय है कि आयोजकों ने कालिदास के रघुवंश को भी भुला दिया। अब यह अपेक्षा की जाती है कि समारोह के शेष दिन रघुवंश पर विचार-विमर्श के लिये सुरक्षित रखे जाएँ। कोई उच्च स्तरीय मंचन तो अब हो नहीं सकता, लेकिन रघुवंश के बिना समारोह को बीत जाने से तो कोई बचा ले।

सुविधाओं और फायदों के लिए हाथ-पैर न मारें

संजय तेलंग

(वरिष्ठ पत्रकार और समीक्षक)

जीवन में सुख-सुविधाएं और फायदों के लिए हमेशा कड़ी मेहनत और संघर्ष करने की जरूरत नहीं होती। बल्कि बुद्धिमानी, सही योजना और कुछ सरल उपायों से भी बेहतर परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। क्योंकि, लोगों का ऐसा भी मानना है कि कर्म और भाग्य एक-दूसरे से जुड़े हैं। कर्म ही भाग्य लिखते और बदलते हैं। कुछ लोग भाग्य को पूर्व निर्धारित मानते हैं, जो पिछले जन्मों के कर्मों पर आधारित होता है। इसका मतलब यह नहीं है कि कर्म करना छोड़ दें।

सुविधाओं और फायदों के लिए जिंदगी में ज्यादा हाथ-पैर मारने की जरूरत नहीं है। ऊपर वाला अपना काम पूरी निष्पक्षता के साथ करता है। यही नहीं, वह अपने फैसले भी उतनी ही क्रूरता से करता है। यह मानकर चलें कि यदि आप अपना सर्वश्रेष्ठ दे रहे हैं, तो देर-सबेर अच्छे परिणाम आपको मिलकर रहेंगे! और इसके विपरीत यदि चालाकी/होशियारी दिखाने की कोशिश की तो कुछ भी हाथ नहीं लगने वाला। इस बात को उदाहरण से समझने का प्रयास करते हैं।

एक बार एक सज्जन सहकर्मियों की बैठक में भाग लेने गए। वे बैठक में सबसे आगे की पंक्ति में बैठ गए, ताकि वरिष्ठों की नजर में आ सकें और चाय-नाश्ता भी सबसे पहले मिल जाए। कुछ देर बाद ही एक महिला ने अंतिम पंक्ति से नाश्ता सर्व करना शुरू किया। नाश्ता प्रथम पंक्ति तक पहुंचने से पूर्व समाप्त हो गया। थोड़ी ही देर में एक अन्य महिला ने अग्रिम पंक्ति से ड्रिंक्स वितरण शुरू किया। उक्त सज्जन का दुर्भाग्य फिर आड़े आ गया, क्योंकि वह तब तक पीछे की ओर जा कर बैठ गया था। उस तक पहुंचने से पहले ड्रिंक्स भी समाप्त हो गए। नाश्ता न मिलने से उसे कोफ़्त होने लगी थी, वह लौटने के इरादे से उठ खड़ा हुआ।

तभी उसने देखा तीन महिलाएं ट्रे में समोसे ला रही हैं। उसने सोचा अबकी बार तो उसे समोसा मिलकर रहेगा। इसलिए वह बीच में जाकर बैठ गया। अब उसका दुर्भाग्य देखिए-एक महिला ने आगे की तरफ से समोसे बांटना शुरू किया और दूसरी ने अंतिम पंक्ति से। दोनों जब तक उसके पास पहुंचीं, तब तक समोसे फिर समाप्त हो चुके थे। यह देख हताशा में सज्जन ने अपना चेहरा हथेलियों पर छिपा लिया। लेकिन, अभी परीक्षा समाप्त नहीं हुई थी। ट्रे लिए तीसरी महिला सज्जन के पास आई और उसका कंधा थपथपाते हुए ट्रे आगे बढ़ा दी। जानते हैं ट्रे में क्या था! ट्रे में बहुत सारी टूथपिक्स थीं। सार यह है कि यदि वह व्यक्ति अपने स्थान पर ही बैठा रहता तो देर से ही सही उसे नाश्ता जरूर मिल जाता। उसने होशियारी दिखाने की कोशिश की तो दो-दो बार जगह बदलने पर भी उसके हाथ कुछ नहीं लगा।

जीवन में सुख-सुविधाएं और फायदे पाने के लिए हमेशा कड़ी मेहनत और संघर्ष करने की जरूरत नहीं होती, बल्कि बुद्धिमानी, सही योजना और कुछ सरल उपायों से भी बेहतर परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं।

यदि वह व्यक्ति धैर्य के साथ अपनी जगह पर बैठा रहता तो उसे नाश्ता और ड्रिंक्स अवश्य मिल सकते थे, उसने चालाकी दिखाई तो दोनों से हाथ धो बैठा। इसे इस तरह भी समझ सकते हैं कि जो चीज आपकी किस्मत में लिखी है, वह आपको जरूर मिलेगी,और जो नहीं है, वह आपको किसी सूरत में नहीं मिलेगी। चाहे उसके लिए आप कितनी भी कोशिश क्यों न कर लें। हालांकि, लोगों का ऐसा भी मानना है कि कर्म और भाग्य एक-दूसरे से जुड़े हैं। कर्म ही भाग्य लिखते और बदलते हैं। कुछ लोग भाग्य को पूर्व निर्धारित मानते हैं, जो पिछले जन्मों के कर्मों पर आधारित होता है। इसका मतलब यह नहीं है कि कर्म करना छोड़ दें।

कड़ी मेहनत और सकारात्मक सोच से भविष्य बनाया जा सकता है। इसके लिए अपने विचारों पर ध्यान दें और नकारात्मकता को सकारात्मकता से बदलें, नियमित व्यायाम करें, स्वस्थ जीवनशैली अपनाएं और अपने आसपास के लोगों और वातावरण को सकारात्मक रखें। कृतज्ञता का अभ्यास कर, छोटी-छोटी उपलब्धियों का जश्न मनाकर और अपनी खूबियों पर ध्यान केंद्रित कर भी मानसिकता को बदलना संभव है। अपने विचारों के प्रति सचेत रहें और नकारात्मक विचारों को सकारात्मक विचारों से बदलने का प्रयास करें। अपने आप से उसी तरह बात करें जैसे आप किसी प्रिय मित्र से करते हैं, यानी पूरे उत्साह के साथ। उन चीजों के बारे में गंभीरता से सोचें जिनके लिए आप आभारी हैं। यह जानने के लिए नियमित रूप से समय निकालें कि आप कैसा महसूस कर रहे हैं और आपको क्या चाहिए। अपनी छोटी या बड़ी सफलताओं पर विचार करें। उनके लिए कोई आपको बधाई दे या न दे, खुद को बधाई देने में भी पीछे न रहें। विशेष रूप से भविष्य की चिंता करने या अतीत पर पछताने के बजाय, वर्तमान पर ध्यान केंद्रित करना ज्यादा सही होगा।

धैर्य का भी जीवन में जरूरी स्थान है। धैर्य के जरिए सकारात्मक परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। धैर्यवान व्यक्ति चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होते हैं, दीर्घकालिक लक्ष्य हासिल करते हैं और अधिक लचीले और अनुकूलनीय होते हैं। धैर्य रिश्तों में सुधार करता है, गलत निर्णय लेने से बचाता है, और व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में सफलता की संभावना बढ़ाता है। धैर्यवान होने से आप जल्दबाजी में गलत निर्णय लेने से बचते हैं और अधिक प्रभावी ढंग से सोच पाते हैं। यह आपको हतोत्साहित हुए बिना या हार माने बिना दीर्घकालिक लक्ष्यों के प्रति प्रतिबद्ध रहने में मददगार है। दरअसल, विषम परिस्थितियों में भी मन में चिंता, शोक या उदासी उत्पन्न न होने देने का गुण ही धैर्य है। धैर्य व्यक्तित्व को निखारने का उत्तम गुण है। धैर्यवान व्यक्ति विपत्तियों में भी अपना मानसिक संतुलन बनाए रखता है और शांतचित्त होकर इस पर नियंत्रण कर दुख से बचने का सरल मार्ग खोज लेता है।

समरसता और मानवता के संदेश वाहक गुरु नानक देव

गुरु नानक जयंती पर विशेष

शिवकुमार शर्मा

लेखक सेवानिवृत अधिकारी हैं।

गुरु नानक देव जी का जन्म दिवस 'गुरु नानक जयंती' या 'प्रकाश पर्व' के रूप में मनाया जाता है। यह सिख धर्म के सबसे प्रमुख और पवित्र पर्वों में से एक है। गुरु नानक देव जी सिख धर्म के संस्थापक, महान संत,समाज सुधारक, सामाजिक समरसता और मानवता के संदेश वाहक थे। उनका जन्म कार्तिक पूर्णिमा के दिन सन् 1469 में तलवंडी पंजाब,पाकिस्तान (जो आज ननकाना साहिब के नाम से प्रसिद्ध है) में हुआ था। गुरु नानक देव जी के पिता का नाम मेहता कालू और माता का नाम तृप्ता था। बचपन से ही वे अत्यंत ज्ञानी, शांत और दयालु स्वभाव के थे। सांसारिक वस्तुओं से उनका मन कम ही जुड़ा रहता था।वे ईश्वर-भक्ति, सत्य और समानता के सिद्धांतों पर जीवन व्यतीत करते थे। उनका विवाह सुलखनी देवी से हुआ और उन्हें दो पुत्र – श्रीचंद और लखमीदास हुए।

गुरु नानक देव जी ने सिखाया कि ईश्वर एक है, और वह हर जीव में विद्यमान है। उन्होंने कहा -'एक ओंकार सतनाम, करता पुरख, निर्भउ, निरवैर।' अर्थात् ईश्वर एक है, वह सच्चा है, सर्वशक्तिमान है, निर्भय है और सबका मित्र है।

उनका संदेश था कि जाति,धर्म,ऊँच-नीच या संप्रदाय के भेदभाव से ऊपर उठकर सभी मनुष्यों को समान समझना चाहिए। उन्होंने कर्म, सत्य, प्रेम और सेवा को जीवन का आधार बताया। 'न कोई हिन्दू,न मुसलमान – सब मानव एक समान।' यह वाक्य गुरु नानक देव जी के संदेश की आत्मा है, जो हमें सदा सत्य, प्रेम और भाईचारे के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। गुरु नानक देव जी ने उस समय के समाज में फैले अंधविश्वासों, पाखंड, ऊँच-नीच और धार्मिक भेदभाव का विरोध किया। उन्होंने 'नाम जपो, कीरत करो, वंड छको' इन तीन सिद्धांतों पर चलने का उपदेश दिया।

नाम जपो-ईश्वर का स्मरण करो। कीरत करो-ईमानदारी से कर्म करो। वंड छको -अपनी आय का कुछ भाग दूसरों के साथ बाँटो। उनकी शिक्षाओं में मानवता की भावना सर्वोपरि थी। उन्होंने हिंदू-मुस्लिम दोनों धर्मों के अनुयायियों को एकता,प्रेम और सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी।

उन्होंने लंगर (सामुदायिक रसोई),संगत/पंगत (समुदाय व साझा भोजन) जैसी परम्परायें शुरू कीं।गुरु नानक देव जी ने पूरे भारत के साथ-साथ तिब्बत, अफगानिस्तान,अरब, श्रीलंका आदि देशों की यात्राएँ कीं, जिन्हें 'उदासियाँ' कहा जाता है। इन यात्राओं के माध्यम से उन्होंने लोगों को सत्य, शांति और ईश्वर-भक्ति का संदेश दिया। उन्होंने जहां-जहां प्रवास किया,वहां के लोगों में धार्मिक जागृति और सामाजिक चेतना का संचार हुआ।

गुरु नानक जयंती को सिख समाज बड़े हर्ष और श्रद्धा से मनाता है। यह दिन केवल सिखों के लिए ही नहीं,बल्कि समस्त मानवता के लिए प्रेरणादायी होता है, क्योंकि गुरु नानक देव जी का संदेश सार्वभौमिक है। नानक सर्वेश्वरवादी थे।उन्होंने हिन्दू पन्थ के सुधार के लिए इन्होंने कार्य किये साथ ही तत्कालीन राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक स्थितियों पर भी दृष्टि डाली है। सन्त साहित्य में नानक उन सन्तों की श्रेणी में हैं जिन्होंने नारी को बड़प्पन दिया है। हिन्दी साहित्य में गुरुनानक भक्तिकाल के अंतर्गत आते हैं। वे भक्तिकाल में निर्गुण धारा की ज्ञानाश्रयी शाखा से सम्बन्ध रखते हैं। उनकी कृति के सम्बन्ध में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में लिखते हैं कि-'भक्तिभाव से पूर्ण होकर वे जो भजन गाया करते थे उनका संग्रह (संवत् 1661) ग्रन्थ साहब में किया गया है।नानक देव भेदाभेद वादी व अच्छे सूफी कवि भी थे। उनके भावुक और कोमल हृदय ने प्रकृति से एकात्म होकर जोअभिव्यक्ति की है,वह निराली है।उनकी भाषा सदानीरा नदी की भाँति प्रवाहमान थी जिसमें फारसी, मुल्तानी,पंजाबी,सिंधी,खड़ी बोली,अरबी के शब्द समाए थे। गुरु नानक देव जी का जीवन और उपदेश आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने पाँच सौ वर्ष पूर्व थे। उन्होंने मानवता, प्रेम,सेवा,समानता और सत्य के मार्ग पर चलने का संदेश दिया। उनके विचार आज के विभाजित समाज के लिए मार्गदर्शक हैं। गुरु नानक जयंती केवल एक धार्मिक पर्व नहीं,बल्कि मानवता, एकता और नैतिकता का उत्सव है।

गुरु नानक जयंती पर विशेष

योगेश कुमार गोयल

लेखक पत्रकार हैं।

गुरु नानक के उपदेशों की अनंत प्रासंगिकता

प्रतिवर्ष कार्तिक मास की पूर्णिमा को गुरु नानक जयंती पूरे श्रद्धा, आस्था और उल्लास के साथ मनाई जाती है। इस वर्ष 5 नवम्बर को यह पवित्र पर्व गुरु नानक देव जी की 556वीं जयंती के रूप में मनाया जा रहा है। यह दिन केवल सिख समुदाय का धार्मिक उत्सव नहीं बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए आत्मिक प्रेरणा का पर्व है। सिखों के प्रथम गुरु और सिख धर्म के प्रवर्तक गुरु नानक देव जी ने अपने जीवन, उपदेशों और कर्मों से समस्त मानव जाति को सत्य, समानता, सेवा और करुणा का मार्ग दिखाया। इसलिए उनकी जयंती 'प्रकाश पर्व' कहलाती है क्योंकि उनके विचारों ने मानवता के अंधकार में प्रकाश फैलाया। गुरु नानक देव का जन्म 1469 ई. में तलवंडी नामक स्थान (अब पाकिस्तान में ननकाना साहिब) पर हुआ था। उनके पिता कालूचंद खत्री एक कृषक थे और माता तृप्ता धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थी। बचपन से ही नानक असाधारण प्रतिभा और गहरी आध्यात्मिक जिज्ञासा के धनी थे। वे भक्ति, चिंतन और कीर्तन में गहरी रुचि रखते थे। नौ वर्ष की आयु में जब उनके पिता ने यज्ञोपवीत संस्कार करवाने के लिए पुरोहित को बुलाया, तब नानक ने अत्यंत सरल किंतु गंभीर प्रश्न किया, 'यह सूत का धागा आत्मा के साथ कैसे जाएगा, जब शरीर ही नश्वर है?' यह प्रश्न उनके जीवन की दिशा को स्पष्ट करता है, वे बाह्य आडम्बरों और पाखंडों के विरोधी तथा आत्मज्ञान के साधक थे। गुरु नानक का विवाह 19 वर्ष की आयु में गुरदासपुर के मूलचंद खत्री की पुत्री सुलखनी से हुआ। वे गृहस्थ जीवन जीते हुए भी सांसारिक मोह से मुक्त रहे। उनके पिता चाहते थे कि वे व्यापार करें परंतु नानक का मन सांसारिक कार्यों में नहीं लगा। जब उन्हें कुछ धन व्यवसाय के लिए दिया गया तो उन्होंने वह धन गरीबों और साधुओं में बांट दिया। उन्होंने कहा, 'यह सच्चा व्यापार है, जो आत्मा को लाभ देता है।' गुरु नानक देव की शिक्षाएं केवल धर्म तक सीमित नहीं थी, वे सामाजिक न्याय, मानवता और समानता के स्तंभों पर आधारित थी। उन्होंने कहा, 'ना कोई हिन्दू, ना मुसलमान' यानी सच्चा मनुष्य वही है, जो अपने भीतर ईश्वर का अंश पहचानता है। उनके अनुसार संसार का प्रत्येक जीव एक ही परमपिता की संतान है।

गुरु नानक ने धर्म को कर्म से जोड़ा। वे मानते थे कि ईश्वर की उपासना केवल मंदिरों या मस्जिदों में नहीं बल्कि दूसरों की सेवा में निहित है। उन्होंने कहा था, 'जिसने पराया दुख अपना समझा, वही सच्चा भक्त है।' यही कारण है कि वे सदैव समाज के अंतिम व्यक्ति के साथ खड़े रहे। उन्होंने अमीर-गरीब, ऊंच-नीच का भेद मिटाने का बीड़ा उठाया और समानता का ऐसा संदेश दिया, जो आज भी उतना ही प्रासंगिक है। उनका जीवन अनेक प्रेरक घटनाओं से भरा है। एक बार वे हरिद्वार पहुंचे तो देखा कि लोग गंगा स्नान के बाद अंजुली भर जल पूर्व दिशा की ओर अर्पित कर रहे हैं। उन्होंने विपरीत दिशा यानी पश्चिम की ओर जल फैंकना शुरू कर दिया। जब लोगों ने कारण पूछा तो नानक ने कहा कि वे अपने खेतों को पानी दे रहे हैं। भीड़ हंसने लगी, तब उन्होंने कहा, 'जब मेरा जल पास के खेतों तक नहीं जा सकता तो तुम्हारा जल इतनी दूर स्वर्ग में पूर्वजों तक कैसे पहुंचेगा?' यह प्रसंग अंधविश्वास पर प्रहार करते हुए विवेक और तर्क की ज्योति जलाता है।

एक और प्रसिद्ध प्रसंग अमीर भागो और मजदूर लालो से जुड़ा है। अमीर भागो ने उन्हें भोजन का निमंत्रण दिया पर गुरु नानक ने गरीब लालो के घर भोजन करना स्वीकार किया। जब भागो ने इस पर आपत्ति की, तब नानक ने एक हाथ में भागो के पकवान और दूसरे में लालो की रोटी लेकर उन्हें निचोड़ा। भागो के पकवानों से रक्त और लालो की रोटी से दूध टपका। उन्होंने कहा, 'यह भोजन ईमानदारी का फल है और वह शोषण का।' यह दृश्य करुणा, श्रम और सच्चाई की परम व्याख्या बन गया। गुरु नानक देव की करुणा और ईश्वरीय शक्ति का प्रमाण उत्तराखंड के चम्पावत जिले के 'रीठा साहिब' गुरुद्वारे की कथा है। कहा जाता है कि जब उनके शिष्य मरदाना को भूख लगी और वहां केवल कड़वे रीठे के फल मिले तो गुरु नानक ने उन्हें वे फल खाने को कहा। जैसे ही उन्होंने गुरु के हाथ से लिया फल खाया, उसका स्वाद मीठा हो गया। तब से उस स्थान के सभी रीठे मीठे हो गए और आज भी वहां श्रद्धालुओं को प्रसाद स्वरूप मीठे रीठे ही दिए जाते हैं। यह कथा प्रतीक है, सच्चे विश्वास और गुरु की कृपा से जीवन की कटुता भी मधुरता में बदल जाती है। आज जब संसार फिर से असहिष्णुता, स्वार्थ और भेदभाव की जकड़ में है, तब गुरु नानक देव की वाणी और भी उज्जवल प्रतीत होती है। उनका प्रकाश केवल धार्मिक ग्रंथों में नहीं बल्कि हर उस व्यक्ति के हृदय में विद्यमान है, जो सत्य, प्रेम और सेवा का मार्ग चुनता है। गुरु नानक जयंती का पर्व हमें यह स्मरण कराता है कि संसार में भक्ति का सर्वोच्च रूप वही है, जो मानवता के कल्याण से जुड़ा हो। उनके उपदेश युगों-युगों तक प्रासंगिक रहेंगे क्योंकि वे किसी एक धर्म या काल के नहीं बल्कि समस्त सृष्टि के लिए हैं। उन्होंने जीवन को कर्म, करुणा और समानता की त्रयी में परिभाषित किया। गुरु नानक का प्रकाश केवल इतिहास की गाथा नहीं बल्कि मानव चेतना का अमर दीप है, जो हर अंधकार में दिशा दिखाता है।

नदियों के महत्व को रेखांकित करता कार्तिक पूर्णिमा का पर्व

||कार्तिक पूर्णिमा पर विशेष ||

मोहन नागर
(लेखक मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष हैं)

वर्षाऋतु के बाद कार्तिक पूर्णिमा से नदियों में सामुहिक स्नान प्रारम्भ किया जाता है। वर्षा ऋतु के समय नदियाँ उग्र और ऊँची बहती है तथा जल अशान्त रहता है, उसमें अपशिष्ट पदार्थ भी बहते हैं, इसलिए स्नान के लिए असुरक्षित होता है।

कार्तिक मास में नदियाँ शान्त और जल स्वच्छ हो जाता है, इसलिए कार्तिक पूर्णिमा के पवित्र पर्व से नदियों में स्नान और दान-पुण्य प्रारम्भ हो जाता है। कार्तिक पूर्णिमा का स्नान सबसे महत्वपूर्ण विशेष पुण्यदायी माना जाता है, जिससे पापों से मुक्ति और मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस दिन गंगा, यमुना, नर्मदा और अन्य पवित्र नदियों में स्नान करने के लिए लाखों श्रद्धालु उमड़ते हैं और विभिन्न घाटों पर दीपदान भी करते हैं । इस स्नान को शास्त्रों के अनुसार 'सौ अश्वमेध यज्ञ' के बराबर फल देने वाला माना जाता है।

धार्मिक मान्यताओं में कार्तिक स्नान सभी प्रकार के पूर्व और वर्तमान जन्म के पाप नष्ट हो जाते हैं। जीवन में सुख, धन-धान्य की प्राप्ति होती है। हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार होता है और मन शान्त होता है ।आध्यात्मिक ऊर्जा और भगवान हरि विष्णु की विशेष कृपा प्राप्त होती है। कार्तिक स्नान को मोक्ष का मार्ग माना जाता है।

विचार करें जिन पवित्र नदियों में स्नान मात्र से हमें इतने फल प्राप्त होते हैं, उन नदियों के प्रति क्या हमारा भी कोई कर्तव्य है? वर्षाऋतु के बाद सभी नदियाँ पवित्र और निर्मल हो जाती है। सैंकड़ों किलोमीटर दूर पहाड़ों, जंगलों से बहकर आया पानी हमारे जीवन के लिए कितना महत्वपूर्ण है। उस जल में मल-मूत्र विसर्जित कर, स्नान के बाद अपने पुराने कपड़े, जूते, घर से लाई गई पूजा सामग्री को प्लास्टिक की थैलियों में भरकर डालकर हम कौन सा पूण्य कमा रहे हैं ?

प्लास्टिक के पात्रों में दीपदान कर हम पूण्य कमा रहें हैं या पाप के भागीदार बन रहे हैं।

नदियाँ धरती पर प्रकृति की सबसे अनमोल धरोहर है और वह एक जीवन्त शरीर है। धरती पर सभी प्रकार के जीवजन्तुओं का पालन करने के कारण उसे 'माँ' का स्वरूप माना गया है।

इसलिए नदियों में स्नान करने के पूर्व यह विचार करें कि मेरे व्यवहार से नदी की पवित्रता को किञ्चित भी आँच नहीं आना चाहिए। स्नान करने के पूर्व हो सके तो नदी में पड़ा अपशिष्ट पदार्थ निकालकर उचित स्थान पर डालें, फिर स्नान करें।

इसी जल में भगवान के मत्स्य और कूर्म अवतार हुए हैं। हम विचार करें, आज कितनी नदियों में मछलियाँ व कछुए बचें हैं ?

कार्तिक पूर्णिमा का इतिहास कई पौराणिक घटनाओं से जुड़ा है, भगवान शिव द्वारा त्रिपुरासुर का वध करने से इसे 'त्रिपुरारी पूर्णिमा' भी कहा जाता है । इस दिन को देवताओं के लिए दीपावली के रूप में भी मनाया जाता है। मान्यता है कि देवोत्थान एकादशी पर जागने के बाद देवता इस दिन काशी के घाट पर दीपावाली मनाते हैं।

इसलिए कार्तिक पूर्णिमा को 'देव दीपावली' के रूप में भी मनाया जाता है। आज सिक्ख धर्म के प्रवर्तक पूज्य गुरु नानकदेव की जयंती है, जो प्रकाशपर्व के रूप में हम मनाते हैं। गुरुनानक देव एक योगी, दार्शनिक, राष्ट्र धर्म और समाज जागरण के पुरोधा तथा एक श्रेष्ठ कवि के रूप में सुविख्यात हुए। क्रूर मुगल आक्रमणकारी बाबर के आक्रमण और उसके वीभत्स अत्याचारों को गुरुनानक जी ने अपनी आँखों से देखा था। उन्होंने इन आक्रमणों को पाप की बारात और बाबर को यमराज की संज्ञा दी थी। तो आइए! इस पवित्र कार्तिक पूर्णिमा पर हम अपने धर्म और सांस्कृतिक विरासत की रक्षा करते हुए प्रकृति की अनमोल धरोहर नदियों को सदानीरा बनाये रखते हुए उनकी पवित्रता का संकल्प लें।

चुनाव आयोग और भाजपा का षड्यंत्र एसआईआर के बहाने दलित, आदिवासी और अल्पसंख्यक वर्ग के मतदाताओं के नाम काटने की साजिश: सज्जन सिंह वर्मा

भोपाल। पूर्व मंत्री एवं वरिष्ठ कांग्रेस नेता श्री सज्जन सिंह वर्मा ने राज्य में संचालित एसआईआर प्रक्रिया पर गंभीर सवाल उठाते हुए कहा है कि यह पूरा कार्यक्रम चुनाव आयोग और भाजपा की मिलीभगत से रचा गया एक षड्यंत्र है। इसका उद्देश्य प्रदेश में दलित, आदिवासी, मजदूर और अल्पसंख्यक वर्ग के मतदाताओं के नाम मतदाता सूची से काटना है।श्री वर्मा ने कहा कि बिना किसी तैयारी और बिना आवश्यक फॉर्म उपलब्ध कराए बीएलओ अधिकारियों को दबाव में काम करने को कहा जा रहा है, जो चुनाव प्रक्रिया की निष्पक्षता पर प्रश्नचिन्ह है।उन्होंने कहा, हम इस पूरे मामले की निगरानी कर रहे हैं और मजबूती से खड़े हैं। कांग्रेस चुनाव आयोग को नोटिस देगी कि बिना पर्याप्त तैयारी के स्क्रूक प्रक्रिया क्यों शुरू की गई है। वरिष्ठ कांग्रेस नेता ने कहा कि यह कदम भाजपा और चुनाव आयोग का एक सुनियोजित प्रोपेगेंडा है। उन्होंने कहा कि अगर पिछले चुनावों की मतदाता सूची देखी जाए, तो साफ दिखेगा कि किस तरह सुनियोजित तरीके से गरीब, मजदूर और अल्पसंख्यक वर्ग के मतदाताओं के नाम हटाए गए थे।श्री वर्मा ने स्पष्ट कहा कि कांग्रेस इस षड्यंत्र को बेनकाब करेगी और जनता के अधिकारों की रक्षा के लिए हर स्तर पर संघर्ष करेगी।

प्रशिक्षण शिविर के तीसरे दिन जेंडर सेंसटाइजेशन विषय पर प्रेरणादायक सत्र

पचमढ़ी। पचमढ़ी में जारी मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी के जिला अध्यक्ष संगठन सृजन प्रशिक्षण शिविर के तीसरे दिन आज जेंडर सेंसटाइजेशन लैंगिक संवेदनशीलता, लैंगिक बोध और जेंडर जागरूकता विषय पर एक अत्यंत उपयोगी और प्रेरक सत्र आयोजित किया गया। इस सत्र का संचालन सोनल पटेल, पूर्व सचिव अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी एवं जिला अध्यक्ष, अहमदाबाद सिटी द्वारा किया गया। उन्होंने अपने विचारोत्तेजक संबोधन में समाज में महिलाओं की भूमिका, योगदान, पहचान और समकालीन चुनौतियों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की।सोनल पटेल ने कहा कि जेंडर समानता केवल नीति नहीं, बल्कि एक सोच और व्यवहार है, जिसे समाज के हर स्तर पर आत्मसात करना होगा। उन्होंने उपस्थित जिला अध्यक्षों एवं पदाधिकारियों के साथ खुला और सार्थक संवाद किया तथा संगठन में महिला भागीदारी को और सशक्त बनाने की दिशा में प्रेरित किया।प्रशिक्षण शिविर के प्रतिभागियों ने इस सत्र को अत्यंत उपयोगी, विचारोत्तेजक और जागरूकता बढ़ाने वाला बताया। पचमढ़ी में चल रहे इस शिविर के माध्यम से संगठनात्मक क्षमता निर्माण और सामाजिक संवेदनशीलता को नई दिशा मिल रही है।

म.प्र.पुलिस के दिवंगत कर्मचारी स्व. रूपचंद पाटिल की नॉमिनी सजन बाई को एसबीआई ने त्वरित आकस्मिक मृत्यु लाभ राशि रु. 1 करोड़ का भुगतान किया

धार। मंगलवार को एस.पी. मयंक अवस्थी द्वारा पुलिस विभाग के दिवंगत कर्मचारी स्व. रूपचंद पाटिल की पत्नी को 1 करोड़ रु का चेक प्रदान किया । एस.पी. अवस्थी ने एसबीआई को बीमा राशि भुगतान त्वरित कार्यवाही के लिए धन्यवाद दिया। भारतीय स्टेट बैंक के क्षेत्रीय प्रबंधक मनीष दास द्वारा बताया गया कि भारतीय स्टेट बैंक कलेक्ट्रेट शाखा के द्वारा मध्य प्रदेश पुलिस के दिवंगत कर्मचारी, स्व. रूपचंद पाटिल के आधिकारिक नॉमिनी सजन बाई को पूर्ण आकस्मिक मृत्यु बीमा लाभ 1 करोड़ रु. सफलतापूर्वक और शीघ्रता से वितरित

कर दिया गया । स्व. रूपचंद पाटिल की दुर्घटना होने से 20 मार्च 2025 को आकस्मिक मृत्यु हो गई थी । भारतीय स्टेट बैंक और मध्य प्रदेश पुलिस पी.एच.क्यू. भोपाल के बीच 24 दिसम्बर 2024 को हुए एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) के तहत, पुलिस वेतन पैकेज खाते द्वारा प्रदान किए गए व्यापक लाभों के माध्यम से, जिसमे दुर्घटना बीमा राशि रु. 1 करोड़ का लाभ नॉमिनी को प्रदान किया गया। यह पैकेज विशेष रूप से अप्रत्याशित त्रासदी के समय पुलिसकर्मियों के परिवारों को मजबूती प्रदान करता है

धार के कर्तव्य ठाकुर ने ताइक्वांडो में प्रदेश को दिलाया द्वितीय स्थान

धार। 69वी शालाएं राष्ट्रीय स्तरीय स्कूल गेम्स 2025- 26 ताइक्वांडो में अंडर 14 बालक वर्ग के मध्य कोहिमा नागालैंड संपन्न हुई । धार जिले से मध्य

प्रदेश टीम का प्रतिनिधित्व करने वाले कर्तव्य ठाकुर भगवान सिंह ठाकुर ने 21 कि. ग्रा वर्ग में पहला मुकाबला गुजरात से 10 - 2 , द्वितीय झारखंड से 15- 6 , क्वार्टर फाइनल फाइड नागालैंड से 11- 4 , सेमीफाइनल फाइट पंजाब से 18 - 14, और फाइनल फाइट महाराष्ट्र से 4- 6 के अंतर में खेलकर रजत पदक पर कब्जा जमाया । धार आने पर कर्तव्य ठाकुर को आईएएस नवकिरण कोर , धार पुलिस अधीक्षक मयंक अवस्थी ने सम्मानित किया एवं इसी तरह प्रदेश के लिए मेडल लाने के लिए प्रेरित कर मार्गदर्शन किया । कर्तव्य ठाकुर कोच गगन सिंह के मार्गदर्शन में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहा है । जिला ताइक्वांडो अध्यक्ष प्रवीण तोमर ने कर्तव्य ठाकुर का उत्साहवर्धन करते हुए उसे कड़ी मेहनत करने के लिए प्रेरित किया ताकि वह भविष्य में और अच्छा प्रदर्शन कर सके , बैडमिंटन कोच शमशेर यादव सर ने भी कर्तव्य का हौसला बढ़ाया। धार आने पर सभी पालकगण व साथियों ने भव्य स्वागत किया और बधाइयां दी ।

शहंशाहे मालवा हजरत मौलाना कमालुद्दीन चिश्ती रे.अ का सालाना उर्स 11 दिसंबर से 15 दिसंबर तक मनाया जाएगा

उर्स कमेटी की महत्वपूर्ण बैठक संपन्न...

धार। शहंशाहे मालवा हजरत मौलाना कमालुद्दीन चिश्ती रे.अ का सालाना उर्स इस वर्ष 11 दिसंबर से 15 दिसंबर तक मनाया जाएगा उर्स में व्यापारिक मेला 28 दिसंबर तक आयोजित किया जाएगा।उर्स में देश की कई मशहूर कव्वाल पार्टी बाबा की शान में अपने कलाम पेश करेंगी। उर्स की तैयारियों को लेकर कमेटी के सदर सुहेल निसार एडवोकेट की अध्यक्षता में वृहद बैठक का आयोजन कमालिया स्कूल धार में किया गया जिसमें कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए और उर्स की तैयारियां शुरू कर दी गई।

बैठक की शुरुआत कुरान पाक की तिलावत से की गई उसके बाद उर्स कमेटी के अध्यक्ष सुहेल निसार ने पिछले साल का लेखा जोखा ओर हिसाब पेश किया उर्स कमेटी के सदर सुहेल निसार व पदाधिकारियों और सदस्यों ने सबसे पहले उर्स का चंदा देकर तैयारियों व चंदे की शुरुआत की। इस वर्ष बाबा का सालाना उर्स 11 दिसंबर से 15 दिसंबर तक मनाया जाएगा वही व्यापारिक मेला 28 दिसंबर तक रहेगा।उर्स में देश की प्रसिद्ध कव्वाल पार्टी जिनमे

रईस अनीस साबरी दिल्ली , जुनैद सुल्तानी बदायूं, अतीक हुसैन बंदानवाजी हैदराबाद , जावेद हुसैन कव्वाल रामपुर , हैदर हसन नियाजी निजामी ब्रदर्स दिल्ली , हाजी मुकर्रम वारसी भोपाल , टिम्मू गुलफाम जयपुर, नदीम जाफर कव्वाल जयपुर सहित स्थानीय कव्वाल उर्स के दौरान अपने कलाम पेश करेंगे।।इस अवसर पर बड़ी संख्या में उर्स कमेटी के सभी पदाधिकारी ओर सहयोगी मौजूद रहे।

विजय भवन में एक शाम मुकेश के नाम का आयोजन

लोकतंत्र स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का किया सम्मान

बैतूल। गंज स्थित विजय भवन सभागृह में 2 नवंबर को देशभक्ति के भावों और स्वर्णिम सुरों से सजी विशेष संध्या एक शाम मुकेश के नाम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन रियाज ग्रुप बैतूल, मां शारदा सहायता समिति तथा गणेश रामायण मंडल वर्ग कॉलोनी के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केंद्रीय राज्य मंत्री दुर्गादास ऊइके, नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती पार्वती बाई बारस्कर, भाजपा जिला अध्यक्ष सुधाकर पवार सहित अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। सर्वप्रथम देश के वीर सैनिकों को समर्पित भारत माता की आरती के साथ प्रसिद्ध पार्श्वगायक मुकेश चन्द्र माथुर के अमर गीतों की प्रस्तुति दी गई। इस दौरान लोकतंत्र स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों, परिजनों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में चेतनानंद गुप्ता, राजकुमार गुप्ता, अशोक टेकराम, मुकेश झारे, सुरेश जैन, नित्यानंद विश्वास, अशोक झा, कृष्णा, सुनील सोनी, धीरज जोजे, संगीता राठौर, पूनम धोटे, वंदना झरबडे, सविता गुर्जरकर, दीपक मालवीय तथा दीपिका वर्मा ने मुकेश जी के गीतों की शानदार प्रस्तुति दी। इस अवसर पर नामदेव अतुलकर और अखिलेश अतुलकर ने की बोर्ड, संतोष करोल ने ड्रम, रितेश जैन ने तबला, रितेश यादव ने गिटार, अर्जुन धुर्वे ने ढोलक, शारदा पारधी ने बैंजो तथा शिवम धोटे ने ऑक्टोपैड के माध्यम से अपनी प्रस्तुति दी। इस अवसर पर बड़ी संख्या में नागरिक उपस्थित रहे।

मंडी में किसानों को 4501 रुपये तक मिल रहे सोयाबीन के दाम

भावांतर योजना में 11 दिन में 96 किसानों ने बेचा 2223 क्विंटल सोयाबीन

बैतूल। जिले में 24 अक्टूबर से भावांतर योजना में खरीदी शुरू हुई। इन 11 दिन यानी 3 नवंबर तक 96 किसानों ने मंडी में 2223 क्विंटल सोयाबीन बेचा। किसानों को 4501 रुपये क्विंटल तक दाम मिले, जो समर्थन मूल्य से करीब 800 से 1 हजार रुपये तक कम हैं। शासन द्वारा सोयाबीन का समर्थन मूल्य 5328 रुपये समर्थन मूल्य घोषित किया है। बारिश के कारण सोयाबीन में नमी होने से किसानों को दाम कम मिले। शासन द्वारा भावांतर के मॉडल रेट तय नहीं किए हैं। प्रथम 14 दिन के बाद एक बार मॉडल रेट तय किए जाएंगे। और उसके बाद प्रतिदिन मॉडल रेट पोर्टल पर उपलब्ध रहेगा। दरअसल किसानों को समर्थन मूल्य दिलाने के लिए शासन द्वारा भावांतर योजना शुरू की है। बडोरा मंडी में 96 किसानों ने 2223 क्विंटल सोयाबीन बेचा। भावांतर में जिले में 8237 किसानों ने पंजीयन करवाया है। ऐन फसल कटाई के समय हुई बारिश से किसानों की फसलें प्रभावित हुई है। इसके चलते सोयाबीन में नमी होने से भावांतर योजना में मंडी में सोयाबीन के दाम समर्थन मूल्य से कम चल रहे हैं। किसान मॉडल रेट तय होने का इंतजार कर रहे हैं।

जिले में 93,300 हेक्टेयर सोयाबीन का रकबा ..कृषि विभाग से मिली जानकारी के अनुसार जिले में 93,300 हेक्टेयर सोयाबीन का रकबा है, लेकिन केवल 19201 हेक्टेयर के 8237 किसानों ने ही पंजीयन करवाया है। इसमें से केवल 96 किसानों ने अब तक सोयाबीन बेचकर योजना का लाभ लिया है। इस बार जिले में सितंबर और अक्टूबर माह तक बारिश होने से सोयाबीन की फसल खराब हो गई। दीपावली के बाद हुई बारिश से शेष बची फसलों को भी नुकसान हुआ। सोयाबीन का दाना जहां बारिक रह गया, वहीं उत्पादन भी जमकर गिरा है। किसानों को एक हेक्टेयर में लगभग 3 से 8 क्विंटल तक ही सोयाबीन हो रही है, उसमें भी दाना बारीक होने की बात सामने आ रही है। सोयाबीन में नमी होने से भी दाम कम मिल रहे है।

7 नवंबर को हो सकती है मॉडल रेट की घोषणा ....कृषि उपज मंडी में भावांतर योजना के तहत किसानों से सोयाबीन की खरीदी प्रक्रिया चल रही है। भावांतर में अंतर की राशि की घोषणा 7 नवंबर को होगी। बताया गया कि प्रथम 14 दिन बाद मॉडल रेट तय किए जाएंगे और हर 15 दिन में अंतर राशि का भुगतान किसानों को होगा। इस साल अतिवृष्टि व बारिश की अनिश्चितता के चलते खरीफ फसलों में सोयाबीन को काफी नुकसान हुआ है। एक हेक्टेयर में कहीं 3 क्विंटल तो कहीं 8 क्विंटल ही सोयाबीन का उत्पादन हुआ है। बताया गया कि कई किसानों की इतना नुकसान हुआ है कि उनकी लागत भी नहीं निकल पाई। मंडी प्रबंधन ने किसानों से आग्रह किया है कि वे कृषि उपज का उचित मूल्य प्राप्त करने के लिये अपनी कृषि उपज को पूर्णतः साफ-सुथरा एवं सुखाकर लावे। कृषि उपज में डंठल, फलियाँ, मिट्टी, कचरा, टूटे हुए दाने और नमी अधिक होने पर उचित दाम नही मिल पाता है।

फसल नुकसानी की 24,600 शिकायतें प्राप्त, 14800 का हुआ सर्वे

इस बार जिले में लगातार बारिश से खरीफ सीजन की फसलों को काफी नुकसान पहुंचा है। फसलों के नुकसानी की काफी शिकायतें भी किसानों ने की है। कृषि विभाग से मिली जानकारी के अनुसार फसल बीमा के लिए अभी तक कुल 24,600 शिकायतें प्राप्त हुई है। जिसमें से विलंब से जानकारी देने के कारण 7 हजार कृषक अप्राप्त घोषित कर दिए गए एवं 14,800 शिकायतों का सर्वे कार्य पूर्ण हो चुका है, जबकि शेष शिकायते पेंडिंग है। बताया गया कि खराब हुई फसलों के कारण इस बार अधिकांश किसानों ने योजना का लाभ लेने के लिए पंजीयन नहीं करवाया है। बैसे बडोरा मंडी में सोयाबीन खरीदी की प्रशासन द्वारा पूरी व्यवस्था की गई है। शासन द्वारा तय किए गए मॉडल रेट और मंडी में किसानों की बेची गई उपज के दाम के बीच का अंतर शासन द्वारा किसानों के खाते में अंतरित किया जाएगा।

इनका कहना है -

मंडी में भावांतर योजना के तहत किसानों से सोयाबीन की खरीदी प्रक्रिया चल रही है। भावांतर में प्रथम 14 दिन के बाद मॉडल रेट तय किए जाएंगे। मॉडल रेट के अंतर की राशि की घोषणा 7 नवंबर को होगी।

डॉ. आनंद बडोनिया, उप संचालक, कृषि विभाग बैतूल

गुरु नानक देव जी का 556वां प्रकाशोत्सव आज

गुरुद्वारा गुरु सिंह सभा में होगा कीर्तन, गुरु के अटूट लंगर का होगा आयोजन

बैतूल। धर्म, मानवता और सत्य के प्रतीक जगत गुरु श्री गुरु नानक देव जी का 556वां प्रकाशोत्सव आज 5 नवंबर को गुरुद्वारा गुरु सिंह सभा बैतूल में आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम में गुरु घर के वजीर भाई अरविंदर सिंह जी और बटाला से विशेष रूप से पधार रहे प्रसिद्ध पंथ कीर्तनिये भाई हरप्रीत सिंह अपनी अमृतमयी वाणी से संगत को निहाल करेंगे।

सुबह 11 बजे से दोपहर 1:30 बजे तक कीर्तन दीवान का आयोजन होगा, जिसके उपरांत दोपहर 1 बजे से गुरु का अटूट लंगर बरताया जाएगा। शाम को भी 7 बजे से 9 बजे तक विशेष कीर्तन दीवान रखा गया है, जिसमें हरप्रीत सिंह अपनी बाणी से संगत को भावविभोर करेंगे, उपरांत रात्रि में भी लंगर का आयोजन रहेगा। इस भव्य आयोजन की सभी तैयारिया गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी बैतूल द्वारा की गई हैं। कमेटी के अध्यक्ष सरबजीत सिंह वालिया, सचिव मनप्रीत सिंह वालिया, कोषाध्यक्ष हरदीप सिंह बग्गा, उपाध्यक्ष जितेंद्र वालिया एवं संरक्षक सुरेंद्र पाल सिंह पोपली ने बताया कि आयोजन का उद्देश्य गुरु साहिब की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुचाना और संगत को एकता व भाईचारे के सूत्र में बांधना है। गुरु घर के सभी सेवादारों ने दिन-रात मेहनत कर कार्यक्रम की सफलता के लिए सेवा निभाई है। कमेटी ने सभी श्रद्धालुओं, शहरवासियों एवं संगत से निवेदन किया है कि परिवार सहित गुरुद्वारे में पहुंचकर गुरु नानक देव जी के प्रकाश दिवस पर हाजिरी लगवाएं और गुरु कृपा का आशीर्वाद प्राप्त करें। उल्लेखनीय है कि गुरु नानक देव जी का जन्म 1469 ईस्वी में तलवंडी (अब ननकाना साहिब, पाकिस्तान) में हुआ था। उन्होंने समाज में फैले भेदभाव, अंधविश्वास और रूढ़ियों के खिलाफ आवाज उठाई तथा प्रेम, समानता और सेवा का संदेश दिया। उनकी शिक्षाए नाम जपो, किरत करो और वंड छको आज भी मानवता को सच्चे मार्ग की ओर प्रेरित करती हैं।

गुरुनानक जयंती पर साहनी एंड संस के सामने होगी लंगर सेवा

बैतूल। श्री गुरुनानक देव जी के पावन प्रकाश पर्व के अवसर पर सेवा-भाव एवं मानवता के संदेश के साथ प्रतिवर्षानुसार शहर के कई स्थानों में गुरु-प्रेरित लंगर सेवा आयोजित होगी। इसी क्रम में आज बुधवार प्रात:-11 बजे से शाम तक फार्मा डिस्ट्रीब्यूटर सोबेग सिंह साहनी एंड संस के सामने भी लंगर सेवा का आयोजन होगा। समाजसेवी एवं दवा व्यवसायी मंजीत सिंह साहनी ने सभी संगत एवं धर्मप्रेमी श्रद्धालुओं से आग्रह किया है कि आयोजन में अपने परिवार, मित्रों तथा पड़ोसियों सहित बड़ी संख्या में शामिल होकर आध्यात्मिक आशीर्वाद प्राप्त करें और गुरु के लंगर-रूपी प्रसाद का आनंद लें।

बकाया बिजली बिलों के एकमुश्त भुगतान पर मिल रही भारी छूट

बैतूल। मध्यप्रदेश सरकार की समाधान योजना 2025-26 के अंतर्गत बकाया बिजली बिल के भुगतान पर भारी छूट दी जा रही है है। मध्य प्रदेश मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड बैतूल व्रत से प्राप्त जानकारी के अनुसार योजना के तहत प्रथम चरण 3 नवंबर से प्रारंभ है, जो आगामी 31 दिसंबर 2025 तक चलेगा। इस अवधि में बकाया बिजली बिलों के भुगतान पर 60 से 100 प्रतिशत सरचार्ज माफ किया जाएगा। इसके दूसरे चरण पर बकाया बिजली बिलों के भुगतान पर 50 से 90 प्रतिशत सरचार्ज माफ किया जाएगा। ऐसे सभी उपभोक्ताओं से अपील है कि वह इस योजना का अधिक से अधिक लाभ उठाने के लिए अपने नजदीकी वितरण केंद्र में अति शीघ्र जाकर संपर्क करें और अपना रजिस्ट्रेशन कराकर अपने लंबित बकाया विद्युत बिलों का भुगतान करें और कनेक्शन कटने इत्यादि और न्यायालयीन की समस्या से निजात पाए।

भगवान झूलेलाल जी पर आपत्तिजनक टिप्पणी से सिंधी समाज आक्रोशित

कलेक्टर को राज्यपाल के नाम ज्ञापन, आरोपी पर सख्त कार्रवाई की मांग

बैतूल। पूज्य सिंधी पंचायत बैतूल ने भगवान झूलेलाल जी के प्रति आपत्तिजनक टिप्पणी करने वाले

अमित बघेल के खिलाफ कठोर कार्रवाई की मांग को लेकर महामहिम राज्यपाल के नाम कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में बताया कि हाल ही में अमित बघेल नामक व्यक्ति द्वारा भगवान झूलेलाल जी के प्रति अत्यंत आपत्तिजनक, अपमानजनक एवं भड़काऊ शब्दों का प्रयोग किया गया है, जिससे पूरे सिंधी समाज की धार्मिक भावनाए आहत हुई हैं।सिंधी पंचायत ने प्रशासन से मांग की है कि अमित बघेल के विरुद्ध तत्काल एफआईआर दर्ज कर उसकी गिरफ्तारी की जाए तथा इस प्रकार की घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए धार्मिक भावनाओं का अपमान करने वालों पर सख्त एवं उदाहरणात्मक कार्रवाई की जाए। ज्ञापन में कहा गया कि सिंधी समाज भगवान झूलेलाल जी के उपदेशों के अनुसार शांति और एकता में विश्वास रखता है, परंतु जब आस्था पर प्रहार होता है, तो मौन रहना संभव नहीं।

निलय डागा की मां तापी चुनरी पदयात्रा आज

किसानों और सर्वहारा वर्ग की खुशहाली के संकल्प के साथ उठेगा हर कदम

विगत 8 वर्षों से यात्रा बनी जनभावना का पर्व

बैतूल। आस्था, समर्पण और सामाजिक एकजुटता का अद्भुत संगम आज बैतूल की धरती पर देखने को मिलेगा, जब पूर्व विधायक निलय विनोद डागा के नेतृत्व में हजारों श्रद्धालु मां तापी चुनरी पदयात्रा के पवित्र मार्ग पर कदम रखेंगे। किसानों और सर्वहारा वर्ग की खुशहाली के संकल्प के साथ यह यात्रा पूरे जिले की जनभावना का प्रतीक बन चुकी है। पूर्व विधायक निलय डागा के नेतृत्व में यह चुनरी पदयात्रा लगातार नौवें वर्ष आयोजित की जा रही है। नर्मदा परिक्रमा यात्रा से प्रेरित होकर शुरू हुई यह परंपरा आज जिले की धार्मिक चेतना और सामाजिक समरसता की पहचान बन गई है। डागा ने बताया कि मां तापी के चरणों में इस यात्रा का उद्देश्य जिले के किसानों और श्रमिक वर्ग की समृद्धि, कल्याण और शांति की कामना करना है। कार्तिक पूर्णिमा के पावन अवसर पर आज 5 नवंबर बुधवार को यह ऐतिहासिक पदयात्रा सुबह 7 बजे कोठी बाजार लक्ष्मी चौक स्थित प्राचीन शिव मंदिर से प्रारंभ

होगी। यात्रा मार्ग में श्रद्धालु थाना चौक, टिकारी अखाड़ा चौक, कारगिल चौक, सदर ग्राम दनोरा, भडूस, महदगांव, डहरगांव, खेड़ी सांवलीगढ़ से होते हुए दोपहर 2 बजे तापी घाट पहुंचेंगे। वहां सूर्य पुत्री जीवनदायिनी मां तापी को चुनरी अर्पित की जाएगी और जिले की समृद्धि, खुशहाली एवं सुख-शांति के लिए सामूहिक प्रार्थना की जाएगी। उन्होंने जिलेवासियों से अपील की है कि वे सपरिवार इस यात्रा में सम्मिलित होकर मां तापी के चरणों में नमन करें और उनके आशीर्वाद से अपने जीवन में सुख-समृद्धि प्राप्त करें।

निर्वाचन आयोग द्वारा जारी निर्देशों के अनुरुप क्रियान्वित

बीएलओ को एसआईआर से प्रशिक्षित किया जा रहा

विदिशा (निप्र)। मध्यप्रदेश में एसआईआर विशेष गहन पुनरीक्षण प्रक्रियाआपका वोट आपका अधिकार है। जागरूक मतदाता बनें व परिगणना फॉर्म भरकर अपने बीएनओ को जमा करवाएं। प्रारंभ हो रही है जिसमें सभी मतदाताओं को अपना परिगणना फॉर्म भरकर बीएलओ को जमा करवाना होगा। निर्वाचन आयोग द्वारा ततसंबंध में जारी निर्देशों के अनुपालन में संपादित कराने हेतु जिले की सभी बीएलओ को अनुविभाग स्तर पर प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन जारी है।

उद्देश्य

विशेष गहन पुनरीक्षण मतदाता सूची का मुख्य उद्देश्य है कि मृत व्यक्तियों के नाम हटाना। स्थायी रूप से निवास बदलने वालों का नाम हटाना।किसी मतदाता का दो स्थानों पर पंजीकरण हो उसे निरस्त करना।फर्जी मतदाताओं का नाम हटाना।शुद्ध, स्वच्छ व पारदर्शी मतदाता सूचियों का निर्माण करना।

पुनः पंजीकरण प्रक्रिया

अपना फॉर्म भरने से पूर्व आप अपने 2 नवीनतम रंगीन पासपोर्ट साइज फ़ोटो जरूर खिंचवा लें, जिसका बैकग्राउंड सफेद होना चाहिए।आप सभी को BLO द्वारा परिगणना फॉर्म उपलब्ध करवाया जाएगा, जिसे निश्चित समय में भरकर BLO को जमा करवाना होगा।

दस्तावेजों की सूची

फॉर्म के साथ आपको 11 दस्तावेजों की सूची में से कोई भी दस्तावेज अनिवार्य रूप से संलग्न करना होगा। उन में सम्मिलित दस्तावेजों की सूची के अनुसार केंद्र सरकार/ राज्य सरकार / पीएसयू के नियमित कर्मचारियों को जारी पहचान पत्र या पेंशन कार्ड,भारत में 01/07/1987 से पूर्व सरकार/बैंक/एलआईसी /डाकघर/पीएसयू या स्थानीय प्राधिकारी द्वारा जारी प्रमाण पत्र/ दस्तावेज/ पहचान पत्रजन्म प्रमाण पत्र,पासपोर्टमूल निवास प्रमाण पत्र,10 वीं बोर्ड की अंक तालिका मय प्रमाण पत्र,वन अधिकार प्रमाण पत्र इस के अलावा अन्य पिछड़ा वर्ग/ अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति या अन्य जाति प्रमाण पत्र,राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (जहां लागू हो)राज्य/ स्थानीय अधिकारियों द्वारा तैयार किया गया परिवार रजिस्टर और सरकार द्वारा जारी कोई भूमि/ गृह आवंटन प्रमाण पत्र शामिल हैं। आप यानी मतदाता इन 11 दस्तावेजों में से अपने कम से कम कोई भी 2 दस्तावेज तैयार रखें, ताकि परिगणना फॉर्म भरने में आपको कोई परेशानी नहीं हो।

पंजीकरण श्रेणियां

मतदाताओं के पंजीकरण की 3 श्रेणियां बनाई गई है, आप उनके अनुसार भी अपने दस्तावेज तैयार कर सकते हैं। पहली श्रेणी अंतर्गत यदि आपका जन्म 01/07/1987 से पूर्व हुआ है, तो आपको स्वयं का कोई भी एक दस्तावेज जमा करवाना होगा, साथ में कोई अतिरिक्त दस्तावेज है तो भी काम आएगा, लेकिन कोई एक दस्तावेज होना अनिवार्य है। द्वितीय श्रेणी में यदि आपका जन्म 01/07/1987 से 02/12/2004 के मध्य हुआ है तो आपको एक दस्तावेज स्वयं का तथा एक दस्तावेज माता-पिता का होना अनिवार्य है। यानी कम से कम 2 दस्तावेज होने चाहिए। जबकि तीसरी श्रेणीमें यदि आपका जन्म 02/12/2004 के बाद हुआ है तो आपके पास 3 दस्तावेज होने चाहिए। एक स्वयं का, एक माता का व एक पिता का। कम से कम तीन दस्तावेज।निर्वाचन आयोग ने सभी मतदाताओं से अपील की है कि एसआईआर प्रक्रिया शुरू होने वाली है, आप अपने परिवार व आसपास के लोगों तक इसकी सूचना पहुंचाएं। उन्हें भी दस्तावेज तैयार करने के लिए प्रेरित करें, जिससे पारदर्शी मतदाता सूचियों का निर्माण हो सके।

नायब तहसीलदार की तत्परता से सड़क दुर्घटना में घायल महिला को मिली त्वरित सहायता

नर्मदापुरम (निप्र)। रविवार को जनपद पंचायत सोहागपुर में मतदाता सूची के विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण प्रशिक्षण हेतु जा रही नायब तहसीलदार, शोभापुर तहसील सुहागपुर श्रीमती नीरू जैन द्वारा मार्ग में हुई एक सड़क दुर्घटना में घायल महिला को तत्काल सहायता प्रदान की गई। प्राप्त जानकारी के अनुसार, कविता पटेल, पति रामखिलावन पटेल, उम्र लगभग 30 वर्ष, निवासी बोर्ना गुजर सेमरी हरचंद, तहसील सोहागपुर, का अचानक सोहागपुर बस स्टैंड मुख्य बाजार स्थित पलक मती पुल के पास सड़क दुर्घटना हो गया। घटना के पश्चात वहां भारी भीड़ एकत्रित हो गई। घटना स्थल से गुजर रहीं नायब तहसीलदार ने स्थिति की गंभीरता को देखते हुए तत्काल अपने शासकीय वाहन से घायल महिला को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, सोहागपुर पहुँचाया, जहाँ प्राथमिक उपचार प्रदान किया गया। स्थानीय नागरिकों ने नायब तहसीलदार की तत्परता और संवेदनशीलता की सराहना की।

कलेक्टर के निर्देश पर जिले में शुरू हुआ दीवार लेखन अभियान

बैतूल (निप्र)। कलेक्टर श्री नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी के निर्देश पर जिले में नरवाई प्रबंधन को लेकर जागरूकता अभियान शुरू किया गया है। कृषि अभियांत्रिकी विभाग ने जिले के सभी विकासखण्डों में दीवार लेखन कार्यक्रम शुरू कर किसानों को नरवाई न जलाने और फसल अवशेष के सही उपयोग का संदेश देना शुरू किया है। सहायक कृषि यंत्री डॉ.प्रमोद मीणा ने बताया कि अभियान के तहत ग्राम पंचायत भवनों , कृषि केंद्रों और प्रमुख सार्वजनिक स्थलों पर दीवारों पर स्लोगन लिखे जा रहे हैं।

संक्षिप्त समाचार

मतदाता सूची जांच कार्य का अपर कलेक्टर ने किया औचक निरीक्षण

विदिशा (निप्र)। अपर कलेक्टर श्री अनिल कुमार डामोर ने आज विधानसभा क्षेत्र क्रमांक 144 विदिशा के विभिन्न मतदान केन्द्रों की मतदाता सूची की जांच कर रहे बीएलओ के कार्यों का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने ग्राम अटारी खेजड़ा एवं ग्यारसपुर में बीएलओ द्वारा किए जा रहे विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) संबंधी कार्य का अवलोकन किया तथा मतदाता सूची जांच कार्य को समय-सीमा में पूर्ण करने के निर्देश दिए। अपर कलेक्टर ने बीएलओ को मतदाता सूची के अद्यतन कार्य में पारदर्शिता एवं शुद्धता बनाए रखने के निर्देश भी दिए।

ग्राम निसोबर्री में पंचायत भवन निर्माण हेतु भूमि से अतिक्रमण हटाया गया

विदिशा(निप्र)। तहसील लटेरी के ग्राम निसोबर्री में पंचायत भवन निर्माण के लिए चयनित भूमि से आज राजस्व विभाग द्वारा अतिक्रमण हटाने की कार्यवाही की गई। संबंधित भूमि को अतिक्रमण मुक्त कराकर पंचायत की सुपुर्दगी में सौंप दिया गया है। इस कार्यवाही में राजस्व एवं पंचायत विभाग के अधिकारी उपस्थित रहे। अतिक्रमण हटाए जाने के बाद अब पंचायत भवन निर्माण कार्य शीघ्र प्रारंभ किया जाएगा। ग्रामीणों ने इस पहल का स्वागत किया है।

जनजातीय गौरव पखवाड़ा 1 से 15 नवम्बर तक आयोजित होगा

विदिशा (निप्र)। धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की जयंती (15 नवम्बर) के उपलक्ष्य में जनजातीय समाज के योगदान को सम्मान देने, स्वतंत्रता संग्राम एवं सांस्कृतिक विरासत में उनकी भूमिका को स्मरण करने तथा जनजातीय क्षेत्रों के सामाजिक-आर्थिक विकास को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से 1 नवम्बर से 15 नवम्बर 2025 तक 'जनजातीय गौरव पखवाड़ा' मनाया जा रहा है। वर्ष 2021 से भगवान बिरसा मुंडा की जयंती को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। इस वर्ष उनकी 150वीं जयंती के समापन अवसर (18 नवम्बर 2025) को विशेष रूप से भव्य आयोजन के साथ मनाया जाएगा। पखवाड़े के दौरान प्रतिदिन विभिन्न सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं जनजागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इन आयोजनों के सुझावात्मक विवरण हेतु तैयार कैलेंडर संबंधित कार्यालयों को प्रेषित किया गया है। सभी विभागों से अपेक्षा की गई है कि निर्धारित कार्यक्रमों का आयोजन कर उसका प्रतिवेदन 16 नवम्बर 2025 तक कार्यालय को भेजा जाए।

दिल्ली में अंतरराष्ट्रीय चावल सम्मेलन 2025 रायसेन के बासमती चावल ने बटोरी सराहना

रायसेन (निप्र)। नई दिल्ली में दिनांक 30 से 31 अक्टूबर 2025 तक इंटरनेशनल राइस एक्सपोर्टेशन फेडरेशन द्वारा भारत अंतरराष्ट्रीय चावल सम्मेलन 2025 का सफल आयोजन किया गया। IREF में 7,750 से अधिक सदस्य संगठन शामिल हैं, जिनमें निर्यातक, प्रोसेसर, लॉजिस्टिक्स फर्म्स एवं कृषक संगठन सम्मिलित हैं। इस सम्मेलन में भारत के सभी राज्यों के साथ-साथ कनाडा, थाईलैंड, दक्षिण अफ्रीका और संयुक्त अरब अमीरात जैसे देशों के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। मध्यप्रदेश से इस सम्मेलन में बालाघाट जिले का जीआई टैग प्राप्त चिन्नौर चावल तथा रायसेन जिले का बासमती चावल प्रदर्शित किया गया। रायसेन जिले से श्री राजेन्द्र रघुवंशी (कृषि विभाग) ने बासमती चावल का प्रतिनिधित्व किया। राज्य स्तर पर श्री सुनील कुमार सोने एवं श्री सैयद जुबेर अहमद (प्रमुख, निर्यात प्रकोष्ठ) उपस्थित रहे।

श्री महेंद्र वशिष्ठ के पक्के घर का सपना हुआ साकार

सीहोर (निप्र)। केंद्र एवं राज्य सरकार द्वारा गरीबों के लिए कल्याण के लिए अनेकों जनकल्याणकारी योजनाएं चलाई जा रही है। प्रधानमंत्री आवास योजना भी उन्हीं योजनाओं में से एक है। इस योजना के तहत आर्थिक रूप से कमजोर पात्र हितग्राहियों को मकान बनाने के लिए सरकार द्वारा सहायता राशि दी जाती है। अपने सिर पर एक पक्की छत होना हर व्यक्ति का सपना होता है। स्वयं का पक्का मकान, जहां वह अपने परिजनों के साथ एक खुशहाल जीवन व्यतीत कर सके। लेकिन आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्ति के लिए पूरी जिन्दगी भर की पूंजी लगाने पर भी पक्का मकान बनाना संभव नहीं हो पाता। प्रधानमंत्री आवास योजना ऐसे ही लोगों के अपने घर के सपने को साकार कर रही है। सीहोर के अन्नपूर्णा कॉलोनी निवासी श्री महेंद्र वशिष्ठ ने सपने में भी नहीं सोचा था कि उनका अपना पक्का मकान होगा। श्री महेंद्र वशिष्ठ कहते हैं कि प्रधानमंत्री आवास योजना ने उनके पक्के घर के सपने को साकार किया है। श्री महेंद्र वशिष्ठ ने बताया कि कच्चे घर में बारिश के मौसम में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। बारिश के दौरान कई रातें हमें जागकर बितानी पड़ती थी, कई बार जहरीले जीवों के घर में आने का डर बना रहता था। लेकिन प्रधानमंत्री आवास योजना ने हमें इन सब परेशानियों एवं चिंताओं से मुक्त कर दिया है। प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत आवास की स्वीकृति मिली और सरकार से मिली आर्थिक सहायता और अपनी थोड़ी बचत जोड़कर उन्होंने अपने सपनों का घर बनाना शुरू किया। कुछ महीनों बाद घर बनकर तैयार हो गया। आज उनका परिवार एक सुंदर, पक्के घर में रह रहा है और उनकी पत्नी और बच्चे अब सुरक्षित और आरामदायक माहौल में रह रहे हैं।

ग्राम पंचायत बैरागढ़ खुमान में सांसद खेल महोत्सव के तहत कार्यक्रम आयोजित

कलेक्टर के निर्देशानुसार जिले में निरंतर संचालित की जा रही हैं सांसद खेल

सीहोर (निप्र)। सीहोर जिले की ग्राम पंचायत बैरागढ़ खुमान में सांसद खेल महोत्सव के तहत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर भोपाल सांसद श्री आलोक शर्मा ने फोन पर बच्चों को संबोधित करते हुए खेलों के महत्व के बारे में बताया तथा सभी खिलाड़ियों के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने बच्चों को खेलों के प्रति प्रेरित करते हुए कहा कि खेल जीवन में अनुशासन, परिश्रम और टीम भावना का विकास करते हैं। इस अवसर पर खेल गतिविधियों के सभी विजेता खिलाड़ियों को सम्मानित एवं पुरस्कृत किया गया। उल्लेखनीय है कि कलेक्टर श्री बालागुरू के. के निर्देशानुसार जिले में सांसद खेल महोत्सव के तहत निर्धारित कैलेंडर अनुसार अनेक गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं। कार्यक्रम में श्री अजय सिंह ठाकुर, प्राचार्य श्री केके शर्मा, श्री राजकुमार मीणा सहित खिलाड़ी एवं ग्रामवासी उपस्थित थे।

एसडीएम श्री आकिप खान की अध्यक्षता में कस्टम हायरिंग केन्द्र संचालकों के साथ नरवाई प्रबंधन के संबंध में बैठक सम्पन्न

नर्मदापुरम (निप्र)। एसडीएम कार्यालय पिपरिया में कलेक्टर सुश्री सोनिया मीना के निर्देश अनुसार वि.ख. -पिपरिया एवम बनखेडी के कस्टम हायरिंग केन्द्र संचालकों के साथ नरवाई प्रबंधन के संबंध में एसडीएम श्री आकिप खान की अध्यक्षता में बैठक की गई। एसडीएम द्वारा कस्टम हायरिंग केन्द्र संचालकों को निर्देश दिये गये की अधिक से अधिक नरवाई प्रबंधन यंत्रों का उपयोग करें और स्वयं के ग्राम एवं आसपास के जरूरतमंद किसानों को भी यंत्र किराए से उपलब्ध कराये और नरवाई न जलाने के लिए भी प्रोत्साहित किया जावे। इस बैठक में वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी श्रीमती निराली आर्या एवम कृषि अभियांत्रिकी से सहायक कृषि यंत्री श्री सी0 एस0 बरकड़े की उपस्थिति भी रही। साथ ही एस. डी. एम. द्वारा कृषि अभियांत्रिकी विभाग को निर्देशित किया गया कि नरवाई प्रबंधन यंत्र जेसे सुपर सीडर, स्लेशर, मल्चर, स्वचालित रीपर, रीपर कम बाइंडर, हेरेक, बेलर आदि मशीनों के प्रदर्शन ज्यादा से ज्यादा पिपरिया एवम बनखेड़ी क्षेत्र में करवाया जाये।

पेंशन प्रकरणों के शीघ्र निराकरण के दिए निर्देश

विदिशा (निप्र)। जिला पेंशन अधिकारी श्री उपेन्द्र सिंह मरावी ने बताया कि जिले में लंबित पेंशन प्रकरणों की समीक्षा के दौरान यह पाया गया है कि विभिन्न विभागों से कुल 26 पेंशन प्रकरण अब तक प्राप्त नहीं हुए हैं। इनमें 02 न्यायालयीन, 07 विभागीय जांच, 01 वैध उत्तराधिकारी, तथा 16 सामान्य प्रकरण शामिल हैं। संबंधित विभागों के आहरण एवं संवितरण अधिकारियों को निर्देशित किया गया है कि न्यायालयीन, विभागीय जांच एवं वैध उत्तराधिकारी से संबंधित प्रकरणों की अद्यतन स्थिति शीघ्र उपलब्ध कराएं तथा शेष 16 प्रकरणों को प्राथमिकता के आधार पर जिला पेंशन कार्यालय, विदिशा में प्रस्तुत करें। जिला पेंशन अधिकारी श्री उपेन्द्र सिंह मरावी ने बताया कि सभी विभागों को पेंशन प्रकरणों के त्वरित एवं पारदर्शी निराकरण में पूर्ण सहयोग प्रदान किया जाएगा। अधिकारियों से अपेक्षा की गई है कि वे इस कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता से पूर्ण करें ताकि सेवानिवृत्त कर्मचारियों को समय पर पेंशन का लाभ मिल सके।

विदिशा जिले में उर्वरक विक्रय में अनियमितता पर कार्रवाई

विदिशा (निप्र)। खेती के लिए आवश्यक उर्वरक जैसे यूरिया, डी.ए.पी. आदि पर शासन द्वारा अनुदान प्रदान किया जाता है। ये उर्वरक आवश्यक वस्तु अधिनियम, 1955 के अंतर्गत आते हैं, अतः इनका वितरण कृषकों के धारित रकबे एवं फसल की वास्तविक मांग के अनुसार किया जाना आवश्यक है।

कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता द्वारा गठित जांच दल द्वारा की गई जांच में यह पाया गया कि सेवा सहकारी समिति राजपुरहिनोता , सेवा सहकारी समिति महोटी, तथा मेसर्स बांके बिहारी कृषि सेवा केंद्र लटेरी (विकासखंड लटेरी) द्वारा कृषकों को उनकी निर्धारित पात्रता से अधिक यूरिया विक्रय किया गया। संबंधित विक्रेताओं का यह कृत्य एफसीओ 1985 एवं आवश्यक वस्तु अधिनियम 1955 की धारा 03 का उल्लंघन पाया गया।

इस पर उप संचालक किसान कल्याण तथा कृषि विकास, जिला विदिशा के प्रतिवेदन के आधार पर कलेक्टर द्वारा संबंधित उर्वरक विक्रेताओं पर रुपये 5,000 (पाँच हजार) का अर्थदंड अधिरोपित किया गया है।

16 जिलों में बचे हुए किसानों का धान पंजीयन अब 6 नवंबर तक होगा

सीहोर (निप्र)। खरीफ विपणन वर्ष 2025-26 में समर्थन मूल्य पर धान उपार्जन के लिए बचे हुए किसानों का पंजीयन अब 6 नवंबर तक हो सकेगा। यह निर्णय खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री गोविंद सिंह राजपूत की विशेष पहल पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की किसान-हितैषी सोच का परिणाम है। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री राजपूत ने बताया कि इस संबंध में सभी संबंधित जिलों के कलेक्टरों को आदेश जारी किए गए हैं। आदेश के अनुसार डिण्डौरी, मण्डला, बालाघाट, सतना, छिंदवाड़ा, शहडोल, अनूपपुर, दमोह, सिवनी, मैहर, उमरिया, जबलपुर, सीधी, अलीराजपुर, बैतूल और पन्ना जिलों में अब शेष किसानों का पंजीयन निर्धारित नोडल अधिकारियों की उपस्थिति में किया जाएगा। प्रदेश के कई जिलों से यह सुझाव प्राप्त हुए थे कि तकनीकी कारणों, समयाभाव या मौसम की बाधाओं के चलते कुछ किसान समर्थन मूल्य पर धान बेचने के लिए पंजीयन नहीं करा पाए हैं। कलेक्टरों द्वारा भेजे गए इन प्रस्तावों पर गंभीरता से विचार करते हुए सरकार ने कृषक पंजीयन की अवधि में विस्तार का निर्णय लिया है ताकि कोई भी पात्र किसान सरकारी खरीदी से वंचित न रह जाए।

पंजीयन के लिए विस्तृत दिशा-निर्देश जारी

खाद्य संचालनालय द्वारा जारी आदेश में स्पष्ट किया गया है कि, प्रत्येक पंजीयन केन्द्र पर खाद्य, सहकारिता, राजस्व एवं कृषि विभाग के नोडल अधिकारी की उपस्थिति में ही बचे हुए किसानों का पंजीयन किया जाएगा। केन्द्रवार केवल उन शेष कृषकों का ही पंजीयन होगा, जिनके नाम जिला प्रस्ताव में उल्लेखित हैं। किसान पंजीयन हेतु आवश्यक दस्तावेजों का परीक्षण करने के बाद ही पंजीयन की प्रक्रिया पूर्ण की जाएगी। सभी जिलों को निर्देश दिए गए हैं कि 6 नवंबर तक शेष रहे किसानों का पंजीयन हर हाल में पूर्ण कर लिया जाए।

सरकार की मंशा, ÷हर किसान को मिले उसका हक: खाद्य मंत्री श्री राजपूत ने कहा कि, मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में हमारी सरकार किसानों के हर वर्ग तक योजनाओं का लाभ पहुंचाने के लिए प्रतिबद्ध है। कोई भी किसान समर्थन मूल्य पर अपनी उपज बेचने से वंचित न रह जाए, यह हमारा दायित्व है।

वन विभाग की कार्रवाई से 25 हेक्टेयर वन भूमि मुक्त

विदिशा (निप्र)। वनमंडलाधिकारी श्री हेमंत यादव के निर्देश पर भारतीय वन अधिनियम 1927 की धारा 80 (अ)(1) के अंतर्गत आज लटेरी वन परिक्षेत्र में अतिक्रमण बेदखली की कार्रवाई की गई है। वन परिक्षेत्र अधिकारी लटेरी दक्षिण श्री विवेक चौधरी के नेतृत्व में बीट मुंडेला, कक्ष क्रमांक पी-383 में दर्ज प्रकरणों से संबंधित 12 अतिक्रमणकारियों के विरुद्ध कार्रवाई करते हुए उनकी अवैध बोई गई फसलों को तीन जेसीबी मशीनों की सहायता से नष्ट किया गया। वन भूमि पर कंटूर बनाकर बबूल के बीज बोए गए तथा सीमा पर पशु अवरोधक खंती तैयार की गई। इस कार्रवाई से लगभग 20 से 25 हेक्टेयर क्षेत्र को अतिक्रमण से मुक्त कराया गया। गौरतलब है कि इन अतिक्रमणकारियों ने 18 मार्च 2024 को वन अमले के साथ विवाद किया था, जिसके संबंध में थाना लटेरी में एफआईआर दर्ज की गई थी। कार्यवाही में एसडीओ (वन) श्री हिमांशु त्यागी, एसडीओपी लटेरी, थाना प्रभारी लटेरी, तहसीलदार लटेरी, पुलिस बल एवं राजस्व स्टाफ उपस्थित रहे। वनमंडलाधिकारी श्री यादव ने कहा कि वन भूमि पर अवैध कब्जा या खेती बर्दाश्त नहीं की जाएगी। वन विभाग द्वारा ऐसे अतिक्रमणों के विरुद्ध लगातार अभियान जारी है ताकि वन क्षेत्र सुरक्षित और संरक्षित रह सके।

शिविर के माध्यम से पशुओं का उपचार

विदिशा (निप्र)। पशु चिकित्सा सेवाएं विभाग के उप संचालक डॉ एनके शुक्ला ने बताया कि जिले की सभी शासकीय गौशालाओं के पशुधन का समय-समय पर परीक्षण शिविर के माध्यम से किया जा रहा है। इस दौरान निजी पशुपालकों को भी सुविधाएं मुहैया कराई जा रही है।इसी कड़ी के तहत आज पठारी तहसील की ग्राम पंचायत बरखेड़ा की श्री कृष्ण गौशाला, ग्राम पंचायत बरखेड़ा (पठारी) में आज बांझपन निवारण, ए.आई. (कृत्रिम गर्भाधान) एवं टीकाकरण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में पशुपालकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा बड़ी संख्या में पशुओं का टीकाकरण एवं उपचार किया गया।

छायाकार कौशल ने इतिहास की अनमोल धरोहर सप्रे संग्रहालय को भेंट की

भोपाल। मध्यप्रदेश जनसंपर्क के अपर संचालक रहे सुप्रसिद्ध छायाकार श्री जगदीश कौशल ने अपनी संचित संदर्भ संपदा ज्ञानतीर्थ सप्रे संग्रहालय के लिए संस्थापक विजयदत्त श्रीधर को भेंट की है। इस सामग्री में इतिहास के दुर्लभ ग्रंथ हैं जो सवा सौ साल से अधिक पुराने प्रकाशन हैं। इन ग्रंथों के समावेश से सप्रे संग्रहालय का इतिहास प्रभाग और अधिक समृद्ध हुआ है।

श्री जगदीश कौशल द्वारा भेंट किए गए ग्रंथों में लखनऊ गजेटियर-1904, सागर गजेटियर- 1906, छतरपुर गजेटियर-1907, सेन्ट्रल प्राविन्सेज-1908, हमीरपुर गजेटियर-1909, बाँदा गजेटियर-1909, देहरादून गजेटियर-1911 शामिल हैं। ये सभी ग्रंथ अंग्रेजी भाषा में हैं और अंग्रेज विद्वानों द्वारा लिखे गए हैं। फ्यूडेटरी स्टेट्स ऑफ सेन्ट्रल एण्ड सदर्न इण्डिया-1898, ट्राइब्स एण्ड कॉस्ट सेन्ट्रल प्राविन्सेज ऑफ इण्डिया, ए गाइड टू सांची- जॉन मार्शल-1917, सांची एण्ड इट्स रिमेन्स- कनिंघम, बैगा-1939, इण्डियन स्कल्पचर-1908, इण्डियन आर्ट इन यूरोप, ए ग्रामर ऑफ द छत्तीसगढ़ी डायलेक्ट ऑफ हिन्दी-1931, रिलीजियस एण्ड सोशल रिफार्म- महादेव गोविंद रानडे, भिलसा टोप्स-कनिंघम, क्वाइन कलेक्टिंग इन नार्दन इण्डिया, आरकेलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, द क्वाइन्स ऑफ हैदरअली एण्ड टीपू सुल्तान-1921, हिस्टॉरिकल जाग्रफी ऑफ एनसीएण्ट इण्डिया, ऑरकेलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया : बुंदेलखण्ड, मालवा एण्ड सेन्ट्रल प्रॉविन्सेज, ऑरकेलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया-कनिंघम, द इण्डियन एंपायर, हिन्दू हॉलीडेज एण्ड सेरेमोनियल, रेम्बल्स एण्ड रिकलेक्शन्स ऑफ इण्डियन ऑफीशियल- मेजर जनरल स्लीमन आदि श्री जगदीश कौशल द्वारा भेंट किए गए संदर्भ ग्रंथों की महत्वपूर्ण उपलब्धि हैं।

प्रदेश में हर वोटर के वेरिफिकेशन के लिए डोर-टू-डोर सर्वे

भोपाल-इंदौर में कलेक्टर मतदाताओं के घर पहुंचे, उज्जैन में एसआईआर के फॉर्म नहीं छपे

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में मंगलवार से वोटर लिस्ट के गहन परीक्षण यानी स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन (एसआईआर) की शुरुआत हो गई है। पहले दिन कई जिलों में लापरवाही नजर आई। उज्जैन में फॉर्म ही नहीं छपे। इससे वोटर को फॉर्म नहीं मिल सके।

धार में निर्वाचन कार्य में बड़ी लापरवाही सामने आई। जो फॉर्म दिए जाने थे, उसका दूसरा पेज प्रिंट ही नहीं हुआ। दूसरी ओर, भोपाल और इंदौर में कलेक्टर खुद मतदाताओं के बीच पहुंचे।

एसआईआर को लेकर उज्जैन में भी मंगलवार से काम शुरू होना था, पर गणना पत्रक ही नहीं छपे। इस वजह से पहले दिन फॉर्म वोटर्स के पास नहीं पहुंचे। डोर-टू-डोर सर्वे की शुरुआत कब से होगी, यह भी तय नहीं है। ग्वालियर और जबलपुर में फार्म वितरण शुरू हो गया है।

भोपाल के कई मतदान केंद्रों पर पहुंचे कलेक्टर- भोपाल में कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह हुजूर विधानसभा के बूथ नंबर-33, 34, 35, 36, 37 और 38 में पहुंचे। यहां उन्होंने मतदाताओं से बात की। वहीं, बीएलओ के काम को भी देखा। कलेक्टर ने बताया, भोपाल में सभी 2029 बूथ लेवल ऑफिसर और 250 सुपरवाइजर काम में लगे हैं। सभी एसडीएम और तहसीलदार भी फील्ड में घूमकर काम पर नजर रखे हुए हैं।

प्रत्येक बीएलओ को 3 बार तक घर जाना होगा और मतदाता को 'गणना पत्रक' देना होगा, जो दो प्रति में होगा। एक मतदाता के पास रहेगी और दूसरी बीएलओ के पास। वर्तमान में भोपाल जिले में कुल 21 लाख वोटर्स हैं। पहले दिन कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह ने भी कई इलाकों में पहुंचकर फॉर्म वितरित किए। वहीं, सभी एसडीएम और तहसीलदार भी काम में जुटे रहे। उप जिला निर्वाचन अधिकारी भुवन गुप्ता ने बताया कि अगले चार से पांच दिन तक फॉर्म वितरण किया जाएगा। इसके बाद ये फॉर्म कलेक्ट किए जाएंगे। वहीं, आगामी प्रक्रिया होगी।

ग्वालियर में 20 प्रतिशत तक गणना पत्रक वितरित किए- ग्वालियर में पहले दिन मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण का कार्य शुरू हो चुका है। करीब ग्वालियर की 6 विधानसभा क्षेत्र में 20 परसेंट तक गणना पत्रों का वितरण किया गया है। यहां विधानसभा क्षेत्र 14, 15, 16, 17, 18 और 19 के वार्डों में फॉर्म वितरित किए गए हैं।

जबलपुर में फॉर्म बांटना शुरू- उप जिला निर्वाचन ज्योति परस्ते का कहना है कि जबलपुर जिले में एसआईआर के फॉर्म छप रहे हैं। बीएलओ से भरने का काम भी कर रहे हैं। हाल ही में इनकी ट्रेनिंग भी करवाई गई है। कैंट विधानसभा से बीएलओ फोटो के साथ फॉर्म भरने को लेकर जानकारी भी भेज रहे हैं।

2003 के बाद इस तरह से सर्वे- बता दें कि साल 2003 के बाद पहली बार वोटर लिस्ट का डोर-टू-डोर सर्वे किया जा रहा है। जिन लोगों के नाम 2003 की लिस्ट में नहीं हैं और वर्तमान लिस्ट में हैं, उन्हें बताना होगा कि परिवार में किसका नाम 2003 की लिस्ट में था। बीएलओ फॉर्म में दी गई जानकारी के आधार पर इसे वेरिफाई करेंगे। जानकारी सही होने पर ही नाम जुड़ेगा।

उज्जैन में आज से काम शुरू होने की उम्मीद

एसआईआर मंगलवार 4 नवंबर से शुरू होना था। लेकिन उज्जैन जिले में ये काम शुरू नहीं हो पाया है। इसके पीछे कारण पत्रक का उज्जैन तक नहीं पहुंच पाना बताया जा रहा है। वही कुछ अधिकारी कह रहे है कि एक दिन की ट्रेनिंग और बची है उसके बाद कल बुधवार से एसआईआर का काम शुरू होगा।

मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) का काम उज्जैन में पहले दिन शुरू ही नहीं हो पाया है। बीएलओ को मंगलवार से जो गणना पत्रक (इम्यूनरेशन फार्म) मतदाताओं के घर - घर जाकर बांटना थे वो सुबह तक भी छपकर नहीं पहुंच पाए हैं।

एसडीएम व तहसीलदार सुबह तक गणना पत्रक आने का इंतजार करते नजर आए। बड़नगर एसडीएम का दावा था की दोपहर तक पत्रक आ जायेंगे। जिसको बीएलओ तक जल्द ही पहुंचा देंगे। इधर उज्जैन शहर में भी पत्रक नहीं पहुंच पाने के वजह से कार्य शुरू ही नहीं पाया।

उज्जैन एसडीएम कृतिका भीमावद ने बताया कि दक्षिण की अभी ट्रेनिंग बची है। ट्रेनिंग पूरी होने के बाद ही बीएलओ फील्ड में जाकर काम शुरू कर पाएंगे। बड़नगर एसडीएम धीरेन्द्र पाराशर ने बताया कि गणना पत्रक आने वाले थे लेकिन लेट हो गए हैं। जल्द ही गणना पत्रक आ जाएंगे। उसके बाद बीएलओ तक पहुंचा देंगे। उप जिला निर्वाचन अधिकारी संदीप सिंह ने बताया कि पत्रक उज्जैन आ गए है काम कल से शुरू हो सकेगा।

इंदौर में कलेक्टर ने बुजुर्ग मतदाता से भरवाया फॉर्म

इंदौर जिले में मतदाता सूची पुनरीक्षण का काम शुरू हो चुका है। अभियान के तहत बीएलओ खुद मतदाताओं के घर पहुंचकर जांच कर रहे हैं। पहले दिन कलेक्टर शिवम वर्मा खुद मतदाता के घर पहुंचे। वे अपनी टीम के साथ इमली बाजार में रहने वाले 95 वर्षीय वासुदेव वर्मा के घर पहुंचे और उन्हें एसआईआर से जुड़ी जानकारी दी। उनका फॉर्म भी भरवाया। इस दौरान वासुदेव वर्मा ने कलेक्टर साथ अपना अनुभव भी सांझा किया। इस पर कलेक्टर ने खुशी जताई है। वासुदेव वर्मा ने उन्हें बताया, उन्होंने आज तक सभी चुनाव के दौरान अपने मत का प्रयोग किया है। वे एसआईआर को लेकर भी काफी उत्साहित थे। कलेक्टर भी वर्मा से मिलाकर बेहद खुश नजर आए। इंदौर में एक माह तक मतदाता सूची पुनरीक्षण का काम चलेगा। इस दौरान फर्जी, डुप्लीकेट और बाहरी लोगों का नाम मतदाता सूची से हटाया जाएगा। अभियान के तहत बीएलओ सभी मतदाताओं के घर-घर पहुंचकर वैरिफिकेशन करेंगे।

8-9 को पचमढ़ी में रहेंगे राहुल गांधी

दिल्ली कांग्रेस प्रभारी बोले- बीजेपी वाले फुटबॉल की पिच पर क्रिकेटर को बुलाकर खिलाते हैं और हराते हैं। हमें ऐसे किसी एजेंडे में नहीं उलझना चाहिए

भोपाल (नप्र)। पचमढ़ी के होटल हाईलैंड में 2 नवंबर से एमपी कांग्रेस के जिला अध्यक्षों की ट्रेनिंग चल रही है। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी इस ट्रेनिंग में शामिल होने 8 नवंबर को पचमढ़ी पहुंचेंगे। राहुल 8 और 9 नवंबर को पचमढ़ी के ट्रेनिंग कैंप में शामिल रहेंगे। पीसीसी चीफ जीतू पटवारी ने राहुल गांधी के संभावित दौरे की जानकारी मिलने की पुष्टि की है।

सचिन राव ने जिला अध्यक्षों को बताया कि आप पॉलिटिक्स में क्यों और कैसे आए क्या पाया खोया? खुद का आकलन कैसे कर पा रहे, जिस उद्देश्य से आए उसमें क्या अचीव किया, बाधाएं क्या हैं?

उत्तराखंड के विधायक बोले- बीजेपी की पिच पर न खेलें- ट्रेनिंग के दूसरे दिन दिल्ली कांग्रेस के प्रभारी और उत्तराखंड से विधायक काजी निजामुद्दीन ने कहा-हमें बीजेपी के ग्राउंड पर जाकर नहीं खेलना चाहिए। बीजेपी वाले फुटबॉल की पिच पर क्रिकेटर को बुलाकर खिलाते हैं और हराते हैं। हमें ऐसे किसी एजेंडे में नहीं उलझना चाहिए, जो बीजेपी क्रिएट करके हमें उलझाना चाहती है।

2 नवंबर को प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन कांग्रेस ट्रेनिंग डिपार्टमेंट के नेशनल इंचार्ज और सीडब्ल्यूसी मेंबर सचिन राव ने किया। इस दौरान पीसीसी चीफ जीतू पटवारी, नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार मुख्य रूप से मौजूद थे।

सचिन राव ने बताया ट्रेनिंग का महत्व- प्रशिक्षण के पहले दिन सचिन राव ने बताया कांग्रेस क्या है? कांग्रेस की विचारधारा, पार्टी और विचारधारा में क्या अंतर है? एक कार्यकर्ता होना, राजनीति क्या है, जनता क्या है? इन सारे विषयों पर जानकारी दी।सचिन राव ने कहा कांग्रेस की विचारधारा के बिना संविधान और देश नहीं चल सकता। आप सत्ता में बैठ सकते लेकिन, जनता की मूल भावना संविधान की मूल भावना का समावेश हो। विकास में अशांति, बंधुत्व भाईचारा न हो तो वह कैसा विकास ?

महात्मा गांधी के कपड़े दान करने वाली घटना सुनाई- सचिन राव ने महात्मा गांधी द्वारा अपने कपड़े छोड़ने वाली घटना सुनाई। उन्होंने बताया कि गांधी जी ने अपने कपड़े एक महिला को दिए थे उसके बाद उनकी क्या सोच थी? गांधी जी जब अफ्रीका से आए थे तो गोखले जी ने देश भ्रमण की बात की थी उस वक्त लंबी दूरी की ट्रेन नदी, तालाब पर रूकती थीं उस दौरान यात्री नहा, धो लेते थे। गांधी जी ने देखा एक महिला आधे कपड़ों में थी तो उन्होंने आधे कपड़े दे दिए थे। उसके बाद उन्होंने आधे वस्त्रों में ही पूरा जीवन गुजारा।

कीटनाशक से बनी गैस, पहले भाई, फिर बहन की मौत

ग्वालियर में माता-पिता की हालत गंभीर; गेहूं को घुन से बचाने छिड़की थी दवा

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर में कीटनाशक से निकली गैस से बीमार 13 साल की क्षमा शर्मा ने भी दम तोड़ दिया। मंगलवार सुबह ग्वालियर के रिम्स अस्पताल में उसने आखिरी सांस ली। इससे पहले सोमवार को क्षमा के छोटे भाई वैभव की मौत हो गई थी। माता-पिता की हालत भी नाजुक है। दोनों को रिम्स हॉस्पिटल से न्यू जेएएच हॉस्पिटल में शिफ्ट किया गया है।

घटना सोमवार को गोला का मंदिर इलाके में प्रीतम विहार कॉलोनी की है। यहां घर के पोर्च में रखे गेहूं को घुन से बचाने के लिए मकान मालिक ने सल्फास से बने कीटनाशक का छिड़काव किया था। फिर घर के सारे सदस्य दरवाजे बंद कर सोने चले गए थे।

पोर्च के सामने दो कमरों में किराए से रहने वाला सत्येंद्र शर्मा का परिवार इस कीटनाशक से बनी जहरीली गैस का शिकार हो गया। मकान मालिक श्रीकृष्ण यादव तीसरी मंजिल पर रहता था, जो घटना के बाद से फरार है।

बदबू आने पर देखा तो पूरा परिवार बेहोश पड़ा था- सोमवार दोपहर जब मकान मालिक श्रीकृष्ण नीचे आया तो बदबू फैली हुई थी। उसने देखा कि किरायेदार सत्येंद्र शर्मा (51), उनकी पत्नी रजनी, बेटी क्षमा (13) और बेटा वैभव उर्फ करुआ (4 साल) बेहोश थे। जिसके बाद उसने पड़ोसियों की मदद से सभी को हॉस्पिटल पहुंचाया।यहां वैभव को मृत घोषित कर दिया गया था।

सुप्रीम कोर्ट ने मांगा सरकारी वकीलों की नियुक्तियों का डाटा

महाधिवक्ता कार्यालय से लेकर एससी, हाईकोर्ट, जिला कोर्ट में एसटी-एससी-ओबीसी महिला वकीलों की डिटेल मांगी

भोपाल (नप्र)। सुप्रीम कोर्ट ने एमपी के महाधिवक्ता कार्यालयों से लेकर जिला स्तर पर नियुक्त होने वाले सरकारी वकीलों की जानकारी मांगी है। सुप्रीम कोर्ट में जस्टिस एम सुंदरेश और जस्टिस सतीश शर्मा की खंडपीठ ने सरकार से दो सप्ताह में जवाब मांगा है।

आरक्षित वर्गों और महिलाओं की भागीदारी नहीं- ओबीसी एडवोकेट्स वेलफेयर एसोसिएशन की याचिका पर सर्वोच्च न्यायालय याचिका कर्ता एसोसिएशन की ओर से सीनियर एडवोकेट रामेश्वर सिंह ठाकुर, वरुण ठाकुर और विनायक प्रसाद शाह ने पक्ष रखा। उन्होंने कोर्ट को बताया कि मध्य प्रदेश में ओबीसी, एससी, एसटी, की लगभग 88 प्रतिशत आबादी है और 49.8 प्रतिशत महिलाओं की आबादी है फिर भी महाधिवक्ता कार्यालय में इस वर्ग के अधिवक्ताओं को समुचित प्रतिनिधित्व नहीं दिया जा रहा है। आरक्षित वर्गों और महिलाओं की भागीदारी न होने के कारण हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में इन वर्गों के जजों का नाम मात्र का प्रतिनिधित्व है। याचिकाकर्ता ओबीसी एडवोकेट वेलफेयर एसोसिएशन के वकील रामेश्वर सिंह ठाकुर और वरुण ठाकुर ने सुप्रीम कोर्ट में पक्ष रखा।

सरकारी वकीलों की नियुक्तियों में आरक्षण का पालन नहीं हुआ- याचिकाकर्ताओं की ओर से कोर्ट को बताया कि मध्य प्रदेश आरक्षण अधिनियम 1994 की धारा 2(वी) एवं 2(वी) तथा धारा 3 एवं 4(2) मे स्पष्ट रूप से प्रावधान है कि महाधिवक्ता कार्यालय, जिला न्यायालयों, निगम, मंडल मे नियुक्त विधि अधिकारियों की नियुक्तियों मे आरक्षण लागू होगा। क्योंकि, सरकारी वकीलों को सरकार द्वारा राज्य की निधि (पब्लिक फण्ड) से निर्धारित सैलरी दी जाती है।

हाई कोर्ट से जिला कोर्ट और बैंकों तक में होती है सरकारी वकीलों की नियुक्ति

महाधिवक्ता कार्यालय जबलपुर, इंदौर एवं ग्वालियर और सुप्रीम कोर्ट मे एडिशनल एडवोकेट जनरल, डिप्टी एडवोकेट जनरल, गवर्नमेंट एडवोकेट, डिप्टी गवर्नरमेन्ट एडवोकेट के 150 से ज्यादा सरकारी वकीलों के स्वीकृत पद हैं। इसके साथ ही 500 से ज्यादा पेनल लॉयर के पद हैं।

दो हफ्ते बाद होगी सुनवाई

प्रदेश के जिला न्यायालयों मे एक हजार से ज्यादा पद हैं। निगम, मंडल और बैंकों को मिलाकर लगभग 1800 पद हैं। इन नियुक्तियों मे आरक्षित वर्ग और महिलाओं को प्रतिनिधित्व नहीं दिया जा रहा है। सुप्रीम कोर्ट ने इन तर्कों को गंभीरता से लेते हुए मध्य प्रदेश सरकार को निर्देशित किया कि अगली सुनवाई के पहले ओबीसी, एससी, एसटी और महिलाओं के प्रतिनिधित्व की जानकारी के साथ सर्वोच्च न्यायालय में पूरा डाटा पेश किया जाए।अगली सुनवाई दो सप्ताह बाद नियत की गई है।

आईआईटी खड़गपुर के रिसर्च में खुलासा

पेपर कप में चाय पीने से फैल रहा कैंसर, 15 मिनट में निकलते हैं 25 हजार माइक्रोप्लास्टिक कण

भोपाल (नप्र)। यदि आप रोजाना पेपर कप में चाय या कॉफी पीते हैं, तो यह आपको कैंसर का रोगी बना सकता है। इतना ही नहीं, इससे हार्मोन से जुड़ी समस्या होने का खतरा भी रहता है। आईआईटी खड़गपुर के शोधकर्ताओं ने खुलासा किया है कि डिस्पोजेबल पेपर कप में डाली गई गर्म चाय या कॉफी मात्र 15 मिनट में कप की अंदरूनी परत से 25,000 माइक्रो प्लास्टिक कण छोड़ देती है।

विशेषज्ञों के अनुसार, एक व्यक्ति जो दिन में तीन कप चाय पीता है, वह हर दिन लगभग 75,000 सूक्ष्म प्लास्टिक कण निगल रहा है। जो न केवल शरीर के लिए हानिकारक हैं, बल्कि कैंसर, हार्मोनल और नर्वस सिस्टम से जुड़ी गंभीर बीमारियों का कारण बन सकते हैं।

इस रिसर्च के सामने आने के बाद भोपाल के मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी ने भी नागरिकों से अपील की है कि वे मिट्टी (कुल्हड़), स्टील या कांच के कप का इस्तेमाल करें और अपनी सेहत को इन 'साइलेंट टॉक्सिन्स' से बचाएं।

शोध में क्या बताया गया

हाइड्रोफोबिक फिल्म है हानिकारक- आईआईटी खड़गपुर के सिविल इंजीनियरिंग विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. सुधा गोयल और उनके शोध सहयोगी वेद प्रकाश रंजन और अनुजा जोसेफ द्वारा किए गए इस अध्ययन में यह साबित किया गया कि पेपर कप की भीतरी परत में इस्तेमाल होने वाली पतली हाइड्रोफोबिक फिल्म, जो तरल को कप में रोकने के लिए लगाई जाती है। गर्म तरल के संपर्क में आते ही टूटने लगती है। यह फिल्म पॉलीइथिलीन या अन्य को-पॉलिमर से बनी होती है और जब इसमें गर्म पानी (85-90.ए.सी) डाला जाता है, तो 15 मिनट के भीतर यह सूक्ष्म कणों में बदलकर पेय पदार्थ में घुल जाती है। गंभीर बीमारी का बनते हैं कारण- रिसर्च के अनुसार, हर 100 मिलीलीटर गर्म तरल में लगभग 25,000 माइक्रो प्लास्टिक कण मिल जाते हैं। ये इतने छोटे होते हैं कि आंखों से दिखाई नहीं देते, लेकिन शरीर में जाकर कोशिकाओं को नुकसान पहुंचा सकते हैं।

प्रदेश में 6 नवंबर से रातें ठंडी... 2-3 डिग्री लुढ़केगा पारा

भोपाल-जबलपुर संभाग में 2 दिन तक बूंदाबांदी, दिन में 30 डिग्री पार तापमान

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में अगले 2 दिन तक बूंदाबांदी, आंधी, गरज-चमक की स्थिति रहेगी। फिर 6 नवंबर से मौसम साफ हो जाएगा। उत्तरी हवाएं आने से रात के तापमान में 2 से 3 डिग्री तक गिरावट रहेगी, लेकिन दिन में पारा 30 डिग्री के पार ही रहेगा।

सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन ने बताया, पश्चिमी हिस्से में एक साइक्लोनिक सर्कुलेशन एक्टिव है। इसका असर प्रदेश के कुछ जिलों में देखने को मिल सकता है।

इन जिलों में बूंदाबांदी के आसार- मौसम विभाग ने अगले 2 दिन के अंदर भोपाल, गुना, विदिशा, रायसेन, राजगढ़, सीहोर, शाजापुर, देवास, सागर, नरसिंहपुर, जबलपुर, मंडला, बालाघाट, सिवनी, छिंदवाड़ा, बैतूल और पांढुर्णा में कहीं-कहीं बूंदाबांदी होने का अनुमान जताया है। बाकी जिलों में तेज धूप खिली रहेगी।

दो दिन के बाद मौसम साफ हो जाएगा और दिन में तापमान 30-32 डिग्री के आसपास रहेगा, लेकिन उत्तर से हवा आने की वजह से पारे में 2 से 3 डिग्री की गिरावट होने लगेगी। यह दौर दूसरे सप्ताह तक चलेगा। इसके बाद दिन-रातें ठंडे होने लगेंगे। 15 नवंबर के बाद तेज ठंड का दौर शुरू हो जाएगा।

मौसम विभाग के अनुसार, सोमवार को भोपाल, दतिया, गुना, ग्वालियर, नर्मदापुरम, इंदौर, खंडवा, खरगोन, रतलाम, श्योपुर, शिवपुरी, उज्जैन, दमोह, जबलपुर, खजुराहो, नौगांव, रीवा, सागर, सतना, टीकमगढ़ में पारा 30 डिग्री या इससे अधिक दर्ज किया गया। इसी तरह रविवार-सोमवार की रात में शिवपुरी में 15 डिग्री, राजगढ़ में 15.4 डिग्री, गुना में 16.6 डिग्री, खरगोन में 16.8 डिग्री, खंडवा में 16 डिग्री, श्योपुर में 17.4 डिग्री, नौगांव में 17.5 डिग्री, रीवा में 17.2 डिग्री रहा।

पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री के साथ दिखेंगी जया किशोरी, दोनों की शादी को लेकर उड़ती रही हैं अफवाहें

छतरपुर (नप्र)। बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री और कथावाचिका जया किशोरी को लेकर कई तरह की चर्चाएं होती रही हैं। जया किशोरी सार्वजनिक रूप से पहली बार पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री का साथ देने वाली हैं। वह उनके साथ सनातन हिंदू एकता पदयात्रा में शामिल होंगी। इसे लेकर बागेश्वर धाम की तरफ जया किशोरी का वीडियो पोस्ट किया गया है, जिसमें वह शामिल होने की बात कह रही हैं।

सनातन हिंदू एकता पदयात्रा निकाल रहे धीरेंद्र शास्त्री

दरअसल, पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री इस बार सनातन हिंदू एकता पदयात्रा निकाल रहे हैं। इसकी शुरुआत दिल्ली से होगी और पदयात्रा वृंदावन तक जाएगी। सात नवंबर से पदयात्रा की शुरुआत होगी। साथ ही 16 नवंबर को इसका समापन होगा। धीरेंद्र शास्त्री के साथ देश के बड़े-बड़े साधु संत शामिल होंगे।

जया किशोरी भी होंगी शामिल- वहीं, कथावाचिका जया किशोरी ने कहा है कि मुझे बताते हुए खुशी हो रही है कि पंडित धीरेंद्र शास्त्री फिर से हिंदू जोड़ो यात्रा निकाल रहे हैं। मैं भी इस यात्रा में शामिल होऊंगी। आप सभी लोगों से निवेदन हैं कि आप इस यात्रा में शामिल हों। साथ ही पूरी दुनिया के सामने एकता का स्वरूप प्रदान करें।

शादी को लेकर उड़ती रही हैं अफवाहें

पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री और जया किशोरी देश के मशहूर कथावाचक हैं। करोड़ों लोग इन्हें फॉलो करते हैं। साथ ही दोनों चर्चा में भी रहते हैं। कुछ साल पहले सोशल मीडिया पर दोनों की शादी को लेकर चर्चा होने लगी थी। बाद में पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री ने सफाई दी थी कि वह हमारी बहन जैसी हैं। उनके प्रति सम्मान हैं।

गौरतलब है कि पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री दूसरी बार हिंदू जोड़ो पदयात्रा निकाल रहे हैं। इससे पहले उन्होंने मध्य प्रदेश में यह यात्रा निकाली थी। उस समय बागेश्वर धाम से ओरछा तक गए थे। इसमें लाखों की संख्या में लोग शामिल हुए थे। साथ ही कई नेताओं की भी मौजूदगी रही थी।